स्कूल ऑफ इवेन्जलिज़म

पाठ्यक्रम

पुराना नियम सर्वेक्षण

COPYWRITE 2017- EDUCATIONAL RESOURCES
PERMISSION TO FREELY COPY AND DISTRIBUTE,
BUT PLEASE CREDIT SOURCE

पुराना नियम सर्वेक्षण

बाइबल के दो मुख्य भाग हैं: पुराना नियम और नया नियम। पुराने नियम में 39 पुस्तके हैं जो पाँच समूहों में बांटी गई हैं। (1) पंचग्रंथ (पेन्टट्यूक - Pentateuch) - बाइबल की प्रथम पांच पुस्तके, (2) इतिहास की पुस्तकें, (3) काव्य की पुस्तकें, (4) बड़े भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें, और (5) छोटे भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें। इसवी सन नववी शताब्दी में पुराने नियम को पदों में विभाजित किया जा चुका था। 13वीं शताब्दी के मध्य में बाइबल की सारी पुस्तकों को अध्यायों में बांट दिया गया जो हम आज हमारी बाईबल में पाते हैं।

ईकाई	पाठ	अभ्यास-कार्य
1. अध्ययन की नियमावली	पुराने नियम का परिचय	
2. भाग 1 पंचग्रंथ (पेन्टट्यूक)	इस्राएल का नैतिक नियम	
3.		
4.		
5.		
6.		
7.		
8. भाग 2 इतिहास की पुस्तकें	इस्राएल राष्ट्र का इतिहास	
9.	यहोशू	
10.	न्यायियों	
11.	रूत	
12.	1 शमूएल	
13.	2 शमूएल	
14.	1 राजाओं	
15.	2 राजाओं	
16.	1 इतिहास	
17.	2 इतिहास	
18.	एज्रा	
19.	नहेम्याह	
20.	एस्तेर	
21. भाग 3 - काव्य की पुस्तकें	इस्राएल का आत्मिक जीवन	

22.	अय्यूब	
23	भजन संहिता	
24.	नीतिवचन	
25.	सभोपदेशक	
26.	श्रेष्ठगीत	
27. भाग 4 – बड़े भविष्यद्वक्ता	इस्राएल का भविष्य का जीवन	
28.	यशायाह	
29.	यिर्मयाह	
30.	विलापगीत	
31.	यहेजकेल	
32.	दानिय्येल	
33. भाग 5 – छोटे भविष्यद्वक्ता	इस्राएल का भविष्य का जीवन	
34.	होशे/योएल	
35.	आमोस/ओबद्याह	
36	योना/मीका	
37.	नहूम	
38.	हबक्कूक	
39.	सपन्याह/हाग्गै	
40.	जकर्याह/मलाकी	

भाग 1 - पंचग्रंथ (पेन्टट्यूक) - मूसा की प्रथम पांच पुस्तकें इस्राएल का नैतिक नियमसंग्रह

1. पेन्टेट्यूक का अर्थ है "पाँच पुस्तकें"

क. पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकें कभी-कभी पंचग्रंथ (पेन्टट्यूक) कहलाती है, जिसका अर्थ है "पाँच पुस्तकें"। यह व्यवस्था की पुस्तकें भी कहलाती हैं, क्योंकि इस्राएल के लोगों को इन पुस्तकों में लिखे गए परमेश्वर की व्यवस्था और निर्देश, मूसा के द्वारा दिए गए थे।

ख. पेन्टेट्यूक शब्द हमें बाइबल में लिखित रूप से नहीं मिलता, न ही यह जाना गया कि यह नाम कब रखा गया। हमें यह भी नहीं मालूम कि यह कब पाँच पुस्तकों में बांटा गया: उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण। संभवत: यह नाम और विभाजन उस समय कर दिए गए जब पुराना नियम का अनुवाद ग्रीक भाषा में किया गया।

ग. मूसा ने यह पाँच पुस्तकें लिखीं, मात्र व्यवस्थाविवरण के उस अंतिम भाग को छोड़कर जिसमें उसकी मृत्यु के विषय में लिखा हुआ है।

घ. ये पाँच पुस्तकें मसीह के आगमन की नींव डालती है जिसमें यह बताया गया है कि परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र को जन्म देने के लिए किस प्रकार से लोगों का चुनाव किया।

च. परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में इस्राएल पुराना नियम का संरक्षक बन गया, जिसे परमेश्वर की प्रतिज्ञा की वाचा मिली, प्रतिज्ञा की वाचा से पुरस्कृत हुआ, और मनुष्यों की वह पीढ़ी बना जिसे परमेश्वर ने मसीह के जन्म के लिए उपयोग में लाया। (रोमियों 3:2; 9:1:5)

2. व्यवस्था का उद्देश्य :

क. पेन्टट्यूक का महत्व बहुत ही अधिक है। परमेश्वर पवित्र है अत: उसकी इच्छा है कि उसके लोग भी पवित्र जीवन जिये। मसीह के जन्म के पहले पवित्र जीवन की परिभाषा इस प्रकार थी कि "पेन्टट्यूक में दिए गए नियमों का पालन करना है।"

ख. व्यवस्था का उद्देश्य, नियमों के एक निश्चित से सूची से बढ़कर, दो प्रकार से है:

1. पहला: धार्मिक अनुष्ठान वाचाएं, और धार्मिक रीति रिवाज इस कारण से महत्वपूर्ण थे कि उनमें यीशु के लहू के द्वारा मिलने वाले छुटकारे का प्रतिबिम्ब था।
2. दूसरा: व्यवस्था एक आईने की तरह है जब इस पर मनन किया जाए, तब मनुष्य के अपराधी होने का साफ प्रतिबिम्ब इसमें देखा जा सकता है, और हमें बचाने वाले की आवश्यकता भी देखी जा सकती है। (याकूब 1:23-25)

ग. परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए पेन्टट्यूक के द्वारा नैतिक नियम स्थापित किए थे। ऐसा करने पर

ये नैतिक नियम परमेश्वर के हाथ में एक दस्तावेज बन गए, जिनके द्वारा वह मनुष्यों को सिखा सकता था कि मनुष्य पापी है और उसे क्षमा की आवश्यकता है। (रोमियों 3:19-24)

3. लेखकत्व और एकता:

क. पेन्टट्यूक मूलत: वास्तव में एक ही हस्तलेख था। इसे "मूसा की व्यवस्था" या ''मूसा की व्यवस्था की पुस्तक'' या "मूसा की पुस्तक'' भी कहा जाता था या जैसे यहूदियों के द्वारा इसे "टोरा-Torah" या ''व्यवस्था'' की पदवी दी गई थी।

ख. यह धारणा कि यह पांच पुस्तकों का लेख एक अकेले लेखक द्वारा लिखा गया था यह इसके उद्देश्य और विषय की अखण्डता के द्वारा सिद्ध होता है। ये पाँच पुस्तकें यहोवा और उसके लोगों के बीच वाचा के स्वरूप को प्रदर्शित करती हैं और, इसमें सब मिलाकर, मूसा के समय के जीवन और परिस्थितियों को, परमेश्वर के प्रकाशन के साधन के रूप में उपयोग में लाया गया हैं।

ग. मूसा के जन्म के पहले का इतिहास जो इसमें लिखा गया है वह पाठकों को वाचा को समझने के लिए तैय्यार करता है और इसके बाद की शेष पुस्तक, वाचा के विषय में विस्तार से बताती है, और यह भी की वाचा किस तरह से कार्य करती है।

घ. यह एकता का सामंजस्य मानवीय लेखक के द्वारा बाद में सोचा गया विचार नहीं है परंतु इसके प्रथम अक्षर से अंतिम शब्द तक यह परमेश्वर की योजना और प्रकाशन में चलता है।

च. मूसा को पेन्टट्यूक का लेखक सिद्ध करने के लिए निर्णायक गवाहियाँ दी गई हैं:

1. ये पुस्तक स्पष्ट दावा करती हैं कि इन्हें परमेश्वर के नाम में मूसा के द्वारा लिखा गया है (निर्ग. 17:14; 24:3; 4,7; लैव्य. 26:46; 27:34, व्यवस्थाविवरण. 31:9, 24,25)
2. यहूदियों के हर समय के प्रत्येक समुदाय ने, हर एक देश में और लगातार समान रूप से, साक्ष्य दिए है कि मूसा ही इन पाँच पुस्तकों का लेखक है। (एज्रा 6:18; नहे 8:1 मला. 4:4; मत्ती 22:24; प्रेरि. 15:21)
3. हमारे प्रभु ने स्पष्ट रूप से सिखाया की मूसा ही इन पुस्तकों का लेखक था। (मरकुस 12:26; लूका 16:31 20:37; यूहन्ना 5:45-46)
4. यहोशू के समय से लेकर एज्रा के समय के बीच की ऐतिहासिक पुस्तकें पंचग्रंथ को लगातार "मूसा की व्यवस्था की पुस्तके" इस नाम से सम्बोधित करती हैं।

4. आधारभूत महत्व :

क. पेन्टट्यूक वह नींव है जिसके ऊपर पुराने नियम के इतिहास और साहित्य की अन्य पुस्तकों को रचा गया है।

ख. पुराने नियम की पुस्तकों को सही रूप से समझने और व्याख्या करने के लिए, पहले पेन्टट्यूक को पढ़कर और समझकर तैय्यार होना आवश्यक है।

उत्पत्ति - आरंभों की पुस्तक

लेखक: मूसा। यहूदी और मसीही दोनों ने मूसा को उत्पत्ति का लेखक माना हैं।

समय: 1450-1410 ईसा पूर्व

नाम: उत्पत्ति यह नाम, पुराना नियम के ग्रीक अनुवाद सेप्टुआजिन्ट (Septuagint - LXX) से लिया गया है। (इस ग्रीक अनुवाद को सेप्टुआजिन्ट कहते हैं क्योंकि इसे 70 विद्वानों ने मिलकर किया था।)

मुख्य विषय और उद्देश्य: साधारण रूप से भी उत्पत्ति की पुस्तक को पढ़ने पर आशीष और शाप इन मुख्य विषयों का महत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विश्वास और आज्ञाकारिता के लिए आशीषें सुनायी गई हैं, जैसा कि अदन की बाग में देखा गया है, परंतु अनाज्ञाकारिता के लिए शाप है। यह पूरी पुस्तक इन दोनों विषयों पर चलती है। तथापि संभवत: मुख्य विषय अब्राहम और अब्राहम से की गई वाचा के द्वारा एक राष्ट्र का चुनाव करना है। परमेश्वर ने अब्राहम के द्वारा सारे राष्ट्रों को आशीष देने की प्रतिज्ञा की (उत्त. 12:1-3, 15:1-21)। उत्पत्ति की पुस्तक हमें मानवजाति के पाप और मृत्यु में हुये दु:खदायक पतन के विषय में, और परमेश्वर की प्रकाशित होने वाली उद्धार की योजना को अब्राहम और उसके वंश के साथ बांधी गई वाचा के माध्यम से बताती है।

मुख्य शब्द और वाक्यांश: "वंशावली" या "वृत्तांत" या "... की वंशावली यह है" या "... का वृत्तांत यह है" इनका ग्यारह बार प्रयोग किया गया है जिससे पाठकों को पता चलता है कि अब वृत्तांत इसके आगे के भाग में परिवर्तन हो रहा है। आकाश और पृथ्वी की रचना से लेकर इस्राएल के सारे बापदादों से संबंधित प्रमुख घटनाओं और व्यक्तियों के बारे में बताते हुये, प्रत्येक भाग को विवरणात्मक ढंग से लिखा गया है।

मुख्य विचार - ***आरम्भ:*** "उत्पत्ति" शब्द का अर्थ उद्गम या जन्म है। उत्पत्ति "आरंभों" की पुस्तक है। जगत का आरंभ (1:1-25), मनुष्यजाति का आरंभ (1:26-27), जगत में पाप का आरंभ (3:1-7) उद्धार की प्रतिज्ञा का (3:8-24), परिवारिक जीवन का (4:1-15), मनुष्य द्वारा निर्मित सभ्यता का (4:16; 9:29), जगत के राष्ट्रों (जातियों) का (अध्याय 10-11) और इब्री जाति का आरंभ (अध्याय 12-50)।

उत्पत्ति की पुस्तक ऐतिहासिक संदर्भ का एक बिन्दु प्रदान करती है जहाँ से बाद में होने वाला संपूर्ण प्रकाशन आगे बढ़ता जाता है। उत्पत्ति की पुस्तक में बाइबल के सारे प्रमुख विषयों का उद्गम है। परंतु वह इन बातों के आरंभ की भी बुनियाद डालती है, जैसे कि, विवाह, परिवार, काम, पाप, हत्या, मृत्युदंड, बलीदान, जातियाँ, भाषाएं, सामाजिक विकास, सब्त और जातियों में एकता स्थापित करने का प्रथम प्रयास। बाइबल पूरी तरह से ऐतिहासिक प्रगटीकरण है। यह परमेश्वर के द्वारा इतिहास में किये जाने वाले क्रियाकलाप या सक्रियता का वृत्तांत है।

मुख्य अध्याय: उत्पत्ति का प्रमुख संदेश, अब्राहम को बुलाया जाना और सारी जातियों के लिये उसके वंश के द्वारा आशीष की प्रतिज्ञाएं है, अत: मुख्य अध्याय वे हैं जिनमें अब्राहम की वाचा और उसका बार-बार दोहराया जाना लिखा हुआ है (12:1-3; 15:1-21; 17:1-9)।

मुख्य पद: 3:14-19; 12:1-3

मुख्य लोग: उत्पत्ति की पुस्तक में बाइबल के कुछ स्मरणयोग्य चरित्र मिलते हैं, जैसे कि, आदम, हव्वा, नूह, अब्राहम, सारा, इसहाक; रिबका, एसाव, याकूब, राहेल और यूसुफ।

उत्पत्ति में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: मनुष्य के पतन के तुरंत बाद, स्त्री के वंश में उद्धार की प्रतिज्ञा दी गई (3:15)। उसके बाद, मसीह से संबंधित संकेत लगातार पूरे उत्पत्ति में चलते रहे हैं: जैसे कि: शेत का वंश (4:25); शेम की संतान (9:26); अब्राहम का परिवार (12:3), इसहाक का वंश (26:3); याकूब के पुत्र (46:3) और यहूदा का गोत्र (49:10)।

पुराना नियम के बहुत से व्यक्तियों के जीवन में मसीह के जीवन की समानताएं मिलती है। यह पद्धति परमेश्वर के द्वारा आयोजित की गई थी ताकि अपने लोगों को तैयार करे कि मसीह के आने पर वे उसे पहचान सकें। (धर्मविज्ञान की शब्दावली में इसे "चिन्ह" कहते हैं।) कभी-कभी निर्जीव वस्तुएं या घटनाएं, परमेश्वर के द्वारा उपयोग में लायी गई थीं कि मसीह के जीवन के कार्य, स्वभाव या चरित्र को उनमें दिखाये।

1. आदम को मसीह की तुलना में फर्क दिखाया गया है (रोमि. 5:14)। जैसे आदम पुरानी सृष्टि का प्रथम है उसी प्रकार मसीह नई आत्मिक सृष्टि का प्रथम है। मसीह नया आदम है।
2. हाबिल के द्वारा चढ़ाई गई लहू के बलिदान की भेंट मसीह की ओर संकेत करती है जो हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपना लहू बहाने वाला था। कैन के द्वारा हाबिल की हत्या भी मसीह के मारे जाने का चित्रण हो सकती है।
3. मलिकिसिदक भी मसीह का उदाहरण हैं (इब्रा. 7:3)।
4. यूसुफ का जीवन मसीह के जीवन से समानता रखता है: वह भी अपने पिता का अत्यंत प्रिय था, उसके भाइयों के द्वारा उसे धोखा दिया गया, और तौभी वह अपने भाइयों के छुटकारे का माध्यम बना।

रूपरेखा: उत्पत्ति के वृत्तांत का आरंभ "परमेश्वर" से होता है और अंत "शव ...संदूक" में होता है। यहां एक रूपरेखा दी गयी है जो उत्पत्ति की पुस्तक को दो बड़ी विचारधाराओं में बांटती है:

1. पृथ्वी पर पाप का प्रवेश (अध्याय 1-11)
    1. सृष्टि (अध्याय 1-2)
    2. मनुष्य का पतन (अध्याय 3-4)
    3. जलप्रलय (अध्याय 5-9)
    4. बाबेल का गुम्मट और भाषाओं में गड़बड़ी (अध्याय 10-11)
2. उद्धारकर्ता के आने के लिए की तैय्यारियाँ (अध्याय 12-50)
    1. अब्राहम, विश्वास का जन (अध्याय 12-23)
    2. इसहाक, प्रिय पुत्र (अध्याय 24-26)
    3. याकूब, परमेश्वर का प्रिय और परमेश्वर द्वारा अनुशासित किया गया। (अध्याय 27 - 36)
    4. यूसुफ, जिसने दु:ख उठाया और परमेश्वर के प्रति सच्चा बना रहा। (अध्याय 37 - 50)

निर्गमन - छुटकारे की पुस्तक

लेखक: मूसा **समय:** 1450 - 1410 ईसा पूर्व

नाम: "निर्गमन" अर्थात् अंग्रेजी में exodus यह एक लतिनी शब्द है जो ग्रीक शब्द *exodus* से लिया गया है। इसका अर्थ "चले जाना" या "बाहर जाना" होता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: निर्गमन में दो मुख्य विषय पाये जाते हैं:

1. पापों से छुटकारा जैसे "फसह का पर्व" में चित्रित किया गया है।

2. गुलामी से छुटकारा, जैसे मिस्त्रियों की गुलामी से छुटकारा देकर लाल सागर से पार निर्गमन करवाना।

निर्गमन में, परमेश्वर के चुने हुए लोगों, इस्त्राएल राष्ट्र का, आगे का इतिहास है, और मिस्र में चार सौ वर्षों तक गुलाम बने रहने के बाद उन्हें छुड़ाये जाने का वर्णन है। इस समय के दौरान वे एक राष्ट्र के रूप में विकसित हो गए, एक ऐसा राज्य जो ईश्वरतंत्र होगा अर्थात् परमेश्वर के द्वारा शासित राज्य होगा। निर्गमन में मूसा के जन्म, इतिहास और उसे परमेश्वर के द्वारा बुलाये जाने का वर्णन है ताकि वह इस्त्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाकर उन्हें परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञात देश, कनान देश, में पहुँचाने की अगुवाई करे। दस आश्चर्यजनक महामारियों (जिसमें मेम्ने का फसह का पर्व और इस्त्राएल के पहिलौठों को बचाये जाने का प्रतिक-प्रयोग सम्मिलित है) और लाल सागर से पार करवाने के द्वारा परमेश्वर ने अपने लोगों को दिखाया कि वह न मात्र किसी मिस्री फिरौन से अधिक शक्तिशाली है, वरन वह परमप्रधान प्रभु यहोवा है, वह पापों से छुटकारा देने वाला और स्वयं का प्रकाशन देने वाला परमेश्वर है।

मुख्य शब्द और वाक्यांश: "छुडाना" शब्द का प्रयोग नौ बार किया गया है। (6:6; 13:1-3; 15:13; 21:8; 34:20)

मुख्य विचार - ***निर्भरता:*** इस्राएलियों की परीक्षाएं और क्लेश मनुष्य की परिस्थिति को अच्छी तरह से दर्शाती है। वह राष्ट्र ईश्वरीय कार्य के बिना अपने आप को मिस्र की गुलामी से छुड़ा लेने में पूर्णत: अक्षम था। परमेश्वर का, विभिन्न चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा, आश्चर्यजनक सामर्थ्य के साथ हस्तक्षेप करने का उद्देश्य इस्राएलियों को, और हमें, दो पाठ सिखाना है:

1. परमेश्वर के हमारे प्रति महान प्रेम का अर्थ यह है कि वह कभी भी हमें पाप की गुलामी में छोड़ कर संतुष्ट नहीं होगा (गलातियों 5:1)।
2. उद्धार मात्र परमेश्वर के द्वारा ही मिलता है: उसी ने इसके प्रक्रिया की योजना बनायी, वही इसकी प्रक्रिया आरंभ करता है, और वही इसकी प्रक्रिया को पूरा करता है। मनुष्य अपने आप का उद्धार करने में अक्षम/असमर्थ है। हम सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर पर निर्भर हैं (इफि. 2:8-9)।

मुख्य अध्याय: अध्याय 12-14 में, परमेश्वर के द्वारा प्रतिज्ञा को पूरा करते हुये, इस्त्राएल को गुलामी से छुड़ाये जाने का वृत्तांत है। उस राष्ट्र को गुलामी में से लहू के द्वारा (फसह के मेम्ने के द्वारा) और सामर्थ्य के द्वारा (लाल सागर का दो भागों में विभाजित करने के द्वारा) छुड़ाया गया।

मुख्य पद: 6:6; 19:5-6

मुख्य लोग: मूसा, हारून, मरियम और फिरौन

निर्गमन में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: जबकि निर्गमन में मसीह के बारे में कोई भी प्रत्यक्ष भविष्यवाणी नहीं है, परंतु इसमें मसीह के चरित्र और स्वभाव की समानता दर्शाने वाले बहुत से उदाहरण हैं:

1. मूसा के जीवन और मसीह के जीवन में बहुतेरी बातों की समानताएं है। व्यवस्थाविवरण 18:15, मूसा को एक भविष्यद्वक्ता के रूप में मसीह की ओर इशारा करते हुये दिखाता है। दोनों को छुटकारा दिलाने वाले कुटुम्बी के रूप में दिखाया गया हैं, दोनों अपने बाल्यकाल में खतरे में आये, दोनों ने दूसरों की सेवा में अपने अधिकार का त्याग किया, और दोनों ने मध्यस्थ का, व्यवस्था देने वाले का और छुड़ाने वाले का कार्य किया।
2. फसह का मेम्ना बहुत-ही विशिष्ट चित्रण है कि मसीह परमेश्वर का निर्दोष मेम्ना है (यूहन्ना 1:29; 36; 1 कुरिंथि. 5:7)
3. सात पर्वे में से प्रत्येक उद्धारकर्ता के किसी न किसी पहलु को प्रदर्शित करता है।
4. निर्गमन, जिसे प्रेरित पौलुस ने बपतिस्मा से जोड़ा है, हमारे मसीह की मृत्यु में, गाड़े जाने में और पुनरुत्थान की समानता में जुट जाने का चित्रण करता है (1 कुरि. 10:1-2; रोमियों. 6:2-3)।
5. मन्ना और पानी दोनों को मसीह की प्रतिछाया के रूप में चित्रित किया गया है। (यूहन्ना 6:31-35, 48.63; 1 कुरिंथि. 10:3-4)।
6. मिलापवाला तम्बू अपनी विभिन्न वस्तुओं, रंग, सामान, उन्हें रखे जाने की क्रमबद्धता और वहां किये जाने वाले बलिदानों के द्वारा उद्धारकर्ता की सचित्र व्याख्या करता है (इब्रा. 9:1. 10:18)
7. महायाजक बहुत ही स्पष्टता से मसीह के व्यक्तित्व तथा सेवकाई को प्रतिबिम्बित करता हैं। (इब्रा. 4:14-16; 9:11.12, 24-28)

रूपरेखा :

1. परमेश्वर मूसा को एक छुड़ाने वाले रूप में तैय्यार करता है (अध्याय 1-11)
2. लहू और सामर्थ के द्वारा छुटकारा (अध्याय 12-14)
3. सिनाय पर्वत की ओर कूच करना, लोगों का आत्मिक प्रशिक्षण (अध्याय 15-18)
4. व्यवस्था का दिया जाना - हमारे अत्यंत पापी होने दिखाने के लिये परमेश्वर का दर्पण (अध्याय 19-24)
5. मिलापवाले तम्बू का नमूना और निर्माण, इस बात को प्रमाणित करने कि परमेश्वर अपने लोगों के मध्य रहता है। (अध्याय 25-40)

लैव्यव्यवस्था - पवित्रता की पुस्तक

लेखक: मूसा **समय:** 1450 - 1410 ईसा पूर्व

नाम: लैव्यव्यवस्था यह नाम सेप्टुआजिन्ट से लिया गया है और इसका अर्थ "लेवियों से सम्बन्धित" है। लेवी लोग याजक थे जो मनुष्य और परमेश्वर के बीच में मध्यस्थ होने के लिए परमेश्वर के द्वारा चुने गए थे। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में, उन्हें दिये गये वे बहुत से नियम हैं जो उन्हें उनका परमेश्वर की आराधना के लिये याजकों का काम करने हेतु परमेश्वर के द्वारा दिये गये थे।

मुख्य विषय और उद्देश्य: लैव्यव्यवस्था का उद्देश्य इस्त्राएलियों को यह दिखाना था कि वे परमेश्वर के सामने पवित्र लोगों की तरह कैसे चलें। लैव्यव्यवस्था की रचना इस्त्राएल की संतानों को आत्मिक प्रशिक्षण में सहायता करने हेतु की गई थी, मुख्य रीति से दो प्रकार से:

1. परमेश्वर के साथ कैसे चलें और उसकी आराधना कैसे करें; और
2. सम्पूर्ण राष्ट्र को "याजकों के राष्ट्र" के रूप में मिली बुलाहट को किस प्रकार से पूरा करना था।

लैव्यव्यवस्था का महान विषय पवित्रता है। पवित्र परमेश्वर तक मात्र याजक की मध्यस्थता के द्वारा किये गये बलिदान के आधार पर ही पहुंचा जा सकता है। कभी-कभी इसे "प्रायश्चित की पुस्तक" भी कहा जाता है। बलिदान कहते हैं "सही हो जाओ।" पाँच प्रकार के बलिदान हैं। होमबलि, अन्नबलि, मेलबलि, पापबलि, दोषबलि। पर्व कहते हैं "सही बने रहो।" आठ पर्व हैं: 1. सब्त 2. फसह का पर्व 3. पिन्तेकुस्त 4. तुरहियों का पर्व 5. प्रायश्चित का दिन 6. झोपड़ियों का पर्व 7. अखमीरी रोटियों का पर्व और 8. जुबली ।

बलिदान हमें उस लहू के विषय में कहते हैं जो हमें छुटकारा देता है। पर्व हमें उस भोजन के विषय में बताते हैं जो हमें जीवन देता है।

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक, परमेश्वर की चित्र-पुस्तिका है, प्रत्येक चित्र आगे मसीह के कार्यों को चित्रित करता था।

मुख्य शब्द: लैव्यव्यवस्था का मुख्य शब्द "पवित्रता" है जो इस पुस्तक में 87 बार प्रयोग में लाया है। लैव्यव्यवस्था 11:45 में लिखा है : "पवित्र बनो क्योंकि मैं पवित्र हूँ"।

मुख्य विचार - ***परिश्रम:*** नियम का पालन करने के लिए प्रतिदिन परिश्रम करने की आवश्यकता थी। लैव्यव्यवस्था के नियम, मनुष्य जीवन के प्रत्येक पहलु में प्रवाहित होते हैं, जैसे कि, भोजन तैयार करना; स्नान करना; और आपसी संबंध। यह प्रदर्शित करता है कि पवित्रता जीवन जीने का एक तरीका है, मात्र धार्मिक अनुष्ठानों में उपस्थित रहना नहीं है। जब वे लोग अपने प्रतिदिन के जीवन में यत्न के साथ लैव्यव्यवस्था के नियमों के अनुसार जीते रहे, इस्त्राएलियों को निरंतर उनके पापमय जीवन, अशुद्ध दशा और उसके द्वारा उनके और पवित्र परमेश्वर के मध्य उत्पन्न हुई दूरी के बारे स्मरण कराया जाता रहा। नया नियम भी इसी तरह निर्देश देता है, "इसीलिये तुम चाहे खाओ चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो" (1 कुरन्थियों 10:31), और "अत: हे प्रियो, जब कि ये प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं, तो आओ हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध

करें। (2 कुरन्थियों 7:1ख)।

मुख्य अध्याय: अध्याय 16 प्रायश्चित के दिन के विषय में बताता है, जो यहूदियों के कैलेण्डर में सब से प्रमुख दिन बन गया था क्योंकि यही मात्र एक दिन था जब महायाजक लोगों के पाप के प्रायश्चित के लिए पवित्रस्थान में प्रवेश कर सकता था। "…. क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिए तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित किया जाएगा, और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे" (16:30)।

मुख्य पद: 17:11; 19:2; 20:7-8

मुख्य लोग: मूसा और हारून

लैव्यव्यवस्था में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: निर्गमन के समान ही, लैव्यव्यवस्था में मसीह से संबंधित अनेक उदाहरण सुस्पष्ट होते हैं।

1. पाँच बलिदान, सारे के सारे उदाहरण स्वरूप मसीह के व्यक्तित्व तथा कार्य को, उसके निर्दोष जीवन तथा परमेश्वर के प्रति उसके समर्पण में दिखाते हैं।
2. महायाजक, जैसा कि पहले कहा गया है, लैव्यव्यवस्था में मसीह का सर्वोच्च रूपक है।
3. आठ पर्व, ये भी, जैसे कि पहले बताया गया है, उद्धारकर्ता के चित्र को रूप देते हैं।

रूपरेखा :

1. बलिदान (1:1-6:7)
2. बलिदान की व्यवस्था (6:8-7:38)
3. अभिषेक (8:1-9:24)
4. एक चेतावनी का उदाहरण (10:1-20)
5. पवित्र परमेश्वर के लिये शुध्द लोग होना आवश्यक है (अध्याय 11-15)
6. प्रायश्चित (अध्याय 16-17)
7. परमेश्वर के लोगों के सम्बन्ध (अध्याय 18-22)
8. यहोवा के पर्व (अध्याय 23)
9. निर्देश और चेतावनियाँ (अध्याय 24-27)

गिनती - जंगल में भ्रमण

लेखक: मूसा **समय:** 1450 - 1410 ईसा पूर्व

नाम: इस पुस्तक को "गिनती" यह नाम, अध्याय 1 और अध्याय 26 में इस्राएल के लोगों की गिनती किये जाने के कारण दिया गया, जो पहले सीनै पर्वत पर और दूसरी मोआब के अराबा में की गई। यह इस्राएल के उस समय की बातें बताती है जब वे सीनै पर्वत से आगे प्रतिज्ञात कनान देश की सीमा तक भ्रमण करते रहे थे। इसे "कुड़कुड़ाने की पुस्तक" भी कहा जा सकता है। ऐतिहासिक रूप से, जहाँ निर्गमन की पुस्तक समाप्त हुई है वहाँ से ही गिनती का वृत्तांत आरंभ होता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: "गिनती" प्राथमिक रूप से, इस्त्राएलियों के 40 वर्षों तक जंगल में भटकने से संबंधित है। वह यात्रा जो मात्र ग्यारह दिनों में समाप्त हो जानी थी, लोगों के अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के कारण, 38 वर्षों की कष्टप्रद दुर्गम पदयात्रा बन गई थी। अत: "गिनती" परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास न करने के दुष्परिणाम को दिखाती है (देखिए इब्रा. 3:16-4:2)। इसके साथ-साथ, गिनती हमें यह भी सिखाती है कि हमारे जीवन में जंगल में भटकने जैसे अनुभव आते तो हैं, परंतु परमेश्वर के लोगों को वहीं फंसे हुए रहना नहीं होता है।

मुख्य शब्द: भ्रमण

मुख्य विचार - ***अनुशासन:*** परमेश्वर के आज्ञाकारी होने का अर्थ है "परमेश्वर को प्रसन्न करने को प्रमुखता देना"। वह आज्ञाकारी को पुरस्कार देता है और अनाज्ञाकारी को दण्ड देता है। जब परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को वह देश ले लेने के लिए कहा तो उन लोगों ने कनानियों के डर के कारण इंकार कर दिया और कहा "हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे, और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे" (गिनती 13:33)। जंगल में भ्रमण कराने के द्वारा परमेश्वर ने इस्राएल को ऐसे शुद्ध किया कि उन में से उन लोगों को हटा दिया जिन्होंने संदेह किया था; मात्र यहोशू और कालेब ही जीवित रहे और प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश कर सके। परमेश्वर जिनसे प्रेम करता है उन्हें अनुशासित भी करता है (इब्रानियों 12:5-6), उनमें चरित्र निर्माण करने के लिए और उन्हें विश्वास में बढ़ाने के लिए, जिससे वे, चाहे कैसी भी परिस्थिति हो, उसके वचन की आज्ञानुसार कार्य कर सकें।

मुख्य अध्याय: अध्याय 13 और 14 मुख्य अध्याय माने गए हैं क्योंकि वे राष्ट्र के गम्भीर क्रांतिकारी परिवर्तन को दिखाते हैं। कादेशबर्ने में (गिनती 32:8) मूसा के द्वारा देश का भेद लेने के लिये भेजे गये बारह में से दस भेदियों ने (यहोशू और कालेब को छोड), लौटकर डरावने दानवों के विषय में बताया। वे दस और इस्राएल के लोग, परमेश्वर पर विश्वास करने में असफल हुये और, जबकि उस देश में दूध और मधु की नदियाँ थी, उन्होंने उस देश में प्रवेश करके उसे अपने अधिकार में कर लेने से इन्कार कर दिया।

मुख्य पद: 14:22-23; 20:12

मुख्य लोग: मूसा, हारून, मरियम यहोशू, कालेब, बालाक

गिनती में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: संभवत: पुराना नियम की किसी और पुस्तक में

मसीह के तथा उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने का इतना स्पष्ट चित्रण नहीं दिया गया है जितना कि एक खम्भे पर लटकाये गये सांप में मिलता है (गिनती 21:4-9 की तुलना यूहन्ना 3:14 से कीजिये)। गिनती की पुस्तक में मसीह के दूसरे और भी चित्रण हैं:-

1. वह चट्टान जिसने लोगों की प्यास बुझाई (1 कुरि. 10:4)
2. प्रतिदिन सुबह का मन्ना मसीह को उस रोटी के रूप में चित्रित करता है जो स्वर्ग से उतरती है। (यूहन्ना 6:31-33)
3. अग्नि और बादल का खम्भा मसीह की अगुवाई को प्रदर्शित करते हैं, और शरणनगर (29:9-15) निश्चित ही मसीह को हमारे लिये न्याय से बचने का शरणस्थान दर्शाते हैं।
4. अंत में, लाल बछिया भी मसीह का उदाहरण है (अध्याय 19)।

रूपरेखा :

1. ईश्वरीय विधी-व्यवस्था (अध्याय 1 से 10)
2. इस्राएल राष्ट्र के पतन का वृत्तांत (अध्याय 11 से 20)
3. इस्राएलियों के यहोवा की ओर लौट आने तथा जंगल में भी अन्तिम विजय प्राप्त करने का वर्णन (अध्याय 21 से 36)

व्यवस्थाविवरण - दोहराव और पुनरावलोकन

लेखक: मूसा **समय:** 1410 ईसा पूर्व

नाम: इसका नाम सेप्टुआजिंट से आया है जिसका अर्थ "दूसरी बार व्यवस्था दिया जाना" है। यह वचन 17:18 का त्रुटिपूर्ण अनुवाद है, जिसका वास्तविक अर्थ है "इसी व्यवस्था की एक पुस्तक ... उसकी नकल।" व्यवस्थाविवरण "दूसरी व्यवस्था" नहीं है परंतु यह "मूल व्यवस्था" जो सीनै पर्वत पर दी गई थी उसी का पुनरालोकन, विस्तार और दोहराव है।

मुख्य विषय एवं उद्देश्य: "स्वयं की चौकसी करो, अन्यथा भूल जाओगे" यह व्यवस्थाविवरण का मुख्य विषय है। यह मुख्यत:, इसके पहले की तीन पुस्तकों में पाये जाने वाले इतिहास और व्यवस्था दोनों का दोहराव और स्मरण कराना है, जिसे मूसा ने अपनी मृत्यु के कुछ ही समय पहले इस्त्राएलियों को कराया था। जंगल में चालीस वर्षों तक भटकने के पश्चात इस्राएली लोग, प्रतिज्ञात देश में प्रवेश करने ही पर थे। इसके पहले की वे प्रतिज्ञात देश में प्रवेश करें, वह सब कुछ जो परमेश्वर ने उनके लिये किया था उसका और परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था का उन्हें स्मरण दिलाया जाना आवश्यक था। उस प्रतिज्ञात देश में बने रहने योग्य होने के लिये और परमेश्वर के पवित्र राष्ट्र तथा अन्य देशों के लिये याजकों के राष्ट्र के रूप में कार्य करने के लिए आवश्यक था कि वे इस व्यवस्था का पालन करें (व्यवस्था 4:1-8)। इसी विषय के हिस्से के रूप में, यह पुस्तक इस बात पर भी जोर देती है कि बच्चों को परमेश्वर से प्रेम करना और उसकी आज्ञा का पालन करना सिखाया जाना अत्याधिक आवश्यक है (6:1-9)। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक, परमेश्वर के इस्त्राएलियों के साथ वाचा के नवीनीकरण के साथ-साथ (अध्याय 29), यहोशू को नए अगुवे के रूप में नियुक्त किये जाने (अध्याय 31) और मूसा की मृत्यु के साथ समाप्त होती है (अध्याय 34)। यीशु ने बार-बार व्यवस्थाविवरण से हवाला दिया है। उसने शैतान को व्यवस्थाविवरण में लिखे गये वचनों से उत्तर दिये।

मुख्य शब्द: "वाचा" शब्द सत्ताईस बार प्रयोग किया गया है।

मुख्य विचार - *चुनाव:* - परमेश्वर के अनुशासन से लाभान्वित होने के बाद, इस्राएली लोग एक निर्णायक बिन्दु पर आकर खड़े हो गए थे। सफलता या असफलता, जीवन या मृत्यु, आषीशें या शाप --हर एक इस पर निर्भर होना था कि वे लोग और उनके अगुवे क्या चुनाव करते हैं। परमेश्वर उन पर दबाव नहीं डालेगा कि वे उसके पीछे चलें। उसने आश्चर्यकर्मों के द्वारा उन पर अपने ईश्वरीय प्रेम और सामर्थ को प्रदर्शित किया था, परंतु वह चाहता था कि उसकी व्यवस्था का पालन करने का चुनाव वे स्वयं करें। व्यवस्थाविवरण में दी गई चेतावनियों की प्रभावकारिता बाद में यहोशू के द्वारा लोगों को दिये गये उस आदेश में दिखाई देती है जो उसने उन्हें तब दिया जब वे अपने शत्रुओं और परीक्षाओं का सामना कर चुके थे, "तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे" (यहोशू 24:15)।

मुख्य अध्याय: अध्याय 27 मुख्य है क्योंकि इसमें इस्त्राएलियों की वाचा का विधिवत दृढ़िकरण है जिस पर ध्यान देने और सुनने के लिये मूसा और लेवीय याजकों ने सारे इस्राएल को बुलाया। अध्याय 28-30 भी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इसमें इस्त्राएलियों के निकटतम् एवं दूर के भविष्य के लिये प्रतिज्ञाएं हैं जो आज्ञापालन

के द्वारा आशीषें और अनाज्ञाकारिता के कारण शाप से संबंधित हैं।

मुख्य पद: 4:31; 10:12-14; 30:19-20

मुख्य व्यक्ति: मूसा और यहोशू

व्यवस्थाविवरण में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: मूसा से संबंधित 18:15 में दिया गया कथन, मसीह से संबंधित एक सुस्पष्ट चित्रण है। "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे मध्य से अर्थात् तेरे भाईयों में से मेरे समान एक नबी को उत्पन्न करेगा, तू उसी की सुनना।" इसके साथ-साथ, मसीह के चिन्ह के रूप में मूसा ही वह एकमात्र व्यक्ति है जिसने मसीह के समान तीनों पदों को पूरा किया: भविष्यद्वक्ता (34:10-12), याजक (निर्गमन 32:31-35) और राजा (यद्यपि मूसा राजा नहीं था तौभी उसने इस्राएल में एक शासक के रूप में कार्य किया; 33:4-5)।

रूपरेखा:

1. जंगल में इस्राएल के भ्रमण के इतिहास का सारांश (अध्याय 1-3)
2. चेतावनी और प्रोत्साहन के साथ व्यवस्था का दोहराया जाना (व्यवस्था 4-11)
3. निर्देश, चेतावनियां और भविष्यवाणियां (अध्याय 12-27)
4. समापन में महान भविष्यवाणियां, इस्राएल के इतिहास का मसीह के दूसरे आगमन तक का सारांश देते हुये, जिनमें यह भी शामिल है कि लोगों के तितर-बितर हो जाने के बाद उन्हें पुन: पलिस्तीन देश में एकत्रित किया जायेगा (इसे 'पलिस्तीनी वाचा' के नाम से भी जाना जाता है।) (अध्याय 28-30)।
5. याजको, लेवियों और यहोशू को अंतिम निदेश (अध्याय 31)
6. मूसा का गीत और उसके द्वारा बिदाई में दी गई आशीषें (अध्याय 32-33)
7. मूसा की मृत्यु (अध्याय 34)

पंचग्रंथ का पुनरावलोकन

हम उत्पत्ति में मनुष्य को बिगड़ा हुआ; निर्गमन में मनुष्य को उद्धार किया गया; लैव्यव्यवस्था में मनुष्य को आराधना करता हुआ; गिनती में मनुष्य को सेवा करता हुआ; व्यवस्थाविवरण में मनुष्य को आज्ञा मानना सीखता हुआ देखते हैं

पंचग्रंथ में स्मरणयोग्य मुख्य शब्द और विचार

उत्पत्ति	आरम्भ	राष्ट्र का चुनाव
निर्गमन	पापों से छुटकारा	एक राष्ट्र का छुटकारा
लैव्यव्यवस्था	पवित्रता	राष्ट्र का पवित्रीकरण
गिनती	भटकाव	राष्ट्र की दिशा
व्यवस्थाविवरण	पुनरावलोकन	राष्ट्र को निर्देश

भाग 2 - इतिहास की पुस्तकें : इस्राएल राष्ट्र का इतिहास

पंचग्रंथ के बाद पुस्तकों का दूसरा समूह आता है। बारह पुस्तकें हैं जिनमें यहोशू से लेकर बेबीलोन/फारस में हुई लोगों की बंन्धुआई के बाद फिर मंदिर के पुन:र्निर्माण तक का इस्राएल राष्ट्र का इतिहास लिखा गया है। ये पुस्तकें, उस राष्ट्र के उस देश पर अधिकार कर लेने के बाद से लेकर, उनके अविश्वास और अनाज्ञाकारिता के कारण उनके दो बार देश से निकाल दिये जाने, और उनकी भूमि छिन लिये जाने के जीवन को बताती है। इन पुस्तकों में इस्राएल का आठ सौ वर्षों का इतिहास है: जैसे कि, कनान को जीत कर उसे अपने अधिकार में कर लेना, न्यायियों का शासन काल, राजाओं की स्थापना, इस्राएल राष्ट्र का उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में विभाजन, उत्तरी राज्य का अश्शूर से हार जाना, दक्षिणी राज्य का बेबीलोन के द्वारा बंदी बनाकर ले जाया जाना, और फिर नहेम्याह और एज्रा जैसे अगुवों की अगुवाई में यरूशलेम वापस लौट आना।

इतिहास की पुस्तकें: मसीह के लिए तैयारियाँ		
यहोशू	राष्ट्र के द्वारा देश को अधिकार में ले लिया जाना	ईश्वरतंत्र: ये पुस्तकें उस समय को बताती है जब इस्राएल पर सीधे परमेश्वर का शासन था (1405-1043 ई. पू.)
न्यायियों-रूत	राष्ट्र का उत्पीड़न	
1 शमूएल	राष्ट्र का स्थायिकरण	एकछत्र-शासन: ये पुस्तकें इस्राएल के एकछत्र शासन का, उसकी स्थापना से लेकर उसके विनाश तक का (586) इतिहास बताती हैं
2 शमूएल	राष्ट्र का विस्तार	
1 राजाओं 1-10	राष्ट्र का ऊँचाइयों तक पहुँचना	
1 राजाओं 11-22	राष्ट्र का विभाजन	
2 राजाओं 1-17	उत्तरी राज्य का पतन	
2 राजाओं 18-25	दक्षिणी राज्य का बन्धुआई में जाना	
1 इतिहास	मन्दिर बनाने की तैय्यारियाँ	
2 इतिहास	मन्दिर का नष्ट किया जाना	
एज्रा	मंदिर का पुन:स्थापन	पुन:स्थापन: ये पुस्तकें, बचे हुये लोगों के 70 सत्तर वर्षों की बंधुवाई के बाद देश में वापस लौटने का वर्णन करती हैं (ईसा पूर्व 605-536)
नहेम्याह	नगर का पुनर्निर्माण	
एस्तर	राष्ट्र के लोगों की रक्षा	

यहोशू - आधिपत्य और जीत

लेखकः यहोशू **समयः** 1400-1370 ईसा पूर्व

पुस्तक का नामः पुराना नियम की पाँच पुस्तको के विपरीत, इस पुस्तक का नाम इस में के मुख्य मानवीय पात्र, नून के पुत्र, मूसा के सेवक "यहोशू" के नाम पर रखा गया है। यहोशू का वास्तविक नाम होशे था। (गिनति 13:8; व्य. 32:44) जिसका अर्थ "उद्धार" होता है, परंतु जंगल में भ्रमण करने के दिनों में मूसा ने उसका नाम बदल कर "यहोशू" रख दिया अर्थात् "यहोवा उद्धार है" या "यहोवा, बचा ले" (गिनती 13:16)।

मुख्य विषय एवं उद्देश्यः प्रतिज्ञा के देश को अपने अधिकार में कर लेना, उसे जीत लेना और उसका विभाजन यही यहोशू का मूल विषय और उद्देश्य है। यहोशू पुस्तक की रचना 'परमेश्वर की अपनी प्रतिज्ञा के प्रति विश्वासयोग्यता,' अर्थात् इस्त्राएलियों के लिये उसके द्वारा ठीक वही किया जाना जो उसने कहा था, दिखाने के लिए ही की गई है (इन वचनों की तुलना करें: उत्पत्ति 15:18; यहोशू 1:2-6 और 21:43-45)। यहोशू में चुनी हुई घटनाएं लिखी गई हैं जिनका उद्देश्य विभिन्न प्रकार की कठीनाइयों के समक्ष, परमेश्वर का अपने लोगों के पक्ष में किया गया विशेष हस्तक्षेप प्रदर्शित करना है।

मुख्य शब्दः अधिपत्य में कर लेना, जितना, विजय, भूमि को बांट लेना

मूल विचार - ***सामर्थः*** कनान को अपने अधिकार में कर लेने के लिये एक के बाद एक जीत की कहानियाँ, बुराई के ऊपर परमेश्वर की सामर्थ का उदाहरण प्रस्तुत करती है। स्पष्टतः, ये सारे युद्ध परमेश्वर की सामर्थ मनुष्य-रूपी बर्तनों के माध्यम से कार्यकारी होते हुये ही जीते गये थे। यह सामर्थ तब तक प्रवाहित होती रही जब तक इस्राएली परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आज्ञाकारी बने रहे; जब उन्होंने विश्वासघात किया, या पाप किया (जैसे कि, ऐ नगर के पास, अध्याय 7), परमेश्वर ने अपना सामर्थी हाथ खींच लिया और उस समय इस्राएली हार गए। यह मूल विचार पंचग्रंथ की सच्चाई को सिद्ध करता है कि आज्ञाकारिता से आशीष आती है और अनाज्ञाकारिता से शाप आता है। अपनी पाप की अवस्था में मनुष्य शक्तिविहीन होता है। मात्र परमेश्वर ही सामर्थी है। प्रेरित पौलुस ने इसी विचार की पुष्टि की है जब उसने कुलुस्सियों 1:11 में प्रार्थना की है कि विश्वासी लोग "उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवंत होते जाओ, यहाँ तक की आनंद के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको।"

मुख्य अध्यायः अध्याय 1-4; 24

मुख्य पदः 1:3; 8-9; 18; 11:23; 24:14-15

मुख्य लोगः यहोशू, राहाब, कालेब

यहोशू में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गयाः जबकि मसीह से संबंधित कोई प्रत्यक्ष भविष्यवाणी नहीं है तथापि इसमें बहुत से उदाहरण है जो उद्धारकर्ता की ओर संकेत करते हैं।

यहोशू दो मुख्य तरीके से मसीह का चित्र है:

1. पहला, उसका नाम "येशुआ" जो "यहोशू" का संकुचित रूप है, जिसका अर्थ है "यहोवा उद्धार है"।

यह इब्रानी शब्द है जो ग्रीक नाम "येसूस" के बराबर है।

2. दूसरा; यहोशू को उसके कार्य में मसीह के उदाहरण-स्वरूप देखा गया है जिसके द्वारा वह इस्त्राएलियों को विजय के साथ उनके प्रतिज्ञा के विश्रामस्थान "कनान देश" में ले जाता है (तुलना करें: इब्रा 4:8)। यह और कुछ नहीं परंतु उस "विश्राम" का पूर्वस्वाद है जिसमें हम मसीह में विश्वास करने के द्वारा प्रवेश करते हैं। यहोशू निश्चय ही उस छुड़ानेवाले की प्रतिच्छाया है जो "बहुत से पुत्रों को महिमा में" पहुंचाता है (इब्रा 2:9-10)।

इसके साथ साथ, 5:13-15 में यहोशू की भेंट यहोवा की सेना के प्रधान से होती है। कुछ विद्वान इसे ख्रिस्टोफेनी, अर्थात् मसीह का देहधारण करके पृथ्वी पर आने के पहले का प्रकटन मानते हैं। उसका वहां प्रगट होना और उसका यहोशू के प्रश्न को उत्तर देना (कि वह किसी की ओर का नहीं है), प्रगट करता है कि परमेश्वर मनुष्य के संघर्षों के ऊपर सम्प्रभुता रखता है और जब वह चाहता है और जैसे चाहता है वैसे सीधे हस्तक्षेप करता है।

अंत में, राहाब की लाल रंग की डोरी (2:21) मसीह के लहू और मृत्यु के द्वारा मिलने वाले उद्धार को प्रदर्शित करती है (तुलना करें: इब्रा. 9:19-22)। इस अन्यजातिय वेश्या ने परमेश्वर के सामर्थी कामों बारे में सुना, विश्वास किया, जासूसों को छिपाया, बचाई गई जब यरीहो का नाश किया गया, और उसका नाम मसीह की वंशावली में पाया गया है (मत्ती 1:5)।

रूपरेखा :

1. कनान पर आक्रमण (1:1-5:12)
2. कनान को जीत लिया जाना (5:13-12:25)
3. कनान का विभाजन (अध्याय 13-21)
4. निष्कर्ष (अध्याय 22-24)

न्यायियों - विश्वासघात, न्याय और छुटकारे के के सात चक्र

लेखक: परम्परा के अनुसार ज्ञात होता है कि इस पुस्तक को शमुएल ने लिखा, परंतु वास्तव में इसे किसने लिखा यह निश्चित नहीं है। हो सकता है कि शमुएल ने कुछ वृत्तांत को न्यायियों के काल से एकत्रित किया होगा और भविष्यद्वक्ताओं ने, जैसे कि नातान और गाद ने, उस साहित्य के संपादन में सहयोग किया होगा। (देखिए 1 इतिहास 29:29) **समय:** 1050-1000 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: इस पुस्तक का नाम उन तेरह लोगों से (12 पुरुष और 1 महिला) पड़ा जो न्यायी कहलाते थे, जिन्हें परमेश्वर ने उभारा था कि वे इस्राएल को उन पर अत्याचार करने वालों से छुड़ाये। इस पुस्तक का नाम बहुत ही स्पष्ट रूप में 2:16 में व्यक्त किया गया है, ''तौभी यहोवा उनके लिए न्यायी ठहराता था, जो उन्हें लूटने वाले के हाथ से छुड़ाते थे।''

तथापि, अंतत: परमेश्वर ही इस्राएल का न्यायी और छुड़ाने वाला था, क्योंकि वह परमेश्वर ही था जो इस्राएल के बार-बार किये जाने वाले विश्वासघात के लिये पहले उनके आत्मिक अनुशासन का समय ठहराता था, और फिर संपूर्ण देश के पश्चाताप करने और सहायता के लिये दोहाई के बाद न्यायियों को खड़ा करता था कि उन्हें छुटकारा दिलाये।

मूल विषय और उद्देश्य: आत्मिक रूप से, न्यायियों इस्राएल के अंधकारमय समय का वृत्तांत है। लोगों ने परमेश्वर को त्याग दिया (न्यायियों 2:13) और परमेश्वर ने लोगों को छोड़ दिया (2:14)। यह वाक्य संपूर्ण पुस्तक में मिलता रहता है कि "जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था" (21:25)। इसमें दो वास्तविकताएं उभर कर आती हैं- 1. इस्राएल की पूरी-पूरी असफल और 2. यहोवा का निरंतर का अनुग्रह।

ऐतिहासिक रूप से, न्यायियों उस अंतराल को जोड़ने का काम करता है जो यहोशू के बाद से लेकर शमूएल भविष्यद्वक्ता के और शाऊल और दाऊद के अधिनस्थ एकछत्र राज्य के आरंभ होने के बीच का समय है। प्रतिज्ञात देश में, उन पहले 350 वर्षों में कोई राजा नहीं था। इसमें 'विश्वासघात, संकट, दोहाई और छुटकारा' इस चक्र के सात बार दोहराये जाने के इतिहास का लेखा है।

सैद्धांतिक रूप से, न्यायियों की पुस्तक हमारा ध्यान अनेक मुख्य सच्चाईयों की ओर खींचती है। जैसा कि परमेश्वर ने व्यवस्थाविवरण में चेतावनी दी थी कि आज्ञाकारिता से आशीष मिलती है परंतु अनाज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर का अनुशासन और विपत्ति होता है। परंतु न्यायियों हमें यह भी याद दिलाती है कि जब लोग परमेश्वर की ओर वापस लौटेंगे, उसकी दोहाई देंगे और पश्चाताप करेंगे, तब परमेश्वर जो कोप करने में धीरजवन्त और अनुग्रहकारी है, वह छुटकारे के रूप में उत्तर देगा। न्यायियों अपने मूल-विषय को बतलाने के लिये घटनाओं को इस क्रम के दोहराव में प्रस्तुत करती है: लोगों के द्वारा विश्वासघात, उसके बाद परमेश्वर के द्वारा अनुशासन के रूप में संकट को भेजा जाना, उसके बाद लोगों के द्वारा परमेश्वर की दोहाई देना और पश्चाताप करना, और उसके बाद परमेश्वर के द्वारा न्यायियों को ठहराना कि राष्ट्र को छुटकारा दिलाये।

मुख्य शब्द: बुरा (14 बार); न्यायी, न्याय करना, न्याय (22 बार)

मूल विचार - ***दया:*** पश्चाताप, क्षमा, विश्वासघात और न्याय के देहाराये गये सात चक्र इस सच्चाई के

उदाहरण है कि परमेश्वर दयालु है; उसका इस्त्राएलियों के प्रति महान प्रेम उसे बाध्य करता है कि उनके पाप करने के बाद भी वह उन्हें पूरी रीति से त्याग नहीं देता। न्यायियों की पुस्तक में इस चक्र की पुनरावृत्ति सात बार हुई है: बाइबल में सात अंक पूर्णता को प्रदर्शित करता है। फिर भी परमेश्वर की महान दया के संबंध में यहूदियों की समझ अपूर्ण थी, और विश्वासी होने के नाते दयालु होने में हमारा कर्तव्य भी अपूर्ण रह जाता है। प्रेरित पतरस ने प्रभु से पूछा कि क्या हमें सात बार क्षमा करना चाहिये (देखिए मत्ती 18:21-35 में निर्दयी सेवक का दृष्टान्त)। यीशु का उत्तर था, "मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक वरन् सात बार के सत्तर गुने तक।" यहूदी लोग इस अंक का अर्थ "अनंत" समझते थे; अत: परमेश्वर की दया हमारे लिए अनंत है।

मुख्य अध्याय: अध्याय 4-5 (दबोरा और बाराक); 6-7 (गिदोन) 13-16 (शिमशोन)

मुख्य पद: 2:15-16; 2:20-23; 21:25

मुख्य लोग: न्यायी - ओत्नीएल, एहूद, शमगर, दबोरा और बाराक, गिदोन, तोला, याईर, यिप्तह, इबसान एलोन और अब्दोन, शिमशोन। इनमें दबोरा, गिदोन और शिमशोन सब से अधिक जाने-माने न्यायी हैं।

न्यायियों में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: इसलिये कि प्रत्येक न्यायी ने एक शासक-छुटकारा देने वाले के रूप में कार्य किया, वे उद्धारकर्ता का चित्रण प्रस्तुत करते थे जो अपने काम में उद्धारकर्ता और प्रभु, धर्मी, छुड़ाने वाला राजा है।

रूपरेखा :

1. पतन - एक परिचय; न्यायियों के समय काल का कारण (1:1-3:6)
2. छुटकारा - न्यायियों के शासनकाल का समय और इतिहास (3:7-16:11)
3. भ्रष्टता - विश्वासघात और अराजकता; न्यायियों के शासनकाल की बर्बादी (17:1-21:25)

रूत - न्यायियों से जुड़ा हुआ परिशिष्ट

लेखक: न्यायियों के लेखक की तरह रूत का लेखक भी अनिश्चित है।

समय: 1000 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: रूत यह नाम इस पुस्तक को उस में के मुख्य चरित्र से मिला है, जो एक मोआबिन जवान स्त्री थी, वह दाऊद की परदादी बनी, जिसका नाम उद्धारकर्ता की वंशावली में सम्मिलित है (मत्ती 1:5)।

मूल विषय और उद्देश्य: रूत की पुस्तक हमें यीशु मसीह के विषय में बताती है जो हमारा छुड़ानेवाला कुटुम्बी है। यह पुस्तक न्यायियों की काली पृष्ठभूमि पर एक तेजस्वी चित्र है और मसीह और कलीसिया का प्यारा चित्रण है। यह गिदोन और यिप्तह के शासनकाल का वृत्तांत बताती है। रूत दाऊद की परदादी थी, जो मसीह का पूर्वज था। यह पुस्तक मसीह-संबंधित उस निकटतम् परिवार और राष्ट्र के आरंभ के बारे में बताती है जिसमें मसीह का जन्म होना था। रूत एक मोआबिन थी, उन लोगों में से जो लूत की संतान थे, मूर्तिपूजक जाति थे। अन्यजातियों को मसीह के परिवार में अपना लेने का यह परमेश्वर के अनुग्रह का कितना सुंदर चित्रण है!

रूत एक विश्वासनीयता, पवित्रता और प्रेम की कहानी है, ऐसे दिनों के बीच जब अराजकता, स्वार्थ और भ्रष्टता का ही अधिकतम जोर था। देखा जाए तो रूत विश्वासघात के वातावरण में विश्वास और आज्ञाकारिता का सकारात्मक चित्रण प्रस्तुत करती है, और यह भी प्रदर्शित करती है कि ऐसा विश्वास किस तरह से परमेश्वर के लोगों के परिवार में आशीष लाता है।

मुख्य शब्द: विचारों के अनुसार, मुख्य शब्द *छुड़ानेवाला कुटुम्बी* होगा। कुटुम्बी (14 बार), छुड़ाना (9 बार)

मूल विचार - *से संबंधित:* रूत की पुस्तक ऐसे चरित्रों का चित्रण करती है जिनमें से प्रत्येक को इस बात की समझ थी कि वे किस स्थान/लोगों से संबंधित है, चाहे अन्य लोग उनकी समझ से सहमत न हो। नाओमी के पति और पुत्र की मृत्यु हो जाने के बाद नाओमी ने समझा कि वह अपने लोगों से संबंधित है। चाहे नाओमी असहमत थी परंतु रूत ने समझा कि वह उस देश में जो उसके लिये परदेस है, वह नाओमी से संबंधित है। जबकि छुड़ानेवाला कुटुम्बी होने का अधिकार एक अन्य व्यक्ति को था, परंतु बोअज ने विश्वास किया था कि वह स्वयं उस भूमिका से संबंधित है; ठीक ऐसा ही नाओमी और रूत को लगा था। यह पुस्तक इस बात का चित्रण करती है कि मनुष्य के कहीं-किसी से संबंधित होने की समझ को और परिवार तथा रिश्तों के विचारों को, परमेश्वर के द्वारा किस प्रकार वश में कर लिया जाता है जब उसके पास आशीष देने की रूपरेखा और योजना होती है। जैसे रूत एक अन्यजातिय होकर भी यीशु की वंशावली में जोड़ी गई, उसी प्रकार हम भी परमेश्वर के परिवार में जोड़ दिए गए हैं, उससे संबंधित हैं, क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपने प्रिय पुत्र में स्वीकार किया है (इफि 1:3-6)।

मुख्य अध्याय: अध्याय 1 मुख्य है क्योंकि यह रूत के नाओमी के साथ रहने के विश्वास, भक्ति और समर्पण के निर्णय को प्रदर्शित करता है; वह निर्णय जो उसे उसके छुटकारे की ओर ले गया।

अध्याय 4 एक और मुख्य अध्याय है क्योंकि यह रूत के एक गरीब विधवा होने की दशा में से, एक छुड़ाने

वाले कुटुम्बी के द्वारा, विवाहित और धनाढ्य स्त्री बन जाने के परिवर्तन को बताता है।

मुख्य पद: 1:15-17; 3:11-13

मुख्य व्यक्ति: रूत, नाओमी; बोअज

रूत में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: पुराना नियम में, यदि कोई व्यक्ति या जमीन बंधुआई में बेच दी जाती थी तो वह एक छुड़ाने वाले कुटुम्बी के द्वारा, यदि वह कुछ शर्तों को पूरा करता हो तो, छुड़ाई जा सकती थी। यह उद्धारकर्ता के द्वारा किये जाने वाले छुटकारे के कार्य का एक सिद्ध चित्र है। छुड़ाने वाले कुटुम्बी में इन शर्तों को पूरा होना अवश्य था:

1. वह उनका खून का कुटुम्बी हो जिन्हें छुड़ाया जाना है (व्य. 25:5,7-10, यूहन्ना 1:14; रोमियों 1:3, फिलि. 2:5-4; इब्रा. 2:14-15)
2. वह छुटकारे की कीमत चुकाने के योग्य हो (तुलान करें: रूत 2:1 की 1 पत. 1:18-19 से)
3. वह छुटकारा दिलाने का या कीमत चुकाने का इच्छुक हो (तुलना करें: रूत 3:11, मत्ती 20:28, यूहन्ना 10:15,19, इब्रा. 10:7)
4. वह स्वयं स्वंतत्र हो, जैसे मसीह स्वयं निर्दोष होने के कारण पाप के शाप से स्वतंत्र था (2 कुरिंथि. 5:21; 1 पतरस 2:22; 1 यूहन्ना 3:5)।

रूपरेखा :

1. रूत निर्णय लेते हुये: अध्याय 1
2. रुत सेवा करते हुये: अध्याय 2
3. रूत निवेदन करते हुये: अध्याय 3
4. रूत पुरस्कार पाते हुये: अध्याय 4

शमूएल की पहली पुस्तक - न्यायियों से राजतंत्र में परिवर्तन

लेखक: शमूएल की पुस्तकों के लेखक संभवत: शमूएल, गाद और नातान थे। शमूएल ने पहली पुस्तक के पहले चौबीस अध्याय लिखें, फिर गाद जो दाऊद का साथी था (1 शमूएल 22:5) उसने आगे का इतिहास लिखा; और नातान ने इसे पूरा किया, संभवत: उसे उस रूप में व्यवस्थित किया, जिस रूप में अब हम इसे पाते हैं (1 इति. 29:29)।

समय: 930 ईसा पूर्व और बाद में

पुस्तक का नाम: मूल रूप में, शमूएल की पहली और दूसरी पुस्तक को इब्री बाइबल में एक साथ रखा गया था। इन पुस्तकों को शमूएल यह नाम इसलिए नहीं दिया गया कि शमूएल ने इन पुस्तकों को लिखा है, परंतु इसलिये कि पहली पुस्तक का आरंभ उसके जीवन, जन्म, बालकपन, उसकी सेवकाई और उसके शासन के लम्बे वृत्तांत से होता है। दोनों पुस्तकों का शेष भाग शाऊल और दाऊद के शासनकाल के इतिहास का वर्णन करता हैं। इन दोनों राजाओं का अभिषेक शमूएल द्वारा ही किया गया था।

मूल विषय और उद्देश्य: पहला शमूएल उन छ: पुस्तकों में पहली पुस्तक है जो इस्राएल के राजाओं के शासनकाल का इतिहास बताती है। जो घटनाएं पहले शमूएल में लिखित हैं वे लगभग 115 वर्षों के समय में हुई हैं। शमूएल के जन्म और उसके मंदिर में हुये प्रशिक्षण से आरंभ करते हुये यह पुस्तक बताती है कि परमेश्वर के इस महान व्यक्ति ने कैसे एक भविष्यवक्ता, याजक और अंतिम न्यायी के रूप में इस्राएल की अगुवाई की थी।

शमूएल के नेतृत्व के दिनों में इस्राएल के लोगों ने, दूसरे देशों के समान होने की चाहत रखते हुये, एक राजा की मांग की। तब परमेश्वर के निर्देशानुसार, शमूएल ने शाऊल का प्रथम राजा बनने के लिए अभिषेक किया। परंतु शाऊल अपनी अनाज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर के द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। शाऊल का स्थान लेने के लिये, फिर से परमेश्वर के निर्देशन में, शमूएल ने इस्राएल का राजा होने के लिये उस दाऊद का अभिषेक किया जो परमेश्वर के मन के अनुसार था। शेष पुस्तक, ईर्ष्यालु और विक्षिप्त शाऊल और धार्मिक दाऊद के बीच के संघर्ष का वर्णन करती है।

मुख्य शब्द: इस पुस्तक के विचारों के अनुसार इसका मुख्य शब्द परिवर्तन है, किन्तु शब्दों के उपयोग किये जाने में अभिषेक (7 बार) और अस्वीकार (7 बार) ये दो मुख्य शब्द इस परिवर्तन के दौर को बताने के लिये आये हैं।

मुख्य विचार - ***प्रभुत्व:*** परमेश्वर परमप्रधान है। किसी भी मनुष्य को प्राप्त अधिकार वह मनुष्य तब ही काम में ला सकता है जब मात्र परमेश्वर उसे प्रयोग करने की अनुमति देता है। परमेश्वर की इस्राएल के शासन के लिए की गई मूलभूत योजना यह थी कि मात्र परमेश्वर ही उनका राजा होगा, और वह अपने प्रभुत्व को भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा काम में लायेगा। उसका लोगों के द्वारा की गई एक सांसारिक राजा की मांग से सहमत होना मात्र अनिच्छा से हुआ था। तथापि, परमेश्वर का शमूएल को निर्देश देना की शाऊल का राजा बनने के लिए अभिषेक करे, बाद में शाऊल को अस्वीकार कर देना, और फिर दाऊद का अभिषेक करवाना, ये बातें

प्रमाणित करती हैं कि परमेश्वर प्रभुत्व में बना रहता है। वह परमेश्वर ही है जो अधिकारियों को नियुक्त करता है और गिराता है (रोमियों 13:1-5)।

मुख्य अध्याय: अध्याय 8 में इस्राएल राष्ट्र की दु:खद शिकायत लिखी गई है जो उनकी दूसरे राष्ट्रों के समान अपने लिये एक राजा पाने की चाहत थी, कि वह राजा उनका न्याय करें और उनके लिए युद्ध लड़े। उनकी मांग के प्रत्युत्तर में, प्रभु के द्वारा शमूएल को बताया गया कि वह लोगों के लिए एक राजा नियुक्त करें, और यह भविष्यद्वक्ता अपनी राजा-बनाने की भूमिका को अपनाता है।

अध्याय 15 में वर्णन है कि, शाऊल की अनाज्ञाकारिता और स्वेच्छाचारी चरित्र के कारण, राज्याधिकार किस प्रकार शाऊल से दाऊद को स्थानान्तरित होता है (देखिए 15:23)।

अध्याय 16 में दाउद को चुना जाना और उसके अभिषेक का वर्णन है।

मुख्य पद: 8:6-7; 13:14; 15:22-23

मुख्य लोग: शमूएल भविष्यद्वक्ता, अनाज्ञाकारी राजा शाऊल और चरवाहा दाऊद।

1 शमूएल में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: शमूएल के इस चरित्र में कि वह एक भविष्यद्वक्ता, एक याजक और एक ऐसा न्यायी था जो परमेश्वर के द्वारा एक नए युग का आरम्भ करने के लिए उपयोग में लाया गया, मसीह का एक रोचक चित्र बनता है।

शमूएल यह बाइबल की पहली पुस्तक है जिसमें अभिषेक शब्द का उपयोग किया गया है (2:10)। इसके साथ-साथ, दाऊद के जीवन में मसीह का चित्रण और पूर्वाभास पाया गया है।

रूपरेखा:

1. शमूएल, परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता और अंतिम न्यायी। (अध्याय 1-7)
2. शाऊल, प्रथम राजा, एक ऐसा राजा परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी था। (अध्याय 9 से 15)
3. दाऊद, द्वितीय राजा, जो परमेश्वर के मन के अनुसार था। (अध्याय 16-31)

शमूएल की दूसरी पुस्तक - दाऊद का शासन; राज्य का विस्तार

लेखक: शमूएल की पहली पुस्तक की टिप्पणी देखिए।

समय: 930 ईसा पूर्व और बाद में।

पुस्तक का नाम: शमूएल की पहली पुस्तक की टिप्पणी देखिए।

मुख्य विषय और उद्देश्य: जबकि शमूएल की पहली पुस्तक मनुष्यों के द्वारा मांगे हुये राजा शाऊल की असफलताओं का उल्लेख करती है, शमूएल की दूसरी पुस्तक परमेश्वर के चुने हुए राजा दाऊद के राजगद्दी पर आसीन होने के विषय में, और "दाऊद का घराना" के स्थापित होने के विषय में बताती है जिसके द्वारा बाद में मसीह का आगमन होना था। दाऊद वह व्यक्ति था जो परमेश्वर के मन के अनुसार था, वह सिद्ध नहीं था, परंतु असफल होने पर पश्चाताप करने वाला जन था। वह बहुमुखी प्रतिभा का धनी था - चरवाहा लड़का, दरबारी संगीतज्ञ, सैनिक, सच्चा मित्र, बहिष्कृत कप्तान, राजा, महान सेनानायक, प्रेमी पिता, कवि, पापी और टूटे हुए दिल का वृद्ध व्यक्ति परंतु सर्वदा परमेश्वर से प्रेम करने वाला मनुष्य था।

शाऊल की मृत्यु से आरम्भ होकर दाऊद के साथ आगे बढ़ते हुए शमूएल की दूसरी पुस्तक विशेष रूप से इस्राएल के चालीस वर्ष के राज्य के विषय में है। 2 शमूएल दाऊद के राज्य के वृत्तांत को आगे बढ़ाती है। (5:4-5) और उसके राज्य की रूपरेखा को उत्थान और पतन के द्वारा प्रस्तुत करती है जिसमें उसके व्यभिचार और हत्या का पाप और उसका उसके परिवार और राज्य पर हुआ परिणाम सम्मिलित हैं।

जबकि 2 शमूएल की पुस्तक दाऊद के राज्य का वर्णन करती है, मुख्य विषय का सारांश यूं किया जा सकता है: "पाप किस तरह से विजय को कठिनाइयों में बदल देता है।" जबकि राज्य की स्थापना शाऊल के द्वारा की गई थी, उसका विस्तार दाऊद के द्वारा हुआ। शाऊल के राज्य ने इस्राएल को न्यायियों के समय के बाद स्थिरता प्रदान की, परंतु दाऊद के राज्य ने विकास या विस्तार लाया। अपने विशेष तरीके से बाइबल, जो अपने अगुवों के अवगुणों को भी खुलकर बताती है, दूसरा शमूएल में राजा दाऊद के अच्छे, बुरे और घिनौने जीवन का चित्रण करती है।

मुख्य शब्द: इसलिये कि दाऊद का नाम कुल 267 बार आता है (न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड बाइबल में), उसका नाम स्पष्ट रूप से मुख्य शब्द बन जाता है।

मुख्य विचार - ***विनम्रता:*** राजा दाऊद को बाइबल में उसकी पूरी विनम्रता के साथ चित्रित किया गया है। उसके पापों को छुपाने का कष्ट नहीं किया गया है। दाऊद की विनम्रता ही है जो उसे एक टिकाऊ और चाहनेयोग्य चरित्र प्रदान करती है। यद्यपि उसने बहुत अधिक सामर्थ्य और युद्ध में विजय हासिल की थी, तौभी उसे बहुत-सी असफलताएं भी मिलीं। वह बात जो उसे शाऊल से भिन्न करती है, और यह दिखाती है कि वह "परमेश्वर के मन के अनुसार" जन था, वह उसका तुरंत पश्चाताप करना था। जब शाऊल के सामने उसके पाप लाये गये, तब उसने अपने मन को कठोर बना लिया और बहाने करने लगा। जब दाऊद के पाप दिखाये गये तो उसने बड़े खेद के साथ पश्चाताप किया। उसने वैसा घमण्ड नहीं आने दिया जैसे शाऊल ने किया था, और उसकी विनम्रता के कारण परमेश्वर ने उसे राजा बने रहने दिया। नीति वचन 16:18 में

परमेश्वर का वचन कहता है, "विनाश से पहले गर्व और ठोकर खाने से पहले घमण्ड आता है।"

मुख्य अध्याय: अध्याय 5 मुख्य है क्योंकि उसमें संपूर्ण इस्राएल के ऊपर किये गये दाऊद के राज्य का वर्णन है, परंतु, संभवत: अध्याय 11-12 अधिक निर्णायक अध्याय हैं जिसमें दाऊद के बतशेबा और उसके पति ऊरिय्याह के विरुद्ध किये गये पाप का, फिर भविष्यद्वक्ता नातान द्वारा की गई उलाहना का और परिणाम स्वरुप, दाऊद के घराने पर आये परमेश्वर के अनुशासन या दण्ड का वर्णन है।

मुख्य पद: 7:12-16, 12:12-14

मुख्य लोग: दाऊद, बतशेबा, अबशालोम, योआब, अम्मोन, अहीतोपेल

2 शमूएल में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: दाऊद, उसके पापों को छोड़कर, इस्राएल के राजा के रूप में मसीह का एक उदाहरण बना रहता है। इसी खण्ड में, परमेश्वर **दाऊदीय वाचा को** (परमेश्वर द्वारा दाऊद के साथ बांधी गई वाचा) को स्थापित करता है, जो अतंत: मसीह के व्यक्तित्व में पूर्ण होती है।

रूपरेखा:

1. दाऊद के द्वारा जीत की सफलताएं (1-10)
2. राजा के पाप/अपराध (11:1-27)
3. राजा की कठिनाइयाँ (12:1-24:25)

पहला राजाओं - दाऊद की मृत्यु; राज्य का विनाश

लेखक: इसका लेखक अज्ञात है, जबकि यहूदी लोग इसके लेखक होने का श्रेय यिर्मयाह को देते हैं।

समय: लगभग 550 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: पहला और दूसरा राजाओं मूल रूप से एक ही पुस्तक है; (जैसे 1 और 2 शमूएल और 1 और 2 इतिहास), और इब्रानी परम्परा के अनुसार मात्र "राजाओं" कहलाते हैं, जो कि बहुत सही जान पड़ता है क्योंकि इनमें सुलैमान के समय से लेकर बेबीलोन के द्वारा बंदी बनाए जाने तक के इस्राएल और यहूदा के राजाओं के इतिहास का वृत्तांत हैं।

मुख्य विषय और उद्देश्य: राजाओं की पुस्तक शमूएल की पुस्तकों के आगे का ही वृत्तांत है। ये पुस्तकें 400 वर्षों के समय काल में यहूदी राष्ट्र के विकास, और फिर उसके विभाजन और नाश का ब्योरा बताती है। दक्षिणी राज्य यहूदा के 20 राजा थे, और उत्तरी राज्य इस्राएल के 19 राजा थे। यहूदा और इस्राएल दोनों बंदी बनाकर ले जाए गए थे।

पहला राजाओं में है राजा दाऊद का जीवन और मृत्यु (अध्याय 1-2), सुलैमान का राज्य, जिसमें इस्राएल की समृद्धि और उसका ऊँचाइयों की चोटी तक पहुँचने का और फिर राष्ट्र के साम्राज्य का विस्तार है, और यरूशलेम में मंदिर और राजमहल का निर्माण सम्मिलित है। तथापि सुलैमान के अंतिम वर्षो में, वह परमेश्वर से दूर हो गया क्योंकि उसकी मूर्तिपूजक पत्नियों ने उसे प्रभावित किया और उसके मन को मंदिर में परमेश्वर की आराधना करने से दूर कर दिया।

इसका मुख्य विषय यह दिखाना है कि अनाज्ञाकारिता किस प्रकार राज्य को विनाश की ओर ले गयी। राष्ट्र की भलाई इस पर निर्भर थी कि उसके अगुवे और लोग उस वाचा के प्रति विश्वसनीय बने रहेंगे जो परमेश्वर ने इस्राएल के साथ बांधी थी। पहला राजा की पुस्तक न मात्र इन राजाओं के इतिहास का लेखा देती है, परंतु यह भी दिखाती है कि किसी भी राजा की (और पूरे राष्ट्र की) सफलता उस राजा के परमेश्वर की व्यवस्था या सच्चाई के प्रति आज्ञापालन पर निर्भर करती है। यह पुस्तक पूरी सच्चाई से इस बात का उदाहरण देती है कि "जाति की बढ़ती धर्म ही से होती है परंतु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है" (नीतिवचन 14:34)। परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासघात का परिणाम पतन और बन्धुआई हुआ।

मुख्य शब्द: जबकि मुख्य शब्द "राज्य" है, जो लगभग 357 बार आया है (न्यू अमेरिकन स्टैण्डर्ड बाइबल), मुख्य विचार "राज्य का विभाजन" है।

मुख्य विचार - ***अलगाव:*** जो शिक्षा 1 और 2 राजाओं से मिलती है वह सुस्पष्ट विस्तृत विवरण से बताती है कि जब मनुष्य और परमेश्वर के बीच के रिश्ते में पाप का प्रवेश होता है तो क्या होता है। पाप अलग कर देता है। वह परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और सामर्थ्य के प्रवाह को उन लोगों तक बहने देने में रुकावट बन जाता है जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है और जिन्हें आशीष देने की उसने वाचा बांधी है। ये पुस्तकें यह भी उदाहरण देती हैं कि जब परमेश्वर के लोग एकता में बंधे होते हैं, तब वे सब से सामर्थी और आशीषित होते हैं। जब कलह अलगाव उत्पन्न करते हैं, तब हर एक जन इतना कमजोर होता है कि क्रूस के विरोधियों के

निशाने पर आ जाता है। यही कारण है कि प्रभु यीशु ने यूहन्ना 17:21 में कलीसिया के लिए प्रार्थना की "कि वे सब एक हो; जैसा तू हे पिता मुझमें है, और मैं तुझमें हूँ, वैसे ही वे भी हम में हो, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने भेजा है।"

मुख्य अध्याय: मुख्य अध्याय 11 और 12 हैं। इनमें सुलैमान की मृत्यु और राज्य के विभाजन का वर्णन हैं। दूसरे महत्वपूर्ण अध्याय, जो मुख्य भूमिका निभाते हैं वे हैं अध्याय 3 और 4 जो सुलैमान की बुद्धिमता और उत्तम शासन से संबंधित हैं; अध्याय 8 जिसमें मंदिर के समर्पण के वर्णन है; अध्याय 17 से लेकर 19 जिसमें एलिय्याह की महान सेवकाई का वृत्तांत है।

मुख्य पद: 3:7; 11:11

मुख्य लोग: सुलैमान, यरोबाम, रहूबियाम, एलिय्याह एलीशा, अहाब, और ईजबेल

1 राजा में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: दाऊद के समान ही सुलैमान, (उस समय जब वह परमेश्वर के प्रति ईमानदार था), मसीह का उदाहरण है जब वह भविष्य में पृथ्वी पर राज्य करेगा। विशेषकर सुलैमान की प्रसिद्धि, महिमा, धन, और सम्मान यह सब मसीह के पृथ्वी पर के राज्य को दिखाता है। सुलैमान, उसके द्वारा प्रगट की गई महान बुद्धिमता के द्वारा भी मसीह का चित्रण है।

रूपरेखा :

1. संयुक्त राज्य - सुलैमान का 40 वर्षों का शासन (अध्याय 1-11)
2. विभाजित राज्य - दो राज्यों के प्रथम 70 वर्ष (अध्याय 12-22)

दूसरा राजाओं - तितर-बितर हो जाना: जानबूझकर किए गए पाप का परिणाम दु:खद होता है

लेखक: लेखक ने ऐतिहासिक स्रोत का प्रयोग किया (11:41; 14:19,29)। वह उन में से एक था जो बेबीलोन की बन्धुआई में रहे थे, सम्भवत: वह एक अज्ञात व्यक्ति था, या एज्रा या यहेजकेल, या यिर्मयाह था।

समय: 1 राजाओं के समान ही।

पुस्तक का नाम: पिछला पाठ देखें।

मुख्य विषय और उद्देश्य: दूसरा राजाओं की पुस्तक में एलीय्याह का और उसके बाद आने वाले एलीशा का इतिहास है, परंतु यह और भी कुछ बताती है जिसे "दो राज्यों का वृत्तांत" कहा जा सकता है। एक तरह से यह पुस्तक उत्तरी राज्य इस्राएल और दक्षिणी राज्य यहूदा के इतिहास को आगे वहां तक बताती है जब अंतत: उन्हें हरा दिया गया और बन्धुआई में ले जाया गया। 722 ईसा पूर्व में इस्राएल अश्शूर के द्वारा हरा दिया गया; और 586 ईसा पूर्व में यहूदा बेबीलोन के द्वारा हरा दिया गया। इन दोनों राज्यों में भविष्यद्वक्ता लोगों को लगातार चेतावनी देते रहे थे कि यदि वे पश्चाताप नहीं करेंगे तो परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा।

दूसरा राजाओं सिखाता है कि राष्ट्र में जानबूझकर स्वेच्छा से किए गए पाप का अंत दु:खपूर्ण होता है। 1 और 2 शमूएल में एक राष्ट्र का जन्म होता है; 1 राजाओं में राष्ट्र का विभाजन होता है; और 2 राजाओं में राष्ट्र का बिखराव होता है। कई वर्षों तक भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा अपने लोगों से निवेदन करते रहने बाद, परमेश्वर का धीरज अंतत: अनुशासनन में बदल जाता है, ठीक वैसे ही जैसे उसने प्रतिज्ञा की थी।

इसलिये कि मूल रूप से दोनों पुस्तके एक ही थी, 1 और 2 राजाओं के मुख्य विषय और उद्देश्य भी एक ही हैं। वे हमें सिखाती हैं कि किस प्रकार विश्वासघात (परमेश्वर की व्यवस्था को न मानना और प्रतिरोध करना) के कारण परमेश्वर का अनुशासन आना ही चाहिये और राष्ट्र का पराभव होना ही चाहिये। ये दोनों राज्य ढह गए, क्योंकि उनके राजा धार्मिकता से राज्य करने में और परमेश्वर की सच्चाई पर ध्यान देने में असफल हुये थे।

मुख्य शब्द: मुख्य शब्द जो विषय-वस्तु का वर्णन करता है वह बिखराव या बन्धुआई हैं।

मुख्य विचार - ***परिणाम:*** इस्राएल और यहूदा के लोगों का विभाजन हो जाना और बिखर जाना इस बात की गंभीर चेतावनी है कि परमेश्वर कितना भी प्रेम करना चाहे, चंगा करना और क्षमा करना चाहे, एक समय ऐसा आता ही है जब वह अपने लोगों को उनके चुनावों का प्रतिफल भुगतने के लिए छोड़ देता है। अनेक बार दी गई चेतावनियों पर लोगों ने ध्यान नहीं दिया; और अंतत: उनके विद्रोह का मुख्य परिणाम यह हुआ कि उन की भलाई और सुरक्षा करने वाला परमेश्वर का हाथ खींच लिया गया। परमेश्वर कि आशीष के बिना ये लोग अपने से ज्यादा ताकतवार पड़ोसियों के आक्रमण के शिकार बन गए। यह बात याद रखना आवश्यक है कि यह वास्तव में लोगों के द्वारा ही किया गया चुनाव था, परमेश्वर का नहीं; जो उन्होंने जो बोया था वही उन्हें काटना पड़ा (गलातियों 6:7-9)।

मुख्य अध्याय: इस श्रेणी में अनेक अध्याय आते हैं: अध्याय 2 – एलिय्याह स्वर्ग में उठा लिया गया; अध्याय 4 – एलीशा का विधवा के लिए किया गया आश्चर्य कर्म; अध्याय 5 – नामान कोढ़ी का चंगा हो जाना, और गेहजी की लालच; अध्याय 6 – एलीशा की अपने सेवक के लिए प्रार्थना और अराम को जीत लेना; अध्याय 17 – इस्त्राएलियों का हार जाना और अश्शूरियों के द्वारा बंदी बना लिया जाना (722 ई.पू.); अध्याय 18 और 19 – सन्हेरीब द्वारा यहूदा पर आक्रमण और हिजकिय्याह की प्रार्थना; अध्याय 22 और 23 – योशिय्याह के द्वारा धार्मिक जागृति, सुधार और नवीनीकरण; अध्याय 24 और 25 – यहूदा का बेबीलोन के द्वारा हार जाना (587 ई.पू)।

मुख्य पद: 23:27

मुख्य व्यक्ति: एलिय्याह, एलीशा, योशिय्याह, नामान, हिजकिय्याह

2 राजा में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: एलिय्याह, मसीह के अग्रदूत यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का पूर्वाभास देता है (मत्ती 11:14, 17:10-12, लूका 1:17), और एलीशा अनेक तरीकों से हमें यीशु मसीह के कार्यों को स्मरण कराता है।

रूपरेखा :

1. विभाजित राज्य (1:1 से 17:41)
2. यहूदा का शेष बचा हुआ राज्य (18:1 से 23:30)

पहला इतिहास - परमेश्वर की वाचा के लोग

लेखकः इतिहास की पुस्तक (मूल रूप से 1 इतिहास और 2 इतिहास एक ही पुस्तक थी) अपने लेखक की पहचान नहीं देती है, परंतु यहूदी परम्परा के अनुसार एज्रा को इस पुस्तक का लेखक माना जाता है। इस पुस्तक के आरम्भ से लेकर अंत तक, जिस प्रकार से इसकी रचना की गई है, यह स्पष्ट दिखाई देता है कि जबकि विभिन्न स्रोतों का उपयोग करते हुये इसका संकलन किया गया है परंतु एक ही संपादक ने इसे अंतिम रूप दिया।

समयः 450-425 ईसा पूर्व

पुस्तक का नामः जबकि 1 और 2 इतिहास यहूदी इतिहास के उसी समान समय को समाविष्ट करते हैं, जो 1 और 2 राजाओं का है, फिर भी उनका लिखने का दृष्टिकोण बिल्कुल ही भिन्न है। अतः विषय वस्तु तो सामान है, परन्तु यह मात्र दोहराव नहीं है, परंतु यह इस्राएल के लोगों के इतिहास का आत्मिक सम्पादकीय लेख है।

1 और 2 राजाओं की पुस्तकें मनुष्य के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती हैं, जबकि इतिहास की पुस्तकें परमेश्वर के दृष्टिकोण से लिखी गई है। राजाओं की पुस्तक में राष्ट्र का इतिहास सिंहासन से बताया गया है; इतिहास की पुस्तकों में यह वेदी से बताया गया है। राजाओं में राजमहल केन्द्र है; इतिहास की पुस्तकों में मंदिर केंद्र है। राजाओं में राजनैतिक इतिहास है, इतिहास की पुस्तकों में धार्मिक इतिहास है।

मुख्य विषय और उद्देश्यः पहला इतिहास की पुस्तक इतिहास की रूपरेखा को आदम से आरंभ करते हुये पूरी शाऊल की मृत्यु तक बताती है। शेष पुस्तक राजा दाऊद के शासन के विषय में है। इतिहास की पुस्तकों में लगता है कि 1 और 2 शमूएल और 1 और 2 राजाओं के भागों को दोहराया गया है, परंतु वे इसलिये लिखी गई थीं कि निर्वासन के बाद वापस लौटे हुओं को स्मरण दिलाया जाये कि वे दाऊद के राजवंश से हैं और परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं। वंशावलियां संकेत करती हैं कि दाऊद से की गई प्रतिज्ञाओं का मूल उन प्रतिज्ञाओं में है जो अब्राहम से की गई थीं, कि परमेश्वर उसे एक बड़े राष्ट्र का पिता बनायेगा, ऐसे राष्ट्र का जिसके द्वारा परमेश्वर सब जातियों को आशीष देगा। मुख्य विषय यह है कि परमेश्वर अपनी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य है।

मुख्य शब्दः मुख्य शब्द हैं दाऊद (183 बार) और दाऊदीय वाचा।

मुख्य विचार - ***विश्वासयोग्यताः*** परमेश्वर, 'वाचा-पूरी-करने-वाला-परमेश्वर' है। मनुष्यों के नियम के अनुसार जब एक पक्ष समझौते (वाचा) को तोड़ देता है तो दूसरा पक्ष इस समझौते से बंधे रहने के लिये विवश नहीं होता है। परमेश्वर इसमें अपनी महान विश्वासयोग्यता को प्रकट करता है कि, जबकि दाऊद और यहूदी जाति ने अनेक बार परमेश्वर के साथ बांधी गई वाचा का उल्लंघन किया, तौभी परमेश्वर उस समझौते में के अपने पक्ष को लगातार निभाता रहा। परमेश्वर की यह विश्वासयोग्यता हमें उसकी उच्च नैतिकता की और उस भलाई की शिक्षा देती है जो किसी भी मनुष्य की तुलना में उत्कृष्ठ है। व्यवस्थाविवरण 7:9 घोषणा करता है: "यह विश्वासयोग्य ईश्वर है; जो उससे प्रेम रखते और उसकी आज्ञाएं मानते हैं उनके साथ वह

हजार पीढ़ी तक अपनी वाचा का पालन करता, और उन पर करुणा करता रहता है।"

मुख्य अध्याय : मसीह के व्यक्तित्व के महत्व के कारण अध्याय 17 केंद्रीय और मुख्य है, क्योंकि यह 1 शमूएल 7 की तरह दाऊदीय वाचा को प्रगट करता है।

मुख्य पद: 11:1-3; 17:11; 29:11-12

मुख्य लोग: जैसा कि बताया गया है, यह पुस्तक दाऊद के विषय में है, जबकि अन्य लोग जो 1 शमूएल में प्रमुख थे वे इस पुस्तक में भी महत्वपूर्ण हैं, जैसे कि, नातान, बतशेबा और ऊरिय्याह।

1 इतिहास में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: 1 और 2 शमूएल की पुस्तकों में जो कुछ भी दाऊद के लिए मसीह के चित्रण के रूप में कहा गया था, वह इस पुस्तक में भी प्रकट हुआ है।

रूपरेखा :

1. आदम से लेकर दाऊद तक की पीढ़ियाँ (1:1-9:44)
2. दाऊद का उत्थान और अभिषेक (10:1-12:40)
3. दाऊद का शासन (13:1-29:21)
4. सुलैमान का राज्याभिषेक और दाऊद की मृत्यु (29:22-30)

दूसरा इतिहास - मंदिर का निर्माण और उसका तोड़ दिया जाना

लेखक: जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि मूल रूप में 1 और 2 इतिहास एक ही पुस्तक थी। 1 इतिहास की पुस्तक में नहीं बताया गया है कि इसे किसने लिखा, परंतु यहूदी परम्परा में एज्रा को इसका लेखक माना गया है। दोनों पुस्तकों मे के दृष्टिकोण और लिखने के ढंग का सामंजस्य दर्शाता है यह किसी एक ही व्यक्ति का कार्य है, जिसे लेखकों के द्वारा कभी-कभी *इतिहासकार* कहा गया है।

समय: 450 से 425 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: देखिए 1 इतिहास की टिप्पणी।

मुख्य विषय और उद्देश्य: जबकि 1 इतिहास का वृत्तांत 1 और 2 शमूएल के समरूप है, वैसे ही 2 इतिहास की पुस्तक दाऊद की पीढ़ियों का इतिहास बताते हुए 1 और 2 राजाओं के समानान्तर चलती है। तथापि सभी प्रायोगिक उद्देश्यों के लिए यह उत्तरी राज्य की ओर ध्यान नहीं देती जिसका कारण उनका धर्मत्याग और उसमें ऐसे किसी भी धार्मिक राजा का ना होना जिसका जीवन दाऊद के नमूने के अनुसार होता।

मुख्य शब्द: यहोवा के भवन और याजक (याजकों) का उल्लेख बार-बार हुआ है। इस कारण, विषय की धारणा के अनुसार मुख्य शब्द "यहूदा का याजकीय दृष्टिकोण" है।

मुख्य विचार - *नेतृत्व:* बिना किसी अपवाद के, लोगों का परमेश्वर के पीछे चलने का समर्पण बिलकुल वैसा ही था जैसा उनके राजा का था। यदि राजा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होता था तो वैसे ही लोग भी होते थे। यदि राजा दुष्ट था और उसने परमेश्वर को त्याग दिया, तो लोगों ने भी वैसा ही किया। लागूकरण एकदम स्पष्ट है: जो लोग कलीसिया में नेतृत्व करने के लिए बुलाए गए हैं, उन्हें अपने ऊपर की बड़ी जिम्मेवारी को समझना अवश्य है, जो न मात्र विश्वासयोग्यता से उपदेश देने की और सिखाने की है परंतु परमेश्वर के नियम के अनुसार विश्वासयोग्यता से जीवन जीने की भी है। यही कारण है कि यीशु ने सिखाया है, "जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा; और जिसे बहुत सौंपा गया है, उससे बहुत लिया जाएगा" (लूका 12:47-48)।

मुख्य अध्याय: वे अध्याय मुख्य हैं जिनमें अच्छे राजाओं के द्वारा किये गये सुधार हैं, क्योंकि वे 7:14 की प्रतिज्ञा का उदाहरण देते हैं। विशेष रूप से अध्याय 34 देखिए, और देखिये योशिय्याह के नेतृत्व में किये गये वे सुधार जब व्यवस्था की पुस्तक पायी गई, पढ़ी गई और पालन की गई।

मुख्य पद: 7:14; 16:9

मुख्य लोग: योशिय्याह, रहूबियाम, सुलैमान

2 इतिहास में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: दाऊद की राजगद्दी/सिंहासन नष्ट हो चुका है, परंतु दाऊद का वंश बना रहता है। हत्याएं, विश्वासघात, युद्ध और बंधुआई सब उस वंश के लिये खतरा बने जिसमें मसीह आने वाला था; परंतु वह आदम से लेकर जरूब्बाबेल तक साफ और सुरक्षित बना रहा। इसकी पूर्णता मसीह में हुई है इसे मत्ती 1 और लूका 3 में दी गई वंशावलियों में देखा जा सकता है।

2 इतिहास में मंदिर जो इतना महत्वपूर्ण है वह मसीह का बहुत ही सुंदर चित्रण है (देखिए मत्ती 12:6; यूहन्ना 2:19, और प्रकाशितवाक्य 21:22)।

रूपरेखा :

1. सुलैमान का राज्य (1:1-9:31)
2. यहूदा के राजा (10:1-36:21)
3. राजा कुस्त्रु का आदेश (36:22-23)

एज्रा - मंदिर का पुनर्निर्माण और लोगों की पुन:स्थापना

लेखक: जबकि एज्रा की पुस्तक अपने लेखक का नाम नहीं बताती, परंतु यहूदी परम्परा, इतिहास और नहेम्याह की पुस्तकों के साथ-साथ, इसका लेखक भी एज्रा को ही मानती है।

समय: एज्रा ने 457 ईसा पूर्व और 444 ईसा पूर्व के बीच इसे लिखा।

पुस्तक का नाम: प्राचीन इब्रानी बाइबल में एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकों को एक पुस्तक माना जाता था और उसे "एज्रा की पुस्तक" कहा जाता था। आधुनिक इब्रानी बाइबल में इन्हें एज्रा और नहेम्याह कहकर अलग-अलग रखा गया है जैसे कि हमारी बाइबल में है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: एज्रा की पुस्तक का स्थान गुलामी के बाद लिखी गई पुस्तकों (एज्रा, नहेम्याह, एस्तर, हाग्गै, जकर्याह, और मलाकी) में पहला है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से एज्रा उस वृत्तांत को आगे बताती है जो 2 इतिहास में समाप्त हुआ था, और यह यहूदियों के बेबीलोन से वापस आने के इतिहास को और मंदिर के पुनर्निर्माण को बताती है।

आत्मिक और सैद्धांतिक दृष्टिकोण से, एज्रा की पुस्तक बताती है कि किस प्रकार परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को पूरी करते हुए अपने लोगों को देश निष्कासन के 70 वर्षों बाद वापस प्रतिज्ञा किए हुए देश में लौटा लाता है, जैसा कि भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बताया गया था।

सारांश में कहा जा सकता है कि इसका मूल-विषय, बचे हुये लोग जो जरूब्बाबेल और एज्रा के नेतृत्व में यरूशलेम और उसके आसपास के क्षेत्रों में वापस लौटे थे उनकी आत्मिक, नैतिक और सामाजिक पुन:स्थापना है।

मुख्य विचार - ***पुन:स्थापना:*** परमेश्वर न मात्र पापों को क्षमा करने तैयार है--परंतु वह हमें हमारी गिरी हुई अवस्था से उठाकर आशीष के स्थान में वापस लाने की इच्छा भी रखता है। यह यात्रा बिना इसकी कठिनाईयों के नहीं होती है, जैसा कि एज्रा और नहेम्याह की पुस्तकों में दिखाई देता है। लोगों को बहुत काम करना था, और उनके लिये आवश्यक था कि वे परमेश्वर को दिखाये कि उनका पश्चाताप सच्चा है और परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करना यह उनकी स्वयं की इच्छा है। तथापि यह बात ध्यान देने के लिये प्रोत्साहनात्मक है कि परमेश्वर ने लोगों को न मात्र क्षमा किया, परंतु उसने, लोगों के द्वारा मंदिर का पुनर्निर्माण होने देने के द्वारा, उनके लिये उस मार्ग को पुन:स्थापित किया जिससे वे उसकी निकटतम् संगति में बने रहेंगे।

मुख्य शब्द: पुस्तक के मुख्य विषय को देखते हुए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि इसके दो मुख्य शब्द "यरूशलेम" (48 बार) और "मंदिर" (25 बार) है।

मुख्य अध्याय: मुख्य अध्यायों में ये सम्मिलित हैं -

(1) कुस्त्रु का आदेश: जिसमें उसने बचे हुए लोगों को वापस लौटने की अनुमति दी है, अध्याय 1

(2) मंदिर की नींव बनकर पूर्ण हुई, अध्याय 3

(3) मंदिर का निर्माण पूरा होना और समर्पण और फसह का पर्व मनाया जाना, अध्याय 6

(4) एज्रा के नेतृत्व में वापसी और उसकी प्रार्थना, अध्याय 7-9

मुख्य पद: 1:3, 2:1; 6:21-22; 7:10

मुख्य लोग: कुस्त्रू (फारस का राजा जिसने "वापस लौटने की अनुमति" का आदेश निकाला), एज्रा (याजक और लेखक); येशू (महायाजक) और जरूब्बाबेल

एज्रा में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: एज्रा और नहेम्याह दिखाते है कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने लोगों को उनके देश में पुन:स्थापित करने के द्वारा दाऊदीय वाचा को और उन प्रतिज्ञाओं को पूरा किया जो उसने दाऊद की संतान कहलाये गये मसीह के आने के लिये, दाऊद के वंश को बनाये रखने के लिये, की थीं।

रूपरेखा :

1. पुन:स्थापन: जरूब्बाबेल के नेतृत्व में यरूशलेम को पहली वापसी (अध्याय 1-6)
2. लोगों का सुधार; एज्रा के नेतृत्व में वापसी (अध्याय 7-10)

नहेम्याह - यरूशलेम की शहपनाह का पूनर्निर्माण

लेखक: इस पुस्तक का लेखक निसंदेह स्वयं नहेम्याह था। इस पुस्तक के कुछ भाग प्रथम पुरुषवाचक रूप में लिखे गये हैं (अध्याय 1-7; 12:27-47; और अध्याय 13)। परंतु इस पुस्तक के कुछ भाग ऐसे भी हैं जिसमें नहेम्याह को तृतीय पुरुष के रूप में लिखा गया है (अध्याय 8,9,10)। ऐसा माना गया है कि ये भाग एज्रा के द्वारा लिखे गए होंगे; तथापि इस बात का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन भागों को इस पुस्तक में दिये स्थान, नहेम्याह के ही द्वारा ही निश्चित किए गए होंगे। वह स्वयं ही, कुछ अध्यायों को छोड़कर (अध्याय 12:11,22,23), इस पूरी पुस्तक को लिखने का जिम्मेदार था।।

समय: 445 ईसा पूर्व से 425 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: नहेम्याह नाम का अर्थ "यहोवा सांत्वना देता है या शांति देता है" है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: नहेम्याह की पुस्तक निर्वासन के बाद वापस आये हुये यहूदियों का इतिहास आगे जारी रखती है। नहेम्याह ने फारस के राजा अर्तक्षत्र का पियाऊ होने का पद छोड़ दिया था ताकि यरूशलेम का राज्यपाल बने और नगर की शहरपनाह का पुनर्निर्माण करने में लोगों की अगुवाई करे।

नहेम्याह की पुस्तक यह दिखाने के लिए लिखी गई थी कि निर्वासन के बाद के वर्षों में, अपने लोगों को उनके अपने देश में स्थापित करने में स्पष्ट रूप से परमेश्वर का ही हाथ था। नहेम्याह के नेतृत्व में उन लोगों ने उस काम को 52 दिनों में पूरा कर दिया जो वे पहली बार जरूब्बाबेल के साथ लौटने के बाद से लेकर आगे के 94 वर्षों में नहीं कर पाये थे। आज्ञाकारी विश्वास के द्वारा वे उस विरोध पर विजयी होने में सक्षम हुये जो परास्त न किया जा सकने वाला लगता था।

मुख्य शब्द: दीवारों के पुनर्निर्माण को ध्यान में रखते हुये मुख्य घटक, मुख्य शब्द "शहरपनाह," जो लगभग 33 बार आया है, और "बनाया," "बनाए," "बनाने लगे" और "बनाएंगे" इत्यादि शब्द हैं जो लगभग 20 से भी अधिक बार उपयोग में आये हैं।

मुख्य विचार - *विजय पाना:* जब कभी परमेश्वर के लोग परमेश्वर का कार्य करना प्रारंभ करते हैं, विरोध आयेगा ही! यहूदियों के शत्रुओं के पास विशिष्ट युक्तियाँ थीं कि जो लोग यरूशलेम की शहरपनाह बना रहे थे उन्हें धोखा दे, उनमें फूट डाले, और उन्हें हतोत्साहित करें। नहेम्याह के प्रबल नेतृत्व का प्रभाव हुआ था, परंतु उसके साथ ही लोगों के दृढ़ निश्चय का भी प्रभाव था कि प्रत्येक जन एक समूह का सदस्य होकर निर्माणकार्य करेगा, जो कार्य सौंपा गया उसे स्वीकार करते हुये, और जब कभी शत्रुओं के द्वारा आक्रमण होंगे तब दूसरे की सहायता करने के लिये शीघ्रता से दौड़ेगा। प्रेरित यूहन्ना ने इस बात की पुष्टि की है कि मसीही लोग विजयी होते हैं, जब उसने लिखा, "क्योंकि जो कुछ परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह संसार पर जय प्राप्त करता है; और वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है" (1 यूहन्ना 5:4)।

मुख्य अध्याय: मुख्य अध्यायों में निम्नलिखित आयेंगे:

1. नहेम्याह की प्रार्थना और परमेश्वर का उत्तर, अध्याय 1-2,
2. शहरपनाह को बनाने का काम, विरोध, और कार्य का पूर्ण होना, अध्याय 3-7

3. लोगों का अपने पाप का अंगीकार करना और वाचा को पुनः बांधना, अध्याय 9

मुख्य पदः 4:6; 6:15-16, 8:8

मुख्य व्यक्तिः नहेम्याह, अर्तक्षत्र, सम्बल्लत, एज्रा

नहेम्याह में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गयाः नहेम्याह निश्चय ही इस बात में मसीह का चित्रण प्रस्तुत करता है कि उसने पुनःस्थापना के कार्य को करने के लिए स्वेच्छा से अपनी उच्च पदवी को छोड़ दिया था।

रूपरेखा -

1. यरूशलेम की ओर यात्रा (अध्याय 1-2)
2. शहरपनाह का निर्माण (अध्याय 3-6)
3. जन गणना (अध्याय 7)
4. पुनर्जागरण (अध्याय 8-11)
5. याजको और लेवियों की गणना (अध्याय 12:1-27)
6. शहरपनाह का अर्पण (अध्याय 12:27-43)
7. मंदिर में उपासना का पुनः आरम्भ (अध्याय 12:44-47)

एस्तेर - परमेश्वर के लोगों की रक्षा

लेखक: इस पुस्तक को किसने लिखा इसका कोई भी इशारा यह पुस्तक नहीं देती। तथापि, वह जो कोई भी रहा हो, वह फारस की संस्कृति को बहुत अच्छे से जानता था। वृत्तांत के लेखन में वे सारे संकेत मिलते हैं कि वह लेखक वहां उपस्थित था, क्योंकि वह उन घटनाओं का आंखों देखा हाल बताता है, और संभवत: वह यहूदी था।

समय: एस्तेर की पुस्तक, राजा क्षयर्ष के शासनकाल के पीछले समय के दौरान (देखिए 10:2-3), या उसके पुत्र अर्तक्षत्र के शासन काल के समय (464-424 ईसा पूर्व), लगभग 470 और 465 ईसा पूर्व के बीच लिखी गई।

पुस्तक का नाम: पुस्तक को अपना नाम इसके मुख्य पात्र के आधार पर मिला है, जिसका इब्रानी नाम *हदस्सा* (अर्थात् "मेहंदी का पेड़") था जो बाद में फारसी नाम *एस्तेर* में बदल दिया गया था जिसे कुछ लोग समझते हैं कि यह "सितारा" के लिये उपयुक्त फारसी शब्द से निकलता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: यह अधिकांश रूप में ऐतिहासिक पुस्तक है। इसकी एक अनोखी बात यह है कि आरम्भ से लेकर अंत तक इसमें परमेश्वर का नाम किसी भी रूप में नहीं आता है। जबकि परमेश्वर का नाम इस पुस्तक में लिखा हुआ नहीं मिलता, तौभी इस पुस्तक का मूल विषय और उद्देश्य परमेश्वर के द्वारा अपने लोगों के लिये उपलब्ध करायी जाने वाली उस ईश्वरीय देखभाल को प्रमाणित कराना है जो वह उनकी परीक्षाओं और सताव के समय में करता है।

एस्तेर की पुस्तक एक सुंदर यहूदी लड़की की कहानी बताती है, जिसे फारस के राजा क्षयर्ष ने अपनी रानी बनाने के लिए चुना। जब हामान ने सारे यहूदियों की हत्या करने की योजना बनाई, तब रानी एस्तेर के चाचा मोर्दकै ने एस्तेर को अपने लोगों की रक्षा करने का प्रयत्न करने के लिए उभारा। अपना स्वयं का जीवन खतरे में डालते हुए, रानी एस्तेर ने राजा से निवेदन किया और यहूदियों को छुटकारा दिलाया।

मुख्य शब्द: मुख्य शब्द "यहूदी" है जो 44 बार उपयोग हुआ है।

मुख्य विचार - *ईश्वरीय रक्षा:* कई बार यहूदी इतिहास बहुत ही अस्तव्यस्त लगता है; पात्र उभरते हैं और शीघ्र ही चले जाते हैं, उनका उभरना और गिरना ऐसे होता है जैसे कि वह कभी-कभी संयोग मात्र ही लगता है। एस्तेर का एक मुख्य संदेश इस बात का उदाहरण देना है कि परमेश्वर, अपनी ईश्वरीय रक्षा के अंतर्गत, कभी-कभी लोगों को किन्हीं परिस्थितियों में जानबूझकर रखता है ताकि वह अपनी इच्छा को पूरा करे। यही शिक्षा मोर्दकै एस्तेर को सिखाता है जब वह उसे अपने स्वाभाविक भय पर जय प्राप्त करने का आग्रह करता है, यह कहते हुये कि, "क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिए राजपद मिल गया हो?" (4:14)।

मुख्य अध्याय: मुख्य अध्यायों में ये आयेंगे:

1. अध्याय 3 - हामान, क्षयर्ष को यहूदियों को मरवा डालने का आदेश देने के लिए उकसाता है।
2. अध्याय 6 - मोर्दकै का सम्मान।

3. अध्याय 9 – यहूदी लोग अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं।

इस पुस्तक की सारी घटनाएं तीन जेवनारों (भोज) के ईर्दगिर्द घूमती हैं:

1. फारस के राजा क्षयर्ष का भोज – इसमें वश्ती को पटरानी पद से हटाया गया और मोर्दकै को अवसर मिला कि एस्तेर, जो उसके संरक्षण में पत्नी एक अनाथ युवती थी, को राजा क्षयर्ष के महल में प्रस्तुत करे कि वह रानी बनाई जाए (अध्याय 1 तथा 2)।
2. एस्तेर का भोज – जब यहूदियों के शत्रु हामान का भेद खुल गया तथा उसे मृत्युदंड मिला और मौर्दकै की पदोन्नति हुई (अध्याय 7)।
3. पूरीम का भोज (पर्व) – जिसे यहूदियों के एक भयावह संकट से छुटकारे के उत्सव के रूप में मनाया गया (अध्याय 9)।

मुख्य पद: 4:14; 8:17

मुख्य लोग: एस्तेर, हामान, मोर्दके, क्षयर्ष

एस्तेर में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: एस्तेर मसीह का एक उपयुक्त चित्रण प्रस्तुत करती है जिसमें वह अपने लोगों के उद्धार के लिए स्वयं को मृत्यु के हवाले करने के लिये भी तैयार थी, और इस में भी कि उसने अपने लोगों के लिए मध्यस्थ का काम किया। इसके साथ ही हम देखते हैं कि परमेश्वर कैसे यहूदी लोगों की ईश्वरीय तरीके से रक्षा करता रहा जिनके माध्यम से वह मसीह को लाने वाला था।

रूपरेखा –

1. वश्ती की कहानी (अध्याय 1)
2. एस्तेर रानी बनायी गई (अध्याय 2)
3. हामान का षड्यन्त्र (अध्याय 4–7)
4. एस्तेर के साहस के द्वारा छुटकारा (अध्याय 4–7)
5. बदला (अध्याय 8–9:19)
6. पूरीम का पर्व (अध्याय 9:20–32)
7. उपसंहार (अध्याय 10:1–3)

भाग 3 - काव्य की पुस्तकें

पिछले पाठों में, पहली 17 पुस्तकों के सर्वेक्षण में, उत्पत्ति से नहेम्याह तक के पुराना नियम की व्यवस्था और इतिहास को पूरा कर लिया है। बाकी बची हुई सारी पुस्तकें, जैसे काव्य की पुस्तकें और भविष्यवाणी की पुस्तकें, उन्हीं 17 पुस्तकों में मिलने वाले इतिहास के समय में कहीं ना कहीं फिट होती हैं।

जो अगला भाग हमें देखना है, काव्य की पुस्तकें, वह बहुत छोटा भाग है जिसमें पाँच पुस्तकें आती हैं: अय्यूब; भजन संहिता, नीतिवचन; सभोपदेशक; श्रेष्ठगीत

उनका परीक्षण करने के पहले, हम उन गुणों पर ध्यान देंगे जो पाँचों पुस्तकों में पाए जाते हैं।

- ये पाँच काव्य की पुस्तकें *अनुभवकारी* हैं।
- ये पाँच काव्य की पुस्तकें *व्यक्तिगत* रीति से संबंधित है।
- ये पाँच काव्य की पुस्तकें *मनुष्य के हृदय* से संबंधित है।
- ये पाँच पुस्तकें, जिन्हें "काव्य की पुस्तकें" कहा गया है, वे ही मात्र बाइबल के पुराना नियम का काव्य नहीं है। भविष्यद्वक्ताओं के लेखन में भी काव्य के हिस्से हैं।

हमें यह भी स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि "काव्य" यह शब्द मात्र उनके प्रकार को बताता है। यह कभी नहीं सोचा जाना चाहिए कि ये कविताएं मात्र मनुष्य की कोरी कल्पनाओं का उत्पाद है।

ये पुस्तकें मनुष्य के वास्तविक अनुभव का चित्रण करती है, जिसमें गंभीर/अति गंभीर समस्याओं को और बड़ी वास्तविकताओं को व्यक्त करता है। इसके साथ ही, उनका संबंध विशेष रूप से धर्मी जन के अनुभवों से है, जो इस जीवन के उतार-चढ़ाव में होते हैं, जिनमें प्राय: परिवर्तन दिखाया गया है।

काव्य की पुस्तकों में मसीह-केंद्रीत अभिलाषाएं (उत्कण्ठ इच्छाएं) दिखाई देती हैं:

1. अय्यूब -- मसीह के द्वारा *मध्यस्थता* की अभिलाषा
2. भजन संहिता -- मसीह के *संगति* की अभिलाषा
3. नीतिवचन -- मसीह में प्राप्त *बुद्धिमत्ता* की अभिलाषा
4. सभोपदेशक -- *अंतिम संतुष्टि* की अभिलाषा
5. श्रेष्ठगीत - मसीह के *प्रेम में बंधे रहने* की अभिलाषा

काव्य की पुस्तकों के विशिष्ट विषय ये हैं:

1. अय्यूब की पुस्तक - *दु:ख सहन* करने के द्वारा *आशीष*
2. भजन संहिता - *प्रार्थना* के द्वारा *आराधना*
3. नीति वचन - *उपदेश* के द्वारा *विवेक (बुद्धिमता)*
4. सभोपदेशक - *व्यर्थता* के द्वारा *यथार्थता*
5. श्रेष्ठगीत - *मिलन* के द्वारा *परमानंद*

अय्यूब - दु:ख सहन करने के द्वारा आशीष

लेखक: अय्यूब एक ऐतिहासिक व्यक्ति था, (यहेज. 14:14; 20, याकूब 5:11)। इसका लेखक अज्ञात है, और लेखक की पहचान के लिए इसकी विषय-वस्तु में कोई दावा प्रस्तुत नहीं है। टीकाकारों ने सुझाव दिये हैं कि इसका लेखक स्वयं अय्यूब, मूसा, सुलैमान, या अन्य कोई है।

समय: यह पुस्तक शायद बाइबल की सब से पुरानी पुस्तक है।

इसमें लिखित घटनायें संभवत: पितृसत्तात्मक समाज के दिनों में, 2000 ईसा पूर्व, अब्राहम के समय के आसपास घटित हुई होंगी। समय के इस निर्धारण को सही सिद्ध करने के लिए इस पुस्तक में से ही बहुत से तथ्य सहायक ठहरते हैं: (1) अय्यूब 140 वर्षों से भी अधिक समय तक जीवित रहा (42:16), यह पितृसत्तात्मक समाज के समय में असाधारण बात नहीं थी। (2) अय्यूब के दिनों में आर्थिक स्थिति, जिसमें सम्पत्ति को जानवरों की संख्या के द्वारा नापा जाना उन दिनों की प्रथा थी (1:3)। (3) अब्राहम, इसहाक और याकूब के समान, अय्यूब अपने परिवार का याजक था (1:5)। इसमें इस्राएल राष्ट्र या मूसा की व्यवस्था से संबंधित कोई भी हवाला नहीं मिलता, यह तथ्य प्रगट करता है कि यह मूसा (1500 ईसा पूर्व) के पहले का समय होगा।

पुस्तक का नाम: पुस्तक का नाम इसके मुख्य चरित्र, अय्यूब नामक पुरुष के नाम से दिया गया है, जो बहुत ही कठिन दु:ख (संपत्ति, परिवार और स्वास्थ्य का विनाश) सह रहा था और इस प्रश्न से संघर्ष कर रहा था कि ये सारी पीड़ायें उसे क्यों सहनी पड़ी हैं।

मुख्य विषय और उद्देश्य: दु:ख और दुष्टता के अस्तित्व के समक्ष यह पुस्तक परमेश्वर की भलाई, न्याय और संप्रभुता का प्रमाण है। यह सदियों पुराने प्रश्न से जूझती है: "यदि परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है तो धर्मी मनुष्य क्यों दु:ख भोगता है?" यह परमेश्वर की संप्रभुता को सिखाती है और यह भी सिखाती कि मनुष्य को इसे पहचानने की आवश्यकता है। अय्यूब के तीनों मित्रों ने उसके प्रश्न का उत्तर देने के कमजोर प्रयासों में वास्तव में एक समान तत्वज्ञान को प्रस्तुत किया था: सब दु:ख पाप के कारण है। तथापि, एलीहू ने बताया कि दु:ख प्राय: धर्मी मनुष्य को शुद्ध करने के लिये होता है।

परमेश्वर का उद्देश्य था कि अय्यूब की सारी आत्म-धार्मिकता को उखाड़ दिया जाए और उसे ऐसे स्थान पर लाया जाए जहाँ वह पूर्ण विश्वास के बल पर खड़ा हो। दु:ख सहन करने के प्रश्न का उत्तर इस पुस्तक में तिहरे रूप में दिया गया है -

1. परमेश्वर हमें जो आशीषें देता है उनके ना होने पर भी वह इस योग्य है कि उसे प्रेम किया जाये।
2. परमेश्वर दु:ख को प्राय: आत्मा को शुद्ध करने के, और ईश्वरीय गुणों में सुदृढ़ करने के साधन के रूप में आने की अनुमति देता है।
3. परमेश्वर के विचार और तरीके ऐसे सोच-विचारों से संचालित होते हैं जो मनुष्य की छोटी समझ से समझने के लिये बहुत ज्यादा विशाल होते हैं। जबकि मनुष्य, जीवन की समस्याओं को सर्वशक्तिमान के जैसी व्यापकता और दृष्टि से सही रीति से समझने-बूझने के लिये असमर्थ है, परमेश्वर जानता है कि उसकी अपनी महिमा के लिये और हमारी अंतिम भलाई के लिये क्या सर्वोत्तम है।

अगला उद्देश्य निश्चित ही यह है कि युगों से परमेश्वर और शैतान के बीच चला आ रहा संघर्ष दिखाया जाये, और उस संघर्ष से दु:ख का संबंध भी दिखाया जाये। अंत में यह पुस्तक रोमियों 8:28 की सच्चाई को प्रगट करती है।

मुख्य शब्द: मुख्य शब्द "दु:ख, क्लेश, कष्ट" इत्यादि 9 बार आये हैं; "धर्मी" या उसके पर्यायवाची 20 बार आये हैं, परंतु मुख्य सिद्धांत परमेश्वर की संप्रभुता है।

मुख्य विचार - ***धीरज:*** अय्यूब की पत्नी ने उससे आग्रह किया, "परमेश्वर की निन्दा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा" (2:9)। अपनी परिस्थितियों के कारण अय्यूब गंभीर रूप से परखा गया था कि अपने प्रिय परमेश्वर में रखा गया अपना विश्वास छोड़ दे। अपनी संपत्ति के नाश हो जाने से आर्थिक कष्ट और अपने बच्चों की मृत्यु से हुये भावनात्मक दर्द के अतिरिक्त वह अपने शरीर में भी पीड़ित कर दिया गया था। तौभी उसने उस बड़े कष्ट को सहन किया: अय्यूब ने अपने परमेश्वर को छोड़ देना अस्वीकार किया, इसलिये परमेश्वर ने भी उसे नही छोड़ा। यह पुस्तक उन पुस्तकों में से एक है जो पौलुस के मन में रही होगी जब उसने रोमियों 15:4 लिखा, "जितनी बातें पहले से लिखी गई, वे हमारी शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन के द्वारा आशा रखें।"

मुख्य अध्याय: अध्याय 1-2 इस बात में मुख्य हैं कि वे पाठकों को अय्यूब के दु:ख-कष्टों के कारण से परिचित करवाते हैं--शैतान का अय्यूब पर दोषारोपण करना और सब विपत्तियों को लाना। अगले मुख्य अध्याय हैं 38-41, परमेश्वर के द्वारा उत्तर दिया जाना और अय्यूब को चुप करा दिया जाना, जिसके बाद अय्यूब ने पश्चाताप किया और परमेश्वर ने उसका दु:ख दूर किया (अध्याय 42)।

मुख्य पद: 2:3-6; 13:15; 42:5-6, 42:10

मुख्य लोग: अय्यूब - खरा और सीधा मनुष्य; शैतान; अय्यूब के मित्र (जिन्होंने कभी-कभी उस पर दोष भी लगाये)--एलीपज, बिलदाद, सोपर और एलीहू जो छोटा और बुद्धिमान मित्र था जिसने अय्यूब को समझाने का प्रयत्न किया।

अय्यूब में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: अय्यूब एक "छुड़ाने वाले" की आवश्यकता स्वीकार करता है (19:25-27) और एक बिचवई (मध्यस्थ) की मांग करता है (9:33; 33:23)। वह जानता है कि उसे एक ऐसे किसी की आवश्यकता है जो "दु:ख सहन" के रहस्य को समझा सकता है। इसका उत्तर मात्र मसीह में मिलता है। मसीह हमारे दु:ख सहन से मेल खाता है और अंत में ये दोनों बातें करता है कि शैतान के दोषारोपण का उत्तर देता हैं और उसे हरा भी देता हैं (इब्रा. 2:14-18; 4:15, रोम 8:32-34)।

रूपरेखा :

1. प्राक्कथन: विपत्तियां - (अध्याय 1-2)
2. तीन मित्रों के संवाद या झूठी सांत्वना (3:1-31:40)
3. एलीहू के शब्द (32:1 - 37:24)
4. आंधी में से परमेश्वर का उत्तर (34:1-42:6)
5. उपसंहार: सांत्वना देने वालों को परमेश्वर का झिड़कना; अय्यूब के दु:ख को दूर करना और लम्बे और आशीषित जीवन का पुरस्कार देना (42:7-17)

भजन संहिता - प्रार्थना के द्वारा स्तुति

लेखक: भजन संहिता की पुस्तक बाइबल की सब से बड़ी पुस्तक है, और यह हमारे जीवन के सारे अनुभवों में मनुष्य हृदय से बात करती है। इसीलिये यह पवित्रशास्त्र में से संभवत: सर्वाधिक उपयोग में लायी गई है। इसके अनेक लेखक हैं; विभिन्न भजनों के शीर्षक प्राय: उनके लेखक के नाम बताते हैं।

समय: संभावित है कि इसकी लेखन-वस्तु का काल सैंकडों वर्षों का है। ऐसा माना जाता है कि बंधुआई से लौटने के बाद, लगभग 537 ईसा पूर्व के आसपास, इन भजनों को इनके वर्तमान रूप में एकत्रित किया गया।

पुस्तक का नाम: इब्रानी में भजन संहिता की पुस्तक का शीर्षक *Tehillim* (स्तुति) या *Sepher Tehillim* (स्तुति की पुस्तक) दिया गया है। सेप्टुआजिन्ट में इसे दिया गया नाम *Psalmoi* (भजन) है, जिसका अर्थ "संगीत के स़ाज के साथ गाये जाने वाले गीत या कविताएं" होता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: भजन की पुस्तक, आराधना इस विषय के साथ-साथ आशा और शांति का संदेश देती है। परमेश्वर के व्यक्तित्व और कार्य के प्रति व्यक्तिगत प्रतिउत्तर देने के द्वारा ये भजन, जैसे कि, भय तथा शिकायत को दूर करने की औषधि हैं। ये इस्राएल की आराधना, विश्वास और आत्मिक जीवन को व्यक्त करते हैं। ये भजन परमेश्वर के लोगों के हृदय का दर्पण है, जिनमें मनुष्य के सर्वसामान्य, सर्वव्यापी मानवीय अनुभवों को परमेश्वर के व्यक्तित्व, उसकी प्रतिज्ञाओं, योजना और उपस्थिति के प्रकाश में लिखा गया है।

इन भजनों के मुख्य विषय ये हैं: मसीह, यहोवा, व्यवस्था, परमेश्वर का वचन, सृष्टि, इस्राएल का भविष्य, और दु:खों तथा आनंद तथा हैरानी में एक नवीनीकरण किये गये हृदय के परिश्रम। इन भजनों में की प्रतिज्ञाएं प्राथमिक रूप से यहूदी हैं, और व्यवस्था के अधीन रहने वालों के लिये उपयुक्त हैं, परंतु आत्मिक रीति से मसीही अनुभवों में भी खरी हैं, इस अर्थ में कि वे परमेश्वर के मन को और उसके हृदय के कार्यों को प्रगट करती हैं जो वह हैरान, दु:खी या निराश के लिये करता हैं।

मुख्य शब्द: 'स्तुति करो' शब्द 166 बार आया है, और आशीष, आशीषित 100 से अधिक बार आया है।

मुख्य विचार - ***इमानदारी:*** परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए भजन की पुस्तक अत्यंत प्रिय है इसका एक कारण, लेखकों के द्वारा विचार और भावनाओं को व्यक्त करने में की गई शुद्ध पारदर्शिता (पूर्ण स्पष्टता) है। चाहे आनंद की पराकाष्ठा हो या निराशा की गहराई हो, मनुष्य की साधारण परिस्थितियों में उभरने वाली खरी भावनाओं को व्यक्त करना सांत्वना और ज्ञान (शिक्षा) देने वाला है। भजन की पुस्तक वास्तविक मनुष्यों *के द्वारा* वास्तविक मनुष्यों *के लिए* लिखी गई है। इसकी सामर्थ और सांत्वना प्रवाहीत होने का स्रोत यह है कि इसमें सर्वदा परिवर्तित होने वाली मानवीय दशा का संबंध कभी परिवर्तित न होने वाले परमेश्वर से बड़ी प्रामाणिकता और प्रबलता से दिखाया गया है।

मुख्य अध्याय: भजन 1, 22, 23, 24, 37, 78, 100, 119, 121, 150.

मुख्य पद: 1:1-3, 19:8-11, 19:14, 119:9-11, 145:21

मुख्य लोग: ऐसे लगता है कि 'परमेश्वर की आराधना और उसके साथ की चालचलन में परमेश्वर के लोग' इस पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

भजन संहिता में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया:

मसीह से सामान्य रूप से संबंधित: कुछ भजन मसीह का चित्र प्रगट करते हैं परंतु उनके कुछ पहलु लागू नहीं होते हैं (देखिये 34:20; 69:4, 9)। यीशु ने और प्रेरितों ने, जाने-माने भजनों की अभिव्यक्तियों को अपने अनुभवों में लागू किया है। (109:8 को प्रेरित 1:20 में)।

प्रारूपिक-भविष्यसूचक: कुछ भजनों में, जबकि भजनकार अपने अनुभवों का वर्णन करता है, परंतु भाषा कुछ ऐसी है कि वह उसके अपने जीवन के परे संकेत करती है और ऐतिहासिक रूप से मात्र मसीह के व्यक्तित्व में ही खरी होती है (अध्याय 22)।

अप्रत्यक्षरीति से मसीह से संबंधित: कुछ भजन, जब वे लिखे गए थे तब दाऊद के घराने या किसी एक राजा की ओर संकेत करते थे, परंतु उनकी सुनिश्चित और अंतिम पूर्णता मात्र मसीह के जीवन में ही होने वाली थी (अध्याय 2, 45, 72)।

पूर्णत: भविष्यवाणी के रूप में: कुछ भजन, किसी अन्य व्यक्ति या दाऊद की संतान की ओर संकेत किये बिना सीधे-सीधे मसीह की ओर इशारा करते हैं (अध्याय 110)।

भजन संहिता के भाग और वर्गीकरण

भजन संहिता स्तुति, प्रार्थना और आराधना की पुस्तक है। भजन की पुस्तक परमेश्वर की बड़ाई और प्रशंसा करती है। मनुष्य का प्रत्येक अनुभव परमेश्वर से जोड़ा गया है। एक विश्वासी का जीवन उसकी सारी खुशियों और दु:खों में, विजय और असफलताओं में चित्रित किया गया है। भजन मसीह से भरे हुये है। वे उसके दु:खसहन और मृत्यु की संपूर्ण यात्रा का वर्णन करते हैं। किसी ने भजन संहिता की रूपरेखा पंचग्रंथ के क्रम के अनुसार की है:

1. उत्पत्ति विभाग - भजन 1-41, मनुष्य की दशा को उसकी आशीष की अवस्था में, फिर उसकी गिरने की दशा में और फिर उठने की दशा में देखता है।
2. निर्गमन विभाग - भजन 42-72; इस्राएल के विनाश और छुटकारे को चित्रित करता है।
3. लैव्यव्यवस्था विभाग - भजन 73-89, परमेश्वर में प्राप्त हमारे पवित्रस्थान को (शरणस्थान को), अंधकार और भोर दोनों दशा में, दर्शाता है।
4. गिनती विभाग - भजन 90-106, पृथ्वी पर ध्यान केंद्रित करता है, उसके संकट और सुरक्षा को दर्शाता है।
5. व्यवस्था विवरण विभाग - भजन 107-150, परमेश्वर के वचन की सिद्धता और प्रशंसा को दिखाता है।

पुस्तक के विभाजन को देखने का एक और तरीका नीचे दिए हुए चार्ट में देखा जा सकता है:

पुस्तक	भजन	लेखक	साधारण विषय-वस्तु
पुस्तक 1	भजन 1-41	दाऊद	आराधना के गीत
पुस्तक 2	भजन 42-72	दाऊद और कोरह	निवेदन के भजन
पुस्तक 3	भजन 73-89	मुख्यत: आसाप	निवेदन के भजन
पुस्तक 4	भजन 90-106	मुख्यत: अज्ञात	आनंद और प्रशंसा के गान
पुस्तक 5	भजन 107 - 150	दाऊद और अज्ञात	आनंद और प्रशंसा के गान

नीतिवचन - उपदेश के द्वारा विवेक (बुद्धिमता)

लेखक: 1 राजाओं 4:32 के अनुसार सुलैमान ने 3000 नीतिवचन, और 1005 गीत लिखे। जबकि इस पुस्तक के बहुत से नीतिवचन उसने लिखे हैं, अंतिम अध्याय बताते हैं कि इसका लेखक वही अकेला नहीं था। विशेष रूप से बताया गया है कि अध्याय 30 याके के पुत्र आगूर ने लिखा है, और 31:1-9 को लिखने का श्रेय राजा लमूएल को दिया जाता है।

समय: 950-700 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: स्पष्ट है कि इस पुस्तक का नाम इसकी विषय-वस्तु के कारण मिला है--लघु कहावतें या कथन जो सच्चाई और उपदेश को तीखे और सारगर्भित रूप में सूचित करते हैं।

मुख्य विषय और उद्देश्य: पुस्तक के शीर्षक और उसके अर्थ से जो बताया गया है उसके अनुसार, इस पुस्तक का उद्देश्य यह है कि जीवन के सोचने योग्य प्रत्येक मुद्दे पर विशेष निर्देशों के द्वारा जीने के लिये बुद्धिमत्ता देना: जैसे कि, मूर्खता, पाप, अच्छाई, संपन्नता, निर्धनता, बोली/जबान, अभिमान, दीनता/नम्रता, न्याय, परिवार (माता-पिता, विवाह, बच्चे), अनुशासन, बदला/प्रतिशोध, विवाद, पेटूपन, प्रेम, आलसीपन मित्रता, जीवन और मृत्यु। दैनिक जीवन के लिए बुद्धिमत्ता देने हेतु नीतिवचन से अधिक व्यावहारिक पुस्तक कोई और नहीं है।

इसका मूल सैद्धांतिक विषय है: "यहोवा का भय मानना ही बुद्धि का मूल है" (1:7क)। परमेश्वर के भय का अभाव बेलगाम और मूर्खतापूर्ण जीवन की ओर ले जाता है। यहोवा का भय मानने का अर्थ है उसके पवित्र चरित्र और सामर्थ के आदर में खड़े होना। इसके साथ ही, नीतिवचन सिखाती है कि खरी बुद्धिमता हमें परमेश्वर का भय मानने की ओर ले जाती है।

मुख्य शब्द : मुख्य शब्द "बुद्धिमता," "बुद्धि" इत्यादि है जो लगभग 110 बार आया है। और दूसरे मुख्य और बुद्धिमता से संबंधित शब्द है "शिक्षा" "सिखाए" "सिखाना" सारे मिलाकर 23 बार आए हैं।

मुख्य विचार - ***रिश्ते:*** एक मसीही अगुवे ने कहा है कि भजन संहिता की पुस्तक हमें परमेश्वर के साथ सही रिश्ता रखना सिखाती है और नीतिवचन की पुस्तक हमें दूसरे लोगों के साथ सही रिश्ता निभाना सिखाती है। नीतिवचन में जो बुद्धिमता बसी हुई है, उसे जब मसीही जीवन में उतारा जाता है तो वह रिश्तों को स्वस्थ बनाये रखने में सहायक होगी। भजन संहिता 133:1 कहता है "देखो यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहे।" परमेश्वर के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम "मेल के बंधन में आत्मा की एकता रखने का" हर एक प्रयत्न करें (इफि. 4:3)। नीतिवचन की पुस्तक प्रगट करती है कि हमारे रिश्ते, चाहे मसीहियों से हो या गैर-मसीहीयों से हो, मित्रों से हो या पारिवारिक सदस्यों से हो, सारे के सारे परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है।

मुख्य अध्याय: नीतिवचन में स्पष्ट रूप से बहुत से भाग है जो मुख्य समझे जा सकते हैं, जैसे कि, अध्याय 1:20-33, जिसमें बुद्धिमत्ता को स्त्री के रूप में दिखाया गया है जो सब को अपनी ओर आने और सीखने का आमंत्रण देती है परंतु अधिकांश लोग उसके प्रस्ताव की ओर ध्यान देने से इंकार कर देते हैं। अध्याय 31 भी, विशेष रूप से महिलाओं के लिए, मुख्य अध्याय है।

मुख्य पद : 1:5-7; 3:5-6; 9:10

नीतिवचन में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: अध्याय 8 में, बुद्धि को साकार रूप दिया गया है और सिद्ध रूप में देखा गया है। वह ईश्वरीय है (8:23-31), वह शारीरिक और आत्मिक जीवन का स्रोत है (8:18; 8:35-36), वह धार्मिक और नैतिक है (8:8-9), और वह उन सभों के लिये उपलब्ध है जो कोई उसे ग्रहण करेंगे (8:1-6; 32-35)। यह बुद्धि मसीह में देहधारित हो गई, "जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भंडार छिपे हुए हैं" (कुलुस्सियों 2:3) और जो "परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा, अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा" (1 कुर. 1:30 और 1 कुर. 1:22-24)।

रूपरेखा -

1. प्रस्तावना: नीतिवचन का उद्देश्य (1:1-7)
2. बुद्धिमता के उपदेश: जवानों के लिए नीतिवचन (1:8-9:18)
3. सुलैमान के नीतिवचन (10:1-24:34)
4. सुलैमान के नीतिवचन जिनकी नकल राजा हिजकियाह के जनों ने की थी (25:1-29:27)
5. आगूर के वचन (30:1-33)
6. लमूएल राजा के वचन (31:1-9)
7. भली पत्नी (31:10-31)

सभोपदेशक - उद्देश्य की तलाश

लेखक: लेखक होने के लिए सारे चिन्ह राजा सुलैमान की ओर संकेत करते हैं।

समय: 931 इसा पूर्व

यहूदी परम्परा के अनुसार, सुलैमान ने श्रेष्ठगीत को अपने आरंभिक वर्षों में लिखा, जिसमें उसने एक युवा पुरुष के प्रेम को प्रगट किया; उसने नीतिवचन को अपने परिपक्व वर्षों में लिखा, जिसमें एक मध्यम आयु के मनुष्य की बुद्धिमता को प्रगट किया; फिर उसने सभोपदेशक को अपनी ढ़लती आयु में लिखा, जिसमें एक वृद्ध मनुष्य की व्यथा को प्रगट किया (देखिए 12:1)। संभवत: सभोपदेशक सुलैमान के उस पछतावे और पश्चाताप का वृत्तांत है जो उसे उसकी गंभीर त्रुटियों के लिये हुआ था जिनका उल्लेख 1 राजाओं 11 में मिलता है।

पुस्तक का नाम: ज्ञात होता है कि इस पुस्तक का सभोपदेशक यह हिन्दी नाम उसके इब्रानी बाइबल में दिये गये शीर्षक से आया है जिसका अर्थ "वह जो सभा का आयोजन करता है और उसमें भाषण देता है" या "उपदेशक" होता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: सभोपदेशक उस सब का वृत्तांत है जो मनुष्य की सोच और स्वाभाविक धर्म के द्वारा जीवन के अर्थ और उद्देश्य के बारे में खोजा गया है। इसमें जो तर्क-वितर्क लिखे गए हैं वे मनुष्य के हैं। ये परमेश्वर के तर्क-वितर्क नहीं हैं, परन्तु मनुष्य के तर्क-वितर्क का परमेश्वर के द्वारा लिखा गया विवरण है।

सभोपदेशक दृष्टिकोण की पुस्तक है। "उपदेशक" (1:1) का विवरण उस निराशा को प्रगट करता है जो सुख को सांसारिक वस्तुओं में ढूंढने के फलस्वरूप आती ही है। यह पुस्तक मसीहियों को एक ऐसे व्यक्ति की आंखों से संसार को देखने का मौका देती है जो, यद्यपि बहुत बुद्धिमान है तौभी दुनियावी और मानवीय वस्तुओं में जीवन का उद्देश्य की खोजने का प्रयास कर रहा है। उपदेशक के द्वारा हर प्रकार के सांसारिक आनंद को खोजा गया, और उन में से किसी भी आनंद में उसने जीवन का उद्देश्य नहीं पाया।

अंत: में, उपदेशक यह स्वीकार कर लेता है कि परमेश्वर में विश्वास करना ही व्यक्तिगत उद्देश्य को पाने का एकमात्र रास्ता है। वह यह स्वीकार कर लेने का निर्णय लेता है कि जीवन बहुत ही थोड़े समय का है और परमेश्वर के बिना निरर्थक है। उपदेशक पाठकों को सलाह देता है कि अपना ध्यान अस्थायी आनंद के बजाय अनंत परमेश्वर में कंद्रित करें।

मुख्य शब्द : "व्यर्थ" और "सूर्य के नीचे"

मुख्य विचार - ***संतोष:*** गहरा, आंतरिक संतोष जो परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार जीने से ही आता है उसकी नकल उस किसी भी बात में नहीं मिल सकती जो यह संसार देता है। वह परिश्रम जो निरंतर अधिक (चाहे संपत्ति, अधिकार या प्रभाव इत्यादि) पाने के लिये किया जाता है वह एक ऐसा फंदा है जो मात्र खालीपन की ओर ले जाता है। परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना अपना पुरस्कार स्वयं उत्पन्न करता है, और यह पुरस्कार मात्र स्वर्ग ही नहीं है। पवित्र जीवन इस पृथ्वी पर के जीवन में भी शांति और संतोष लाता

है। सभोपदेशक की पुस्तक का मुख्य विषय प्रेरित पौलुस के द्वारा तीमुथियुस को लिखे गये पत्र में प्रतिबिंबित होता है, जब वह लिखता है, "पर संतोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है" (1 तीमुथियुस 6:5-7)।

मुख्य अध्याय: अध्याय 12 मुख्य है, जो इस पुस्तक की "जीवन के अर्थ" के विषय की विस्तृत जाँच-पड़ताल का समाधान एक निष्कर्ष में दे देता है: "परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का संपूर्ण कर्तव्य यही है" (12:13)।

मुख्य पद: 1:2; 1:18; 2:11; 12:1; 12:13-14

सभोपदेशक में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: सभेपदेशक की पुस्तक में जितनी भी निरर्थक बातों का उल्लेख है उन सब के लिये उत्तर 'मसीह' है। 3:17 के अनुसार, परमेश्वर धर्मी और दुष्ट दोनों का न्याय करता है, और धर्मी मात्र वे ही हैं जो मसीह में हैं (2 कुरिंथि 5:21)। परमेश्वर ने हमारे मनों में अनंतकाल को पाने की चाहत रखी हुई है (3:11) और मसीह के द्वारा अनंत जीवन का मार्ग उपलब्ध करा दिया है (योहन्ना 3:16)। हमें स्मरण कराया गया है कि संसार की संपत्ति के पीछे लगे रहना न मात्र व्यर्थता है क्योंकि यह संतुष्टि नहीं देता (5:10), परंतु हम उसे पा भी लें तौभी मसीह के बिना हम अपनी आत्मा को खो देंगे और इस बात में कोई लाभ नहीं है (मरकुस 8:36)। अंतत:, हर एक असंतुष्टी और निरर्थकता, जिसका वर्णन सभोपदेशक में दिया गया है उसका उपचार मसीह में है, जो परमेश्वर का ज्ञान और जीवन में पाया जाये ऐसा एकमात्र खरा अर्थ है।

रूपरेखा -

1. परिचय - समस्या बताई गई (1:1-2:26)
2. जीवन के लिए परमेश्वर की अपरिवर्तनीय योजना (3:1-22)
3. जीवन की परिस्थितियों में निरर्थकता (4:1-5:20)
4. संपूर्ण जीवन की निरर्थकता (6:1-12)
5. जीवन की निरर्थकताओं के साथ रहने के बारे में सलाह (7:1-12:8)
6. निष्कर्ष (12:9-14)

श्रेष्ठगीत - एक राजसी विवाह

लेखक : जबकि कुछ आलोचक राजा सुलैमान को इस पुस्तक का लेखक नहीं मानते और 1:1 का अर्थ इस प्रकार लगाते हैं "जो सुलैमान के विषय में हैं," तौभी आंतरिक साक्ष्य इस परम्परागत विश्वास को मानते हैं कि सुलैमान ही इसका लेखक है।

समय : लगभग 965 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम : इसका "श्रेष्ठगीत" यह शीर्षक पद 1 से लिया गया है जिसका अर्थ 'गीतों में सब से अच्छा' या 'सर्वोत्तम गीत' होता है। इसका अंग्रेजी शीर्षक, "सुलैमान के गीत" यह भी पद 1 लिया गया है जो लेखक का नाम बताता है। इसे, लेटिन भाषा से लिये गये शब्द से "कैन्टिकल्स" भी कहा जाता है जिसका सरल अर्थ "गाने" होता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: इस पुस्तक के मुख्य विषय की दोहरी व्याख्या की गई है: मुख्य रूप से, यह पुस्तक उस विशुद्ध वैवाहिक प्रेम का प्रगटीकरण है जैसा कि उत्पत्ति में परमेश्वर के द्वारा ठहराया गया था; और मनोरंजन की चाहत और वासना ये जो दो पाप विवाह की पवित्रता को अशुद्ध करते हैं इनके विपरीत उस वैवाहिक प्रेम के उच्चता की पुष्टि करती है।

गौण और विस्तृत व्याख्या में इसे मसीह, अर्थात् पुत्र, और उसकी स्वर्गीय पत्नी कलीसिया के संबंध में बताया गया है (2 कुरन्थियों 11:1-4)

मुख्य शब्द: प्रेम

मुख्य विचार - ***घनिष्ठता:*** राजा और शूलेम्मिन के बीच का आपसी भावावेश, परमेश्वर के साथ की घनिष्ठ सहभागिता का संकेत है। हमारा प्रभु मात्र यदा-कदा की मुलाकात या हल्की-फुल्की बातों से संतुष्ट नहीं होता, जबकि कुछ मसीही लोग उसे इतना ही देते हैं। सुलैमान के गीतों की पुस्तक, परमेश्वर के उस जोशीले प्रेम की गहराई बताती है जो उसे हमारे लिए है, जो उसने उस मसीह यीशु के द्वारा चुकाये गये बलिदानात्मक दाम में व्यक्त किया है ताकि उस मेल को संभव बनाये जो वह हम से रखना चाहता है। घनिष्ठ संबंध के अलावा और जो कुछ है वह निम्न स्तर का है और वह उसकी योजना में नहीं आता है। परमेश्वर के प्रेम को सर्वश्रेष्ठ रूप से लौटाने में असफल होना, हमारा उसके साथ की सहभागिता के समय को यदा-कदा का और अर्थहीन बना देना, यह उसका बहुत बड़ा अनादर है। अवश्य है कि हम मसीह के पीछे वैसे ही लगे रहने की कोशीश करें जैसे शूलेम्मिन अपने प्रेमी के पीछे लगी रहती थी, नहीं तो हम से प्रश्न किया जायेगा, "हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिंत रहकर कैसे बच सकते हैं" (इब्रा 2:3)?

मुख्य अध्याय: अध्याय 4 मुख्य है, जिसमें राजा के द्वारा की गई अपने प्रेम की इच्छा की घोषणा सुंदर अलंकृत भाषा में चित्रित है, और अंतिम पद में दिखाया गया है कि शूलेम्मिन उसके प्रेम का स्वागत करती और प्रत्युत्तर देती है। उनके प्रेम की संपूर्णता अध्याय 5 के पद 1 में भी जारी रहती है और चित्र को पूर्ण करती है। (याद रखें कि अध्यायों और पदों को तय करने का कार्य बाइबल में वर्षों बाद जोड़ा गया; कभी-कभी कोई विचार अध्याय के अंत में पूर्ण नहीं हुआ है।)

मुख्य पद: 7:10 "मैं अपने प्रेमी की हूँ, और उसकी लालसा मेरी ओर नित बनी रहती है।"

मुख्य लोग: इस पुस्तक में मुख्य तीन पात्र है: दुल्हन (शूलेम्मिन); राजा (सुलैमान); और सहेलियां (यरूशलेम की पुत्रियाँ)

श्रेष्ठगीत में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: यह पुस्तक मसीह के उस प्रेम को दर्शाती है जो उसे कलीसिया के प्रति है जिसे नया नियम में मसीह की दुल्हन के रूप में देखा गया है (देखिए: 2 कुरिंथि 11:2; इफि. 5:23-25; प्रकाशितवाक्य 19:7-9; 21:9)

रूपरेखा -

1. शीर्षक (1:1)
2. प्रेम में पड़ना (1:2-3:5)
3. प्रेम में एक हो जाना (3:6-5:1)
4. प्रेम में जूझना (5:2-7:10)
5. प्रेम में परिपक्व होना (7:11-8:14)

भाग 4 - बड़े भविष्यद्वक्ता

इस्राएल के सारे भविष्यद्वक्ताओं पर एक साथ दृष्टिपात

उनकी पदवी:

भविष्यद्वक्ता वे मनुष्य थे जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएल के इतिहास के अंधकारमय दिनों में उभारा था। वे अपने दिनों के सुसमाचार-प्रचारक थे। ईसा पूर्व नवीं शताब्दी से लेकर चौथी शताब्दी के बीच का 500 वर्ष का समय इन भविष्यद्वक्ताओं का समय था। इन भविष्यद्वक्ता ने, राजाओं और दूसरे लोगों को, एक समान पूरी निडरता के साथ, उनके पाप और असफलताओं के विषय में उलाहना दी।

उनका निर्देश या संदेश:

परमेश्वर का प्रवक्ता या परमेश्वर की ओर से बोलने वाला होने के नाते, भविष्यद्वक्ता का प्राथमिक कर्तव्य यह था कि, उन दिनों में जो घट रहा था उसके ऐतिहासिक संदर्भ में, परमेश्वर के संदेश को परमेश्वर के लोगों को बताये। विस्तृत अर्थ है, Forthtelling: सार्वजनिक करना: प्रकाशित या प्रकट करना ; संकरा अर्थ है, Foretelling: भविष्य में जो होगा उसे पहले से बताना । परमेश्वर के संदेश को लोगों को बताने की प्रक्रिया में, भविष्यद्वक्ता कभी-कभी वह प्रकट करेगा जो भविष्य से संबंधित है, परंतु, प्रचलित विचारों के विपरीत, यह भविष्यद्वक्ता के संदेश का मात्र छोटा-सा भाग होता था।

सार्वजनिक करना: प्रकाशित या प्रकट करना (Forthtelling) में सम्मिलित था परमेश्वर की इच्छा में *अर्न्तदृष्टि* प्रदान करना; यह उपदेशात्मक होता था, लोगों को आज्ञा मानने के लिये चुनौती देने वाला होता था।

जबकि दूसरी ओर, पहले से बताना (Foretelling) यह परमेश्वर की योजना में दूरदृष्टि (पूर्वज्ञान) देना इसके बारे में होता था। यह *भविष्यसूचक* होता था, या तो धर्मी लोगों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का ध्यान दिलाते हुये प्रोत्साहित करना होता था या फिर उन्हें आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी देना होता था।

अत: भविष्यद्वक्ता ईश्वरीय तरीके से चुना गया प्रवक्ता होता था जो परमेश्वर का संदेश प्राप्त करने के बाद फिर उसे लोगों के आगे मौखिक रूप से, दृश्य रूप से या लिखित रूप से प्रकाशित/प्रकट (घोषित) करता था। इसी कारण से, भविष्यद्वक्ता जो सूत्र काम में लाता था वह था, "यहोवा की यही वाणी है।"

परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में भविष्यद्वक्ताओं के संदेश को, उन्हें दिये गये तिहरे कार्य के प्रकाश में समझा जा सकता है जो उन्हें पुराना नियम के परमेश्वर के लोगों के मध्य करने के लिये सौंपा गया था:

1. *प्रथम, वे ऐसे* ***प्रचारकों*** *का कार्य करते थे* जो इस्राएल राष्ट्र के समक्ष मूसा की व्यवस्था को समझाने का और उसकी व्याख्या करने का काम करते थे। यह उनका कर्तव्य था कि वे लोगों को उनके पाप के कारण डांटे, उनकी कटु आलोचना करें, उन्हें पाप को त्यागने का आहवान करे, न्याय के भय से डराए, पश्चताप के लिए बुलाये और शांति और क्षमा ले लाए। उनके कार्य के बाकी पहलुओं की अपेक्षा, लोगों के पाप के कारण उन्हें डांटना और फिर उन्हें पश्चताप की बुलाहट देना यह एक क्रिया उनके भविष्यद्वक्ता होने के कार्यकाल का सब से अधिक समय खा जाती थी। डांट स्वीकार करने के लिये बाध्य करने हेतु उस दण्ड की भविष्यवाणी की जाती थी जिसे परमेश्वर उन लोगों पर भेजने का विचार

करता था जो भविष्यद्वक्ता की चेतावनियों की ओर ध्यान देने में असफल होंगे (देखिये: योना 3:4)।

2. *द्वितीय; उन्होंने भविष्यकथन करने वालों के समान कार्य किया,* जिन्होंने आने वाले न्याय, छुटकारे और मसीह तथा उसके राज्य से संबंधित घटनाओं के विषय में घोषणा की थी। भविष्य को पहले से बताने का उद्देश्य यह कभी भी नहीं था कि मात्र मनुष्य की जिज्ञासा को संतुष्ट किया जाये, परंतु उसका उद्देश्य यह जताना था कि परमेश्वर भविष्य को जानता है और नियंत्रित करता है; और यह इसलिये भी होता था कि उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन को दिया जाये। एक सच्चे भविष्यद्वक्ता के द्वारा की गई भविष्यवाणी को दृश्य रूप से पूर्ण होता हुआ देखा जायेगा। कही गई भविष्यवाणी का पूरा न होना इस बात का संकेत होगा कि भविष्यद्वक्ता ने यहोवा की वाणी को नहीं बताया था (देखिए: व्यवस्थावि. 18:20-22) 1 शमूएल 3:19 में शमूएल के बारे में कहा गया है कि "यहोवा उसके संग रहा, और उसने उसकी कोई भी बात निष्फल होने नहीं दी।"

3. *अंत में, उन्होंने इस्राएल के लोगों के लिये पहरूआ होने के समान कार्य किया* (यहेज 3:17)। यहेजकेल एक पहरूआ के समान था जो सिय्योन की शहरपनाह पर खड़ा, धार्मिक विश्वासघात के विरुद्ध में चेतावनी देने का नरसिंगा फूँकने के लिए हमेशा तैय्यार रहा। उसने लोगों को विदेशी शक्तियों से राजनीतिक और सैनिक संधि करने के विरुद्ध में, कनानियों के धर्म और मूर्तिपूजा में सम्मिलित होने की परीक्षा के विरुद्ध में, और धार्मिक नियम-निष्ठता और बलिदानों के अनुष्ठानों में अनावश्यक भरोसा रखने के विरुद्ध में चेतावनी दी।

जबकि भविष्यद्वक्ताओं ने, परमेश्वर के संदेश को लोगों तक पहुँचाने के लिए, विभिन्न तरीकों से कार्य किया, *वे इस्राएल की धार्मिक व्यवस्था-प्रणाली में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किये हुये थे।* इस्राएल में भविष्यद्वक्ताओं ने *राजकीय राजनीतिज्ञ या अभियोगपक्ष के वकील* का स्थान लिया हुआ था, जो इस्राएल राष्ट्र पर मूसा की वाचा का उल्लंघन करने का दोष लगाते थे।

यशायाह - उद्धार यहोवा ही से है

लेखक: जैसा कि यह पुस्तक स्पष्ट रूप से घोषित करती है, इसका लेखक यशायाह है, जो आमोस का पुत्र और निसंदेह एक प्रभावशाली और सम्मानित यहूदी परिवार से संबंधित था। ऐसे लगता है कि यशायाह का शाही दरबार से, यहां तक की राजा आहाज के शासन काल में भी, निकट और अनौपचारिक संबंध था।

समय: 740 से 680 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: स्पष्ट है कि इसका शीर्षक "यशायाह" उसके मानवीय लेखक के नाम पर लिया गया है, जिसने इसे पवित्र आत्मा की प्रेरणा की अधिनता में लिखा। इस भविष्यद्वक्ता के इब्रानी नाम का अर्थ है "यहोवा उद्धार है," जो उपयुक्त रूप से, इस पुस्तक के मुख्य विषय और विषय-वस्तु का उत्कृष्ट सारांश है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: जैसा कि अभी बताया गया, यशायाह का नाम इस पुस्तक के मुख्य विषय को प्रकट करता है, "उद्धार यहोवा ही से है"। यह इस तथ्य से भी अत्याधिक सुस्पष्ट हो जाता है कि यशायाह की पुस्तक में "उद्धार" शब्द 26 बार आया है परंतु बाकी के सारे भविष्यद्वक्ताओं में कुल मिलाकर 7 बार ही आया है। इस कारण से यशायाह को "सुसमाचार-प्रचारक भविष्यद्वक्ता" कहा गया है, क्योंकि वह उद्धार और मसीह के द्वारा दिलाये जाने वाले छुटकारे के विषय में बहुत कुछ कहता है।

वास्तव में, मसीह के पहले और दूसरे आगमन में मसीह का जो व्यक्तित्व और कार्य होगा इसके बारे में, पुराना नियम की किसी भी पुस्तक की तुलना में, यशायाह में बहुत अधिक बताया गया है।

कुछ पहलुओं से देखा जाये तो यशायाह अपनी संरचना में एक छोटी बाइबल है। इसमें कुल 66 अध्याय है; जैसे कि बाइबल में 66 पुस्तकें हैं। इसमें दो बड़े भाग हैं, जैसे कि बाइबल में दो भाग हैं। पुराना नियम के समान पहले भाग में 39 अध्याय हैं और नया नियम के समान ही दूसरे भाग में 27 अध्याय हैं। इस पुस्तक को "यशायाह रचित सुसमाचार" यह शीर्षक दिया गया है। कुंवारी से मसीह का जन्म, मसीह का चरित्र, उसका जीवन, उसकी मृत्यु, उसका पुनरुत्थान और उसका दूसरा आगमन ये सारी घटनाएं सुस्पष्टता और सफाई से प्रस्तुत की गई हैं।

मुख्य शब्द: पुन: मुख्य विषय और यशायाह के नाम को ध्यान में रखते हुए मुख्य शब्द है "उद्धार" है।

मुख्य विचार - ***सुव्यवस्था:*** कोई यदि मनुष्य के इतिहास को देखेगा, और विशेष करके इस्राएल राष्ट्र के इतिहास को, तो उसे मात्र संयोग और अव्यवस्था ही दिखाई देगी। यशायाह स्पष्टता से प्रकट करता है कि इतिहास की परते परमेश्वर एक योजना के अनुसार खुलने दे रहा है। भविष्यवाणी की पुस्तकों को पुराना नियम में सम्मिलित करने का एक मुख्य उद्देश्य यह है कि ये बाइबल को अपने आप में एकल संपूर्ण पुस्तक बनाते हैं। पवित्रशास्त्र बाइबल के अधिकार का प्रमाण इसके अपने पन्नों में मिलता है, जो यह है कि इसमें मसीह से संबंधित अत्यंत निश्चित जानकारी उसके जन्म से शताब्दियों पहले मालूम हुई है और लिखित रूप में दी गई है। नि:संदेह, जिस क्षण मनुष्य ने पाप किया उसी क्षण उद्धार की योजना परमेश्वर के हृदय में थी, जब उसने सर्प से घोषणा की थी कि "वह (अर्थात् स्त्री का वंश) तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एडी को डसेगा।" वास्तव में, प्रेरित पौलुस ने इफिसियों को बताया है, (इफि. 1:8ख-12) "जिसे उसने सारे

ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। क्योंकि उसने अपनी ईच्छा का भेद उस भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था कि समयों के पूरा होने का ऐसा प्रबंध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है सब कुछ वह मसीह में एकत्र करें, उसी में जिसमें हम भी ***उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है*** पहले से ठहराए जाकर मीरास बने कि हम, जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी उसकी महिमा की स्तुति के कारण हो।" हमारा परमेश्वर क्रमानुसार सुव्यवस्था का परमेश्वर है, और वह अपनी योजना पूर्ण करता जा रहा है।

मुख्य अध्याय: अध्याय 53। एक पुस्तक जो अनेक मूल्यवान सच्चाइयों और मसीह-संबंधित पूर्वज्ञान से भरी हुई है, उसमें मुख्य अध्याय कौन सा होगा यह निश्चित करना सरल नहीं है, परंतु निश्चय ही यशायाह 53, पुराना नियम का उत्कृष्ट और प्रमुख अध्याय है जो मसीह की ओर यूं संकेत करता है कि वह दु:ख उठाने वाला उद्धारकर्ता होकर अवश्य ही हमारे पापों के लिए प्राण देगा।

मुख्य पद: 7:14; 9:6-7; 53:4-7

मुख्य लोग: यशायाह भविष्यद्वक्ता मुख्य मानवीय पात्र है, परंतु *यहोवा* केंद्रीय व्यक्ति है। उसे *इस्राएल का शक्तिमान, इस्राएल का पवित्र* और *प्रभु सेनाओं का यहोवा* कहकर ऊंचा पद दिया गया है, और वह निश्चय ही यशायाह की पुस्तक का प्रमुख केंद्र है।

यशायाह में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: पुराना नियम की दूसरी कोई भी पुस्तक मसीह का चित्रण इतना संपूर्ण और सविस्तार नहीं करती है जैसे यशायाह करती है।

यशायाह मसीह का चित्रण उसकी सर्वोच्च प्रभुता में (6:1और आगे), उसके जन्म और मनुष्यत्व में (7:14; 9:6; 11:1), उसकी आत्मा से परिपूर्ण सेवकाई में (11:2और आगे), उसके ईश्वरीय स्वभाव में (7:14, 9:6), उसके दाऊद का वंश होने में (11:1), उसके द्वारा हमारे बदले में प्राण देकर किये गये उद्धार के कार्य में (53), सेवक-उद्धारकर्ता के रूप में उसकी सेवकाई में (अध्याय 49 और आगे), और इससे भी बहुत कुछ बताते हुये करता है।

रूपरेखा -

1. दोषारोपण और दण्ड की भविष्यवाणियाँ (1:1-39:8)
   - क. यहूदा के विरुद्ध भविष्यवाणियां (1:1-12:6)
   - ख. अन्यजातियों के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ (13:1-23:18)
   - ग. यहोवा के दिन से संबंधित भविष्यवाणियाँ (24:1-27:13)
   - घ. इस्राएल और यहूदा के विरुद्ध भविष्यवाणियां (शाप और आशीष) (28:1-35:10)
   - च. सन्हेरीब के विरुद्ध भविष्यवाणियाँ (36:1-39:8)
2. सांत्वना और आश्वासन की भविष्यवाणियाँ (40:1-77:24)
   - क. इस्राएल के छुटकारे की भविष्यवाणियां और परमेश्वर की महानता (40:1-48:22)
   - ख. इस्राएल के छुड़ाने वाले की भविष्यवाणी, दु:ख भोगने वाले सेवक द्वारा उद्धार (49:1-57:21)
   - ग. इस्राएल के महिभामय भविष्य की भविष्यवाणियाँ और परमेश्वर की शांति की योजना (58:1-66:24)

यिर्मयाह - पाप और न्याय के विरुद्ध चेतावनी

लेखक: यशायाह की पुस्तक के समान ही यह पुस्तक भी अपने मनुष्य लेखक को स्पष्ट रूप से पहचानती है: यिर्मयाह, जो हिल्कियाह का पुत्र था, और बिन्यामीन देश के अनातोत में रहने वाले याजको में से था (1:1)। यिर्मयाह ने अपनी भविष्यवाणियों को अपने सचिव बारूक से लिखवाया। मात्र अध्याय 52 इस भविष्यद्वक्ता के द्वारा नहीं लिखा गया है।

समय: 627 से 585 ईसा पूर्व। यिर्मयाह ने अपनी सेवकाई को योशिय्याह के 13 वें वर्ष में आरंभ किया; जो यशायाह की मृत्यु के लगभग 60 वर्ष के बाद का समय है।

पुस्तक का नाम: इस पुस्तक का नाम इसके लेखक के नाम से लिया गया है: यिर्मयाह। उसके नाम का अर्थ क्या होता है इसके कुछ सुझाव इस पकार हैं: "यहोवा ऊंचा पद देता है" और "यहोवा स्थापित करता है," परंतु अधिक संभावित सुझाव है, "परमेश्वर फेंक देता है," या तो इस भाव से कि भविष्यद्वक्ता को एक विरोधी संसार में "वेग से फेंक देना" या फिर इस भाव से कि जातियों को उनके पाप के कारण ईश्वरीय न्याय में "नीचे गिरा देना।"

मुख्य विषय और उद्देश्य: दो विषय महत्वपूर्ण रीति से प्रगट हैं: (1) पाप के विरुद्ध परमेश्वर के न्याय की चेतावनियां; (2) यदि जातियाँ सचमुच पश्चताप कर लेती है तो आशा और पुन:स्थापना का संदेश।

यिर्मयाह को "विलाप करने वाला भविष्यद्वक्ता" कहा गया है। जिस संदेश को देने के लिए उसे बुलाया गया था उससे उसका अपना हृदय टूट गया था। यह बहुत ही अनचाहा समाचार था जो शायद ही कभी लोगों को दिया गया था। यिर्मयाह को देशद्रोही कहा गया, क्योंकि उसने कहा था कि उन्हें बेबीलोन के राजा के वश में कर दिया जाएगा (38:17-23)। इस्राएल के हाथ में मात्र एक ही उपाय रह गया था - आत्मसमर्पण कर देना।

यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी कि बेबीलोन की बन्धुआई में रहने का समय 70 वर्षों का होगा। (25:9-12)। तथापि, उसने अंधकार से आगे प्रकाश की ओर भी देखा, और जिस प्रकार उसने भविष्य के बारे में महिमामय रीति से बोला वैसा और किसी भविष्यद्वक्ता ने नहीं बोला (23:3-8, अध्याय 30 और 31; 33:15-22)।

लोगों को सिखाने के लिए यिर्मयाह ने बहुत से वस्तु-पाठों का उपयोग कि जो परमेश्वर ने उसे दिये थे। उसका संदेश न मात्र अलोकप्रिय था, परंतु उसे नकारा गया, यहाँ तक कि उसके मित्रों ने मांग की कि उसे मार डाला जाये।

मुख्य शब्द: इस पुस्तक में 6 मुख्य शब्द हैं: (4 नकारात्मक) - गिराता, ढाता, नष्ट करता, काट डालता, और (2 सकारात्मक) - बढ़ाऊंगा और रोपूंगा। बेबीलोन का उल्लेख, बाइबल की अन्य पुस्तकों की तुलना में, यिर्मयाह में सब से अधिक (164 बार) है।

मुख्य विचार - ***सच्चाई/ईमानदारी:*** यिर्मयाह के दिनों में यहूदी लोगों के पाप, न्याय, पश्चाताप और पुन:स्थापना के अनेक दौर हो चुके थे। प्रत्येक दौर में न्याय की तीव्रता और अधिक कठोर होती गई थी और

सर्वाधिक बुरा दौर अभी आने को था। सच्चे पश्चाताप् में यह सम्मिलित होता है कि पाप को छोड़ दिया जाये। परमेश्वर हृदय को जाँचता है; पश्चाताप के कुछ गिने-चुने शब्द मात्र बोल देने से हृदय सच में पश्चातापी हुआ ही होगा ऐसा अर्थ निकलना जरूरी नहीं है। पहले किये गये पश्चाताप सच्चाई से/ईमानदारी से नहीं किए गए थे। परमेश्वर चाहता है कि आराधना सच्चाई से की गई हो, पापों से पश्चाताप सच्चाई से किया गया हो।

यिर्मयाह 8:12 में परमेश्वर लोगों पर दोष लगाता है, "क्या वे घृणित कार्य करके लज्जित हुए? नहीं, वे कुछ भी लज्जित नहीं हुए, वे लज्जित होना जानते ही नहीं।" यिर्मयाह की पुस्तक से जो पाठ सीखा जा सकता है वह यह है कि परमेश्वर जो चेतावनी देता है कि वह क्या करेगा, उसे करने में वह सुस्त नहीं है। अत: "आओ हम सच्चे मन और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक का दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवाकर परमेश्वर के समीप जाएं" (इब्रा. 10:22)।

मुख्य अध्याय: अध्याय 1 निश्चित ही मुख्य है क्योंकि इसमें भविष्यद्वक्ता को बुलाये जाने का वर्णन है। फिर अध्याय 23 प्रमुख में जिसमें मसीह की "एक धर्मी अंकुर" के रूप में भविष्यवाणी है, जिसे इसी अध्याय में वर्णन किये गये बुरे चरवाहे और झूठे भविष्यद्वक्ताओं से विपरीत दिखाया गया है। अध्याय 24 भी एक अन्य मुख्य अध्याय है क्योंकि इसमें 70 वर्षों तक बेबीलोन की बंधुआई में चले जाने की भविष्यवाणी है। अंत में अध्याय 31-32 भी मुख्य हैं क्योंकि इनमें पुन:स्थापना और उस नयी वाचा के बारे बताया गया है जिसके बारे में परमेश्वर कहता है, "मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा ...." (31:33)।

मुख्य पद: 1:4-10; 6:23-24; 8:11-12

मुख्य लोग: आरंभ से अंत तक मुख्य व्यक्ति निसंदेह यिर्मयाह ही है, उसका उपदेश, उसका प्रतिरोध और उसका सताव है।

यिर्मयाह में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: यिर्मयाह की पुस्तक में मसीह के अनेक चित्र है: बहते जल का सोता (2:13; यूहन्ना 4:14); बलसान की औषधि (8:22); अच्छा चरवाहा (23:4); धर्मी अंकुर (23:5); और यहोवा हमारी धार्मिकता (23:6)। उसे एक नई वाचा बांधने वाले के रूप में देखा गया है (31:31-34)।

रूपरेखा -

1. यिर्मयाह की बुलाहट और उसे भेजा जाना (1:1-19)
2. यहूदा के लिए भविष्यवाणीयाँ (2:1-45:5)
3. अन्यजातियों के लिए भविष्यवाणियां (46:1-51:64)
4. ऐतिहासिक परिशिष्ट (52:1-34)

विलापगीत - आँसुओं की नदी

लेखक: यहूदी परंपरा का बहुमत यिर्मयाह को ही इसका लेखक कहता है। यिर्मयाह की पुस्तक और विलापगीत में बहुत सी समानताएं हैं (उदाहरण के लिये, "की पुत्री" प्रत्येक पुस्तक में 20 बार आता है।)

समय: 586 या 585 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: इब्रानी बाइबल में इसका शीर्षक है, "Ekhah" जिसका अर्थ होता है, "कैसे ...!" (या किस प्रकार) या "हाय," जो विलाप के गीत को आरंभ करने का तरीका होता है। यह पहले, दूसरे और चौथे अध्याय की शुरुआत में उपयोग किया गया है। सेप्टुआजिन्ट में इसका नाम "विलाप" रखा गया है। इसकी विषय-वस्तु के कारण यहूदी परम्परा में भी इसे "विलापगीत" कहा जाता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: इस पुस्तक का मुख्य विषय विलाप है जो पापी यहूदा पर आये हुये दु:खों के कारण और पवित्र नगर और मंदिर के दयनीय विनाश के कारण किया गया। परमेश्वर ने यहूदा के पाप के कारण जिस दण्ड को भेजने की प्रतिज्ञा की थी, वह आ चुका है। इसमें से दूसरा मुख्य विषय पापों के लिये दण्ड निकलता है। इस प्रकार, भविष्यद्वक्ता उस दण्ड पा रहे राष्ट्र से निवेदन करता है कि वे यह पहचाने कि परमेश्वर उन्हें दण्ड देने में न्यायी और धर्मी है, और यह भी कि वे पश्चाताप की आत्मा के साथ अपने आप को परमेश्वर की दया के प्रति समर्पित करें।

मुख्य शब्द: इस पुस्तक के मुख्य विषय और बनावट को देखते हुये इसका मुख्य शब्द *रोना-पीटना* या *विलाप* है।

मुख्य विचार - ***शोक:*** पाप परमेश्वर के हृदय को शोकित करता है। पाप हमें परमेश्वर की संगति से अलग कर देता है, और हमें आशीष, सुरक्षा और सुविधा देने की उसकी जो योजना है उसे रोक देता है; परमेश्वर से हुई दूरी के कारण हमारे हृदयों में उपयुक्त तरीके से भग्नहृदय का शोक उत्पन्न होना चाहिये, ऐसे कि हमें इतना दीन-दु:खी बना दे कि सहज ही और सच्चाई से पश्चाताप उत्पन्न हो।

यह मनुष्य का घमण्ड और अड़ियलपन ही है, जैसा कि यहूदियों के इतिहास में दिखाई देता है, जो हमें पश्चाताप करने से रोकता है और अपनी पापमय दशा में संतुष्ट रखता है। शोक सच्चे पश्चाताप का महत्वपूर्ण और आवश्यक चिन्ह है। यदि हमने पाप किया हैं तो याकूब की पुस्तक हमें प्रोत्साहन देती है "परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा। हे पापियों; अपने हाथ शुद्ध करो; और है दुचित्ते लोगों, अपने हृदय को पवित्र करो। दु:खी होओ, और शोक करो, और रोओ; तुम्हारी हँसी शोक में, और तुम्हारा आनंद उदासी में बदल जाए। प्रभु के सामने दीन बनो तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा" (याकूब 4:8-10)।

मुख्य पद: 2:5-6; 3:21-24

विलापगीत में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: विलापगीत में दो मुख्य तत्व ऐसे हैं जो मसीह का चित्रण करते हैं -

1) वह उसका चित्रण एक दु:खी पुरुष के रूप में करती है जिसकी दु:ख से जान-पहचान थी, जो सताया गया, तुच्छ जाना गया और शत्रुओं के द्वारा उसका मजाक उड़ाया गया (1:12; 3:19;

2:15-16; 3:14; 30)।

2) यिर्मयाह का यरूशलेम के विनाश पर विलाप करना भी संभवत: मसीह का चित्रण है: मसीह यरूशलेम के लिए रोया (देखिए मत्ती - 23:37-38)

रूपरेखा -

1) यरूशलेम का विनाश (1:1-22)
2) परमेश्वर का अपने लोगों पर क्रोध (2:1-22)
3) व्याकुल भविष्यद्वक्ता (3:1-66)
4) यरूशलेम के हारे हुए लोग (4:1-22)
5) पुन:स्थापना के लिए प्रार्थना (5:1-22)

यहेजकेल - वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ

लेखक: लेखक यहेजकेल याजक, बुजी का पुत्र, है; जिसने अपनी भविष्यद्वक्ता होने की बुलाहट को बेबीलोन की बन्धुआई में पाया (1:1-3)।

समय: 593 से 571 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: यशायाह और यिर्मयाह के समान ही यहेजकेल की पुस्तक को भी उसका नाम उसके लेखक के कारण मिला है, यहेजकेल, जिसका इब्रानी अर्थ होता है: "परमेश्वर सामर्थ देता है" या "परमेश्वर द्वारा समर्थी किया गया।"

मुख्य विषय और उद्देश्य: यहेजकेल बेबीलोन की बंधुआई के दौरान भविष्यद्वक्ता था। उसने इस्त्राएलियों की शीघ्र ही पलिस्तिन लौटने की झूठी आशा को दूर करने का और उन्हें उनके प्रिय यरूशलेम के दु:खभरे विनाश के समाचार को सुनने के लिए तैय्यार करने का प्रयास किया।

उसका संदेश सारे भविष्यद्वक्ताओं में सर्वाधिक आत्मिक था, क्योंकि उसका अधिक संबंध परमेश्वर के व्यक्तित्व से है। उसने राष्ट्र के सर्वाधिक अंधकारमय समय में प्रचार किया। लोग उसकी या उसके संदेश की ओर ध्यान नहीं देंगे इसलिये उसने एक नई पद्धति का सहारा लिया। लोगों को दृष्टांत बोल कर बताने के बजाय उसने उन्हें अभिनय करके प्रस्तुत किया (24:24)। यहेजकेल परमेश्वर की महिमा का भविष्यद्वक्ता है।

मुख्य शब्द: "जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ" ये शब्द 63 बार आये हैं। दूसरे विशिष्ट वाक्यांश जो दोहराए गए हैं वे हैं, "यहोवा का वचन पहुँचा" (50 बार) और "यहोवा का तेज" (10 बार)

मुख्य विचार - ***महिमा या तेज:*** परमेश्वर (यहोवा) के स्वाभाविक गुणों में एक गुण उसकी महिमा या तेज है। यह इतना शक्तिशाली गुण है कि परमेश्वर उसे इस पृथ्वी पर देखे जा सकने वाले तरीके से सीमित मात्रा में ही प्रगट करता है, अन्यथा समस्त मनुष्यजाति तबाह हो जाएगी। बाइबल का कोई भी व्यक्ति जब कभी परमेश्वर की महिमा की झलक को पाता है, उसका जीवन मृत्यु के खतरे में आता हैं। इन व्यक्तियों के अनुभवों पर ध्यान दीजिये: अब्राहम (निर्ग 33:21-23), मूसा (निर्ग 40:34-35) और सुलेमान और याजक (2 इति. 7:1-3)। मनुष्य का शरीर परमेश्वर की महिमा की शक्ति को सहन नहीं कर सकता; जब आत्मिक और भौतिक क्षेत्र एक दूसरे के आर-पार होते हैं तब भौतिक जगत में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। इन उदाहरणों को देखिये: मसीह का रूपांतरण (मत्ती 17:1-3); यीशु की गिरफ्तारी (योहन्ना 18:5); यीशु का पुनरुत्थान (मत्ती 28:4) और दमिश्क के मार्ग पर शाऊल का यीशु मसीह से सामना (प्रेरितों 9:4)। हमें दीनता पूर्वक स्मरण रखना है कि मात्र इसलिए कि हम परमेश्वर की महिमा और महानता को हमेशा देख नहीं पाते, इसका अर्थ यह नहीं है कि उसका अस्तित्व नहीं है। एक दिन यीशु के नाम से प्रत्येक घुटना टिकेगा जब उसकी महिमा प्रगट होगी (फिलि. 2:9-11)।

मुख्य अध्याय: अध्याय 36-37 उन आशीषों के बारे में बताते हैं जो इस्राएल के पहाड़ों पर आने वाली हैं और उसी के आगे इस्राएल की पुन:स्थापना की आशा का वर्णन है जो उस सुखी हड्डीयों की घाटी के दृष्टांत

में दी गई है, जिसमें इस्राएल की पुन:स्थापना की प्रक्रिया की स्पष्ट रूपरेखा है। अध्याय 38 और 39, विश्व के बड़े युद्ध का पूर्वानुमान करते हैं जो इस्राएल की पहाड़ियों पर होगा, परंतु इस्राएल के शत्रु परमेश्वर के द्वारा पराजित कर दिए जाएंगे।

मुख्य पद: 36:24-30; 36:33-35

मुख्य लोग: यहेजकेल

यहेजकेल में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: मसीह को एक बहुत ही कोमल डाली के रूप में चित्रित किया गया है, जिसे अति ऊँचे और बुलंद पर्वत पर रोपित किया जाएगा (17:23-24); यह उस चित्र के समान है जो एक शाखा के रूप में यशायाह में (यशा. 11:1), और यिर्मयाह में (23:5; 33:15) और जकर्याह में (3:8; 7:12) दिया गया है। यहेजकेल मसीह को एक राजा के रूप में भी बताता है जिसे राज्य करने का अधिकार है और जो अच्छे चरवाहे के रूप में सेवा करेगा (34:11-31)।

रूपरेखा:

1) घेराबंदी के पहले; अध्याय 1-24 : यहेजकेल ने यरूशलेम के विनाश के 6 वर्ष पहले भविष्यवाणी करना आरंभ किया और उसके पूरा होने तक दृढ़ता के साथ उसकी घोषणा करता रहा।
2) घेराबंदी; अध्याय 25-32 : उसके बाद उसकी भविष्यवाणियां यहूदा के शत्रुओं के संबंध में और मूर्तिपूजक जातियों का पराभव करने के विषय में हैं।
3) घेराबंदी के बाद; अध्याय 33-48 : अंत में यहूदा का पुन: सुधार और पुन: स्थापना का चित्रण है।

दानिय्येल - इस्राएल की अंतिम नियति

लेखक: यहेजकेल के समान दानिय्येल भी बेबीलोन में यहूदी बंधुआ था। दानिय्येल जब युवा ही था तब नबूकदनेस्सर के द्वारा, 605 ईसा पूर्व में, बंधुआ बनाकर बेबीलोन ले जाया गया था। वहाँ वह नबूकदनेस्सर और दारा के राजसभा में राजनितिज्ञ बन गया। जबकि उसने भविष्यद्वक्ता का पद नहीं लिया था, तथापि मसीह ने उसे एक भविष्यद्वक्ता के रूप में पहचाना (मत्ती 24:15; मरकुस 13:14)। दानिय्येल को स्वप्नों का भविष्यद्वक्ता कहा गया क्योंकि परमेश्वर ने स्वप्नों के अपने रहस्यों को उस पर प्रगट किया।

समय : 537 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: इस पुस्तक के लेखक के नाम पर इसका नाम रखा गया। दानिय्येल के लिये जो इब्रानी शब्द है उसका अर्थ होता है "परमेश्वर न्यायी है" या "परमेश्वर मेरा न्यायी है।"

मुख्य विषय और उद्देश्य: इस पुस्तक का मुख्य विषय है एक सच्चे परमेश्वर के रूप में परमेश्वर की संप्रभुता, जो विद्रोही शक्तिशाली देशों का न्याय करता है और उन्हें नष्ट कर देता है और जो अपने वाचा के लोगों को, उनके उसमें बनाये हुये दृढ़ विश्वास के अनुसार, विश्वासयोग्यता से छुड़ायेगा। दानिय्येल की पुस्तक, अन्यजातिय विश्वशक्तियों के वर्चस्व के दौरान और उसके बाद इस्राएल के लिए परमेश्वर की संप्रभुतापूर्ण योजना को प्रगट करते हुये, बन्धुआई में गए हुए यहूदियों को उत्साहित करने के लिए लिखी गई थी।

मुख्य शब्द: राजा, राज्य, दर्शन, स्वप्न

मुख्य विचार - *संरक्षण:* जब इस्राएल राष्ट्र पर न्याय आया तब सारे लोगों को, चाहे वे धार्मिक थे या दुष्ट, कष्ट सहना पड़ा। दानिय्येल और उसके मित्र भी पकड़े गए जैसे उनके अन्य पड़ोसी पकड़े गए, परंतु उनके हृदय अपने परमेश्वर में विश्वास से भरे हुए थे। दानिय्येल के आरंभ के अध्याय, किसी भी परिस्थिति में धर्मी लोगों का संरक्षण करने वाली परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करते हैं। जब उनके राष्ट्र पर ईश्वरीय दण्ड आया हुआ था, तब दानिय्येल और तीन इब्री बच्चे परमेश्वर के द्वारा आशीषित हुये और बचाये गये, यहां तक की मौत के मुंह से भी छुड़ाए गए। दानिय्येल के अंतिम अध्यायों में यह देखा जा सकता है कि यद्यपि इस्राएल राष्ट्र पर ईश्वरीय दण्ड आया हुआ था तौभी परमेश्वर उन्हें सुरक्षित रखता है और आश्चर्यजनक तरीके से उन्हें पुन: स्थापित करेगा। इस बात का प्रमाण हम वर्तमान इतिहास में देख चुके हैं, जब इस्राएली लोग दुनियाँ की छोर से एकत्रित किए गए और सन् 1948 में उन्हें पलिस्तिन देश में अधिकार दिया गया। परमेश्वर का, यहूदियों की सुरक्षा करने का कार्य मनुष्य इतिहास के अंत तक चलता रहेगा; पुन: एक बार दिखाई देगा कि परमेश्वर ही अकेला उनका अलौकिक रूप से रक्षा करने वाला है।

मुख्य पद: 2:20-22; 2:44; 7:14

मुख्य लोग: दानिय्येल, शद्रक, मेशक, अबेदनगो। नबूकदनेस्सर, बेलशस्सर, कुस्त्रु ये फारस के राजा और मिकाईल स्वर्गदूत जो अध्याय 10 में दानिय्येल की सहायता करता है।

दानिय्येल में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: दानिय्येल की पुस्तक में आने वाले मसीह का एक मुख्य चित्रण यह है कि वह काटा जाएगा - 9:25-26 (यह क्रूस की ओर संकेत है)। तथापि, मसीह

का और भी चित्रण किया गया है: एक बहुत बड़े पत्थर के रूप में जो इस संसार के राज्यों को चकनाचूर कर देगा (2:34,45); मनुष्य का पुत्र (7:13) और अति प्राचीन (7:22)।

रूपरेखा -

1. दानिय्येल का व्यक्तिगत जीवन (1:1-2:3)
2. दानिय्येल का सार्वजनिक जीवन--अन्यजातियों के समय का चित्रण (2:4-6:28)
3. दानिय्येल को प्राप्त भविष्य से संबंधित दर्शन--राष्ट्र का भविष्यसूचक इतिहास (अध्याय 8-12)

भाग 5 - छोटे भविष्यद्वक्ता

शीर्षक: अंग्रेजी बाइबल में इन 12 पुस्तकों को, सब को मिलाकर "छोटे भविष्यद्वक्ता" यह शीर्षक दिया गया है। इस शीर्षक का प्रारंभ ऑगस्टीन के समय में हुआ (इसवी सन चौथी शताब्दी के अंत में), परंतु ये मात्र इस बात में छोटे हैं कि ये यशायाह, यिर्मयाह और यहजेकेल (जो बड़े भविष्यद्वक्ता कहलाते हैं) इनकी भविष्यवाणियों से बहुत अधिक संक्षिप्त हैं।

छोटे भविष्यद्वक्ताओं की साहित्यिक विशेषता:

छोटे भविष्यद्वक्ताओं के एक-समान मुख्य विषय:

1. जातियों के पाप के कारण नजदीक आने वाले न्याय की चेतावनी,
2. पाप का विवरण
3. आने वाले न्याय का विवरण,
4. पश्चाताप के लिए बुलावा,
5. भविष्य में किये जाने वाले छुटकारे की प्रतिज्ञा

भविष्यद्वक्ता की पुस्तक की रूपरेखा बनाने के लिए एक परिचयात्मक या अंतिम निर्णायत्मक सूत्र उपयोग में लाया जाता है, जैसे कि, "यहोवा यों कहता है..."

छोटे भविष्यद्वक्ताओं का घटनाओं के क्रम में सिंहावलोकन:

बाइबल में उनका क्रम:

1. होश	3 आमोस	5. योना	7. नहुम	9. सपन्याह	11. जकर्याह
2. योएल	4. ओबद्याह	6. मीका	8. हबक्कूक	10 हाग्गै	12. मलाकी

निर्वासन तथा इस्राएल और यहूदा के राज्यों के अनुसार उनका समूह बनाया जाना:

समूह	पुस्तक	समयानुमान
निर्वासन के पहले इस्राएल के भविष्यद्वक्ता	योना (निनवे में उपदेश दिया)	780-850
	आमोस	765 -750
	होशे	755 - 715
यहूदा के भविष्यद्वक्ता	ओबद्याह	840
	योएल	835 - 796
	मीका	740 - 690
	नहूम	630 - 612
	हबक्कूक	606 - 604
	सपन्याह	625
निर्वासन के बाद के भविष्यद्वक्ता वापस आए हुए बचे हुए लोगों के भविष्यद्वक्ता	हाग्गै	520
	जकर्याह	515
	मलाकी	430

होशे - दृढ़ प्रेम

लेखक: जैसा कि पद 1 में घोषित है, इसका लेखक होशे है जो बेरी का पुत्र और गोमेर का पति है।

समय: होशे का भविष्यद्वक्ता होने का कार्यकाल 784 से 723 ईसा पूर्व तक रहा।

पुस्तक का नाम: पुस्तक का नाम इसके लेखक होशे के नाम पर रखा गया। यह बहुत रुचिकर है कि होशे, यहोशु और यीशु ये सारे नाम एक ही इब्रानी शब्द *"होशिया"* से निकले हुए हैं जिसका अर्थ है "उद्धार" है। परमेश्वर के संदेशवाहक की भूमिका में होशे राष्ट्र के लिये उद्धार का प्रस्ताव प्रस्तुत करता है, यदि वे अपनी मूर्तिपूजा से मन फिराते हैं और परमेश्वर की ओर लौटते हैं।

मुख्य विषय और उद्देश्य: इस्राएल के लगातार विश्वासघात के बावजूद, उनके प्रति परमेश्वर का दृढ़ या कभी खत्म न होने वाला प्रेम दिखाने के लिए होशे की पुस्तक लिखी गई थी। होशे के वैवाहिक अनुभव के माध्यम से, यह पुस्तक हमें प्रेमी और दयापूर्ण परमेश्वर का हृदय दिखलाती है, जो अपने लोगों को अपनी स्वयं की पहचान देने के साथ-साथ उन्हें उन सारी आशीषों को देने के लिए लालायित रहता है जो उन सब को मिलती हैं जो उसे घनिष्टता से जानते हैं। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, होशे का मुख्य विषय उत्तरी राज्य के विरुद्ध एक कटु गवाही है, क्योंकि यह राज्य परमेश्वर की वाचा के द्वारा प्राप्त रिश्ते के प्रति विश्वासयेग्य नहीं रहा, जैसा कि उसकी व्यापक अनैतिक भ्रष्टता में व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित था। इस प्रकार से, भविष्यद्वक्ता, अपने देशवासियों से पश्चाताप करवाने का तथा टूटे हृदय के साथ अपने धीरजवन्त और सदा प्रेम करने वाले परमेश्वर के पास वापस लौटा ले आने का प्रयत्न करता है।

मुख्य शब्द: वेश्या (10) बार; और छिनालपन/वेश्यागमन (9 बार)

मुख्य अध्याय: अध्याय 4 मुख्य अध्याय है। इस अध्याय में हम देखते हैं कि इस्राएल ने किस प्रकार व्यभिचार के रास्ते पर चलते हुए परमेश्वर के सत्य के ज्ञान को छोड़ दिया और याजक होने के लिए उनका तिरस्कार कर दिया गया।

मुख्य पद: 3:1; 4:1; 4:6; 11:7-9

होशे में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: होशे में मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में (11:1 की तुलना मत्ती 2:15 के साथ कीजिये); अपने लोगों के एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में (13:4 की तुलना यूहन्ना 14:6 के साथ कीजिये); छुडौती देकर हमें मृत्यु से छुड़ाने वाले के रूप में (13:14 की तुलना पहला कुरिंथि 15:55 के साथ कीजिये); महान दया के साथ हम से प्रेम करने वाले के रूप में (11:4) और जो उसके पास लौट कर आते हैं उन्हें चंगा करने वाले के रूप में (6:1) किया गया है।

रूपरेखा -

1) पता (1:1)
2) अनैतिक पत्नी (1:2-3:5)
3) पापी लोग (4:1-13:8)
4) इस्राएल के लिये अंतिम आशीष और महिमा (13:9-14:9)

योएल - यहोवा के दिन का आना

लेखक: जैसा कि 1:1 में संकेत दिया गया है, इसका लेखक योएल है।

समय: ईसा पूर्व 835 और 805 के मध्य

पुस्तक का नाम: योएल के लिये प्रयुक्त इब्रानी शब्द का अर्थ होता है: "यहोवा परमेश्वर है"। योएल के संदेश को देखते हुये यह नाम बहुत ही उपयुक्त है, जो परमेश्वर के सार्वभौमिक/परमप्रधान होने पर जोर देता है कि वह ऐसा परमेश्वर है जो इतिहास का परमेश्वर है, सारी सृष्टि और जातियां उसकी सामर्थ और नियंत्रण के अधिनस्त हैं।

मुख्य विषय और उद्देश्य: योएल, यहूदा का भविष्यवक्ता था जिसने उन्हें टिड्डियों की भयानक महामारी के समय लिखा। उसने इसकी तुलना आने वाले न्याय के अवसरों के साथ की। उसने न्याय को संबंधित करते हुये "यहोवा का दिन" (या "प्रभु का दिन") का 5 बार उपयोग किया है।

'आत्मिक छुटकारा' यह योएल की पुस्तक की महान केंद्रीय प्रतिज्ञा है। योएल को, लोगों को यह बताने का विशेषाधिकार मिला कि परमेश्वर सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलेगा (2:28; 2:32; 3:18)। यह पेन्तिकुस्त के दिन पूर्ण हुआ (प्रेरितों 2:16), और यह लगातार इन दिनों में पूर्ण हो रहा है, जब कि परमेश्वर का आत्मा अपने लोगों में ताजगी भरता है और उनका अभिषेक करता है।

मुख्य शब्द: इस पुस्तक की चेतावनी को ध्यान में रखते हुए इसका मुख्य वाक्यांश "यहोवा का दिन" है।

मुख्य अध्याय: अध्याय 2 मुख्य अध्याय है, इसमें यह प्रतिज्ञा की गई है कि परमेश्वर इस्राएल पर उण्डेले जाने वाले दण्ड में मात्र तब ही नरम पड़ेगा यदि वह परमेश्वर के पास लौट आती है (2:13-14)। इसके बाद, परमेश्वर का आत्मा के उंडेले जाने, आकाश में और पृथ्वी पर चमत्कार दिखाये जाने, यहोवा के दिन के आने और यहोवा से प्रार्थना किये जाने की भविष्यवाणियों के द्वारा राष्ट्र को दिये जाने वाले छुटकारे की प्रतिज्ञा की गई है।

मुख्य पद : 2:11, 2:28-32

योएल में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: योएल में मसीह को वह दर्शाया गया है जो पवित्र आत्मा देगा (2:28 की तुलना यूहन्ना 16:7-15 और प्रेरितों 1:8 से कीजिये), जो जातियों का न्याय करता है (3:2,12), और जो इस्राएल का शरणस्थान और दृढ़ गढ़ है (3:16)।

रूपरेखा -

1) टिड्डियों की महामारी (1:1-20)

2) यहोवा का दिन (2:1-3:8)

3) यहोवा के दिन का अवलोकन, और संपूर्ण राज्य की आशीष (3:9-21)

आमोस - सुविधाओं के दुरुपयोग के विरुद्ध न्याय

लेखक: यह पुस्तक आमोस के द्वारा लिखी गई थी जो भेड़-बकरियों का चरवाहा और गूलर के वृक्षों को छांटने वाला था (1:1; 7:14)। वह बैतलहम के पास स्थित तकोआ नामक एक छोटे नगर का रहने वाला था। यद्यपि वह किसान था, तौभी परमेश्वर के वचन से भलीभांति परिचित था।

समय: 760 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: *आमोस* नाम का अर्थ होता है "बोझ" या "बोझ उठाने वाला।" यह नाम उस बोझ के लिए एकदम उपयुक्त शब्द है जो उसे दिया गया था। उसे यह संदेश सुनाने का बोझ दिया गया था कि वह लोगों के लालच, अन्याय, हिंसा-मार-धार और स्व-धार्मिकता के विरुद्ध चेतावनी दे।

मुख्य विषय और उद्देश्य: आमोस का संदेश अधिक रूप से उत्तरी राज्य के लिए था। वह परमेश्वर का इतना भय मानता था कि वह और किसी से बिल्कुल भी नहीं डरता था। अमोस ने, छः पड़ोसी देशों पर परमेश्वर के न्याय की घोषणा के साथ अपने प्रचार कार्य का आरंभ किया। उसके बाद उसका ध्यान नजदीक अपने लोगों की ओर आया और उसने यहूदा और इस्राएल के संपूर्ण राष्ट्र के विषय में भविष्यवाणी की।

आमोस के तरीके की प्रमुख विशेषता में आता है उसका प्राकृतिक वस्तुओं और कृषि व्यवसाय की ओर संकेत करना, और यह उसके पहले के जीवन को देखते हुये बहुत ही अपेक्षित है।

मुख्य शब्द: मुख्य शब्द "अपराध" है। यह इस पुस्तक के एक मुख्य तत्व, "इस्राएल के पापमय तरीकों के कारण उस पर परमेश्वर का दण्ड" पर प्रकाश डालता है। इस पुस्तक का मुख्य वाक्यांश है: ".... मैं उसका दण्ड न छोडूंगा" (1:3,6,9,11,13, 2:1,4,6)

मुख्य अध्याय: अध्याय 9 मुख्य है क्योंकि इसमें इस्राएल के पुनर्निर्माण का वर्णन है।

मुख्य पद: 3:1-2; 4:11-12; 8:11-12

आमोस में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: आमोस ने मसीह को दाऊद के राजवंश को फिर से खड़ा करने वाले के रूप में (9:11) और अपने लोगों का पुनर्निर्माण करने वाले के रूप में (9:11-15) प्रस्तुत किया गया है।

रूपरेखा -

1) परिचय; लेखक और मुख्य विषय (1:1-2)

2) आठ न्याय (1:3-2:16)

3) उपदेश (3:1-6:14)

4) पाँच दर्शन (7:1-9:10)

5) इस्राएल के पुनर्निर्माण के संबंध में पाँच प्रतिज्ञाएं (9:11-15)

ओबद्याह - काव्यमय न्याय

लेखक: लेखक यहूदा का एक अज्ञात भविष्यद्वक्ता है जिसका नाम ओबद्याह था।

समय: यह पुस्तक लगभग 848 से 840 ईसा पूर्व के बीच लिखी गई थी। कुछ विद्वानों के तर्कों के अनुसार यह कुछ आगे के समय में, लगभग 587 ईसा पूर्व में लिखी गई।

पुस्तक का नाम: इब्रानी शब्द ओबद्याह का अर्थ "यहोवा का सेवक या आराधक" होता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: ओबद्याह पुराना नियम में सब से छोटी पुस्तक है--मात्र 21 पद हैं। यह एदोम के विरुद्ध भविष्यवाणी है। इसमें दो मुख्य विषय हैं: अभिमानी और विद्रोही का विनाश; और नम्र और दीन का छुटकारा।

एदोमी उस एसाव के वंश से थे जिसने अपने जन्मसिद्ध अधिकार को तुच्छ जाना था। एदोम लगातार इस्राएलियों का शत्रु बना रहा। एदोम राष्ट्र का नाश वैसे ही हो गया जैसे ओबद्याह ने चेतावनी दी थी। ओबद्याह ने, अन्य और भविष्यद्वक्ताओं के समान, यहोवा के दिन के आने की और मसीह का राज्य स्थापित होने की भविष्यवाणी की थी।

घटनाओं के कालक्रम के अनुसार, ओबद्याह छोटे भविष्यद्वक्ताओं में प्रथम है, और "यहोवा का दिन" इस सूत्र को काम में लाने वाला भी पहला है।

मुख्य शब्द: एदोम और एसाव को एक साथ लें तो यह नौ बार आया है।

मुख्य पद : 1:10, 1:15, 1:21

ओबद्याह में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: इस पुस्तक में मसीह को राष्ट्रों के न्यायी के रूप में (वचन 15-16), इस्राएल को छुड़ाने वाले के रूप में (वचन 17-20) और राज्यों के स्वामी के रूप में (वचन 21) देखा गया है।

रूपरेखा -

1) एदोम पर दण्ड आने की भविष्यवाणियाँ - (वचन 1-9)
2) एदोम पर दण्ड का आधार (वचन 10-14)
3) दण्ड का समय (वचन 15)
4) दण्ड का परिणाम (वचन 16-18)
5) इस्राएल का छुटकारा (वचन 19-21)

योना - परमेश्वर की इच्छा से दूर भागना

लेखक: अमित्तै का पुत्र योना इस पुस्तक का लेखक है। वह इस्राएल के उत्तरी राज्य के गलील से भविष्यद्वक्ता था।

समय: 2 राजाओं 14:27 में योना इस्राएल के द्वितिय यरोबोम के राज्यकाल (793-753 ईसा पूर्व) से संबंधित है। योना ने एलीशा के बाद और आमोस और होशे के ठीक पहले सेवकाई की। नीनवे का पश्चाताप संभवत: अशूरदान तृतीय के शासनकाल (773 से 755 ईसा पूर्व) में हुआ।

पुस्तक का नाम: इब्रानी में 'योना' शब्द का अर्थ 'कबूतर' होता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: योना बहुत ही स्पष्ट रूप प्रदर्शित करता है कि इब्रानियों का परमेश्वर (1) पूरे संसार की चिंता करता है और (2) प्रकृति पर तथा मनुष्यों के सारे मामलों पर प्रभुत्व रखता है। योना प्रदर्शित करता है कि "उद्धार यहोवा ही से होता है" (2:9); और यह कि परमेश्वर का उद्धार करने का अनुग्रहकारी प्रस्ताव उन सारे लोगों तक पहुंचता है जो पश्चाताप करते हैं उसकी ओर फिरते हैं। योना की पुस्तक यह भी दिखाती है कि हमारे पूर्वाग्रह, जैसा कि योना का अपनी यहूदी जाति के प्रति ही प्रेम था, हमें परमेश्वर की इच्छा पर चलने से रोक सकते हैं।

इस पुस्तक में दो घटनाएं हैं जो बहुत महत्वपूर्ण हैं: एक बड़े से मच्छ के द्वारा योना को निगल लिया जाना और बड़ी मूर्तिपूजक नीनवे नगरी का एक अनजान विदेशी प्रचारक के द्वारा कुछ ही दिनों में परिवर्तन हो जाना।

मुख्य शब्द: परमेश्वर के प्रभुत्व को दर्शाने के लिये बार-बार प्रयोग किये गये शब्द यह दिखाते हैं कि परमेश्वर के द्वारा कुछ तैय्यार किया गया। इस पुस्तक में परमेश्वर ने चार बातें तैय्यार कीं (1) एक बड़ा-सा मच्छ - 1:17; (2) एक रेंड का पेड़ - 4:6; (3) एक कीड़ा - 4:7; और लू वाली पुरवाई - 4:8। परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ता की चिंता कर रहा था।

मुख्य अध्याय: तीसरा अध्याय मुख्य है क्योंकि इससे इतिहास की एक सब से बड़ी आत्म-जागृति का वर्णन है।

मुख्य पद: 2:8-9; 3:10; 4:2

योना में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: इस पुस्तक में मसीह के पुनरुत्थान का चिन्ह दिखाया गया है (मत्ती 12:40)। योना अपने आप को मसीह का एक उदाहरण इन बातों में दिखाता है कि वह भेजा गया, वह मृत्यु के तीन दिन बाद जिलाया गया, वह अन्यजातियों के पास उद्धार लेकर गया।

रूपरेखा -

1) योना का भाग जाना (1:1-17)

2) योना का प्रार्थना करना (2:1-10)

3) योना का प्रचार करना (3:1-10)

4) योना का सीखना (4:1-11)

मीका - परमेश्वर के समान कौन है?

लेखक: मीका यह मीकायाह नाम का छोटा रूप है जिसका अर्थ होता है, "यहोवा के समान कौन है?" मीका ने 7:18 में इस सत्य को जताया जब उसने कहा, "तेरे समान ऐसा परमेश्वर कहां है?" यिर्मयाह के दिनों में हाकिमों ने, यिर्मयाह के द्वारा दिये गये जातियों पर आनेवाले न्याय के संदेश का बचाव करने के लिये मीका का उल्लेख किया और मीका 3:12 का उद्धरण दिया (यिर्म 26:18)।

समय: मीका यशायाह का समकालीन था और उसने योताम (750-732), आहाज (736-716) और हिजकिय्याह (716-687) के दिनों में भविष्यवाणी की (1:1)।

पुस्तक का नाम: मीका भविष्यद्वक्ता के नाम पर इस पुस्तक को शीर्षक दिया गया।

मुख्य विषय और उद्देश्य: मीका ने दिखाया कि किस प्रकार लोग उस वाचा की शर्तों के अनुसार जीने में असफल हुये थे जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के साथ बांधा था कि आज्ञापालन करने पर आशीष मिलेगी (व्यवस्थाविवरण 28:1-14)।

मीका ने इस्राएल और यहूदा पर अन्धेर और अत्याचार; न्यायियों, भविष्यद्वक्ताओं और याजकों के मध्य घूसखोरी; और लालच, धोखाधड़ी, घमण्ड और हिंसा जैसे पापों का दोष लगाया। मीका ने यरूशलेम पर और इस्राएल के नगरों पर आने वाले दण्ड की घोषणा की। तथापि उसने आशा के शब्द बोलने की भी शीघ्रता की। उसने विनाश और दण्ड के आगे महिमा के दिनों की ओर भी देखा जब मसीह राज्य करेगा-- मसीह आएगा (4:8); वह बैतलहम में जन्म लेगा (5:2-4)।

मुख्य शब्द: सुनो; उजाड़, नाश, खण्डहर, इकट्ठे करना

मुख्य अध्याय: निसंदेह अध्याय 6 और 7 मीका की पुस्तक के मुख्य अध्याय हैं।

मुख्य पद: 1:5-9; 6:8; 7:18-20

मीका में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: मीका ने मसीह को याकूब के परमेश्वर (4:2), जाति-जाति के न्यायी (4:3) और बैतलहम में पैदा होने वाले अधिपति के रूप में प्रस्तुत किया (देखिये 5:2 को मत्ती 2:1-6 के साथ)। याजकों और शास्त्रियों ने मीका 5:2 को हेरोदेस के प्रश्न के उत्तर में दोहराया, जब उसने मसीह के जन्म-स्थान के विषय में पूछा।

रूपरेखा -

1) परिचय (1:1)

2) प्रथम समाचार : सामरिया और यहूदा का न्याय (अध्याय 1-2)

3) दूसरा समाचार : विनाश के बाद छुटकारा (अध्याय 3:5)

4) तीसरा समाचार : पाप के झिड़की और आशीष की प्रतिज्ञा (अध्याय 6-7)

नहूम - नीनवे का नाश

लेखक: 1:1 में नहूम जो कुछ बताता है उसे छोड़कर, कि यह पुस्तक नहूम के "दर्शन की पुस्तक है," हमें इस भविष्यद्वक्ता के विषय में और कुछ भी मालूम नहीं होता। नहूम का अर्थ "सांत्वना" है, परंतु उसका संदेश निश्चय ही उस अश्शूर के लिये शांति का समाचार नहीं था जिस ने नीनवे पर कब्जा कर रखा था। तथापि वह संदेश यहूदा को शांति पहुँचाने वाला था।

समय: नहूम ने अपनी भविष्यवाणी ईसा पूर्व 773 से 607 के बीच की थी।

पुस्तक का नाम: अन्य सभी छोटे भविष्यद्वक्ताओं के समान ही इस पुस्तक का नाम भी भविष्यवाणी करने वाले भविष्यद्वक्ता के नाम पर पड़ा।

मुख्य विषय और उद्देश्य : नहूम का मात्र एक विषय है - नीनवे का नाश। डियोडोरस सायक्यूलस नामक इतिहासकार के अनुसार, लगभग एक शताब्दी पश्चात इस नगर का नाश ठीक वैसे ही हो गया जैसे इन वचनों में कहा गया था।

इसका मुख्य नैतिक विषय यह है - 'यहोवा की पवित्रता: जो पाप के साथ यही बर्ताव करेगी कि अवश्य ही उसका दण्ड दिया जाये।'

मुख्य शब्द: मुख्य विषय साफ-साफ नीनवे को दण्ड दिया जाना यही है, परंतु इससे संबंधित शब्द जो स्पष्ट है वह है "बदला" जो अध्याय एक के आरंभ में तीन बार पाया गया है (1:2)।

मुख्य विचार - ***पतन:*** भविष्यद्वक्ता योना के समय में नीनवे नगर ने वास्तविक आत्मजागृति का अनुभव किया था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि तब राष्ट्र और लोगों ने सचमुच पश्चाताप किया था। तथपि, पाप की ओर पुन: लौटने का अर्थ यही था कि एक बार फिर परमेश्वर का दण्ड उन पर आयेगा। नीनवे के इतिहास का उदाहरण स्पष्ट है - अपने पापों के लिए पश्चाताप किया जा सकता है, और पिछले पापों के लिए क्षमा मिल सकती है, परंतु उस समय भविष्य में किए जाने वाले पापों के लिए परमेश्वर की ओर से कोई दया-कृपा नहीं होती है। इसलिए फिलिप्पियों 2:12-13 में परमेश्वर के लोगों को निर्देश दिया गया है, "डरते और काँपते हुए अपने-अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।" अपने स्वयं के हृदय को परखना और पापों के लिये पश्चाताप करना यह जीवनशैली बन जानी चाहिये, यह एक समय की ही घटना ना हो जाये कि कोई यह सोच ले कि परमेश्वर का अनुग्रह यूं ही मिल जायेगा (इब्रा. 18:28-30)।

मुख्य अध्याय: अध्याय 1 अपने आप में मुख्य इसलिये है कि यह नीनवे पर आने वाले परमेश्वर के दण्ड के आधार को प्रस्तुत करता है, कि यह उस पवित्र परमेश्वर की ओर से प्रतिफल है जो यद्यपि विलम्ब से क्रोध करने वाला है, तौभी सामर्थ्य में महान है और अपने शत्रुओं के प्रति क्रोध बचा रखता है।

मुख्य पद: 1:7-8; 3:5

नहूम में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: जबकि नहूम में मसीह से संबंधित कोई प्रत्यक्ष भविष्यवाणी नहीं हुई है, तौभी सारी भविष्यवाणियों में पाये जाने वाली मसीह-संबंधित विचारधारा को ध्यान

में रखते हुये, नहूम में मसीह को जलन रखने वाले परमेश्वर और अपने विरोधियों से बदला लेने वाले के रूप में देखा जाता है (1:2ख)।

रूपरेखा:

1) परिचय (1:1)

2) नीनवे पर परमेश्वर के दण्ड की भविष्यवाणी और निश्चितता (1:2-15)

3) नीनवे पर परमेश्वर के दण्ड का विवरण (अध्याय 2)

4) नीनवे पर परमेश्वर के दण्ड का कारण (अध्याय 3)

हबक्कूक - असमंजस का समाधान

लेखक: 1:1 और 3:1 में पहचाना गया है कि लेखक हबक्कूक है।

समय: ऐसे सुझाव दिये गये हैं कि ईसा पूर्व 605 में हुये बेबीलोन के आक्रमण के कुछ ही समय पहले, लगभग 606 ईसा पूर्व में, हबक्कूक ने भविष्यवाणियां की थी।

पुस्तक का नाम: इस पुस्तक का नाम इसके लेखक के नाम के अनुसार है। हबक्कूक का नाम इब्रानी भाषा के उस शब्द से है जिसका अर्थ "आलिंगन" होता है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: हबक्कूक ने प्रश्न किए और उसे अपने प्रश्नों के उत्तर मिले। "तू विश्वासघाती को क्यों देखता रहता?" इस प्रश्न पर चर्चा की गई। अपनी सारी कठिनाइयों में वह प्रार्थना करते हुये परमेश्वर के पास गया और धीरज के साथ उसके उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा (2:1)। ईमानदारी से की गई प्रार्थना के बाद परमेश्वर का तेज प्रगट हुआ (3:1-16)।

उसकी भविष्यवाणियों के निम्नलिखित उद्देश्य थे:

1) यह घोषणा करना कि यहोवा, जो यहूदा का संप्रभुत्व रखने वाला योद्धा है, बेबीलोन को यहूदा के विरुद्ध लाकर उसकी दुष्टता का न्याय करेगा।
2) यह घोषणा करने के लिए कि यहोवा, जो अपने लोगों का रक्षक है, उन लोगों को जीवित बनाये रखेगा जो उसमें विश्वास करते हैं।
3) यह घोषणा करने के लिए कि यहोवा, जो अपने लोगों का रक्षक है, एक दिन इस्राएलियों को बेबीलोन से छुटकारा दिलाएगा।
4) यह घोषणा करने के लिए कि यहोवा, जो यहूदा का संप्रभुत्व रखने वाला योद्धा है, एक दिन अधर्मी बेबीलोन को दण्ड देगा।

इस भविष्यवाणी का उद्देश्य यह था कि लोगों को, अप्रत्याशित रीति से होने वाली घटनाओं के मध्य, विश्वासयोग्यता से जीने के लिये तैयार करे। उन्हें अपनी आशा नहीं खोना था; उन्हें विश्वास में दृढ़ बने रहना था।

"धर्मी अपने विश्वास के द्वारा जीवित रहेगा" (2:4) इन शब्दों का रिफॉर्मेशन में बहुत बड़ा महत्व था। इन शब्दों का उद्धरण नया नियम में दिया गया है: रोमियों 1:17; गलातियों 1:11; और इब्रानियों 10:38

मुख्य शब्द: दो शब्द, उनके दोहराए जाने के कारण नहीं, परंतु पुस्तक की विषय-वस्तु के कारण मुख्य माने गए हैं। पहला शब्द है "क्यों," क्योंकि हबक्कूक समस्याओं को सुलझाने का कठिन प्रयत्न करता है; और दूसरा शब्द "विश्वास" है जैसे 2:4 में बताया गया है "धर्मी अपने विश्वास से जीवित रहेगा।"

मुख्य विचार - ***विश्वास:*** मनुष्य का नीतिवचन कहता है "कठिन परिस्थितियाँ मनुष्य को मजबूत बना देती है।" परीक्षाओं और विपरीत परिस्थितियों के समय हमारे विश्वास को परखने के लिए और विश्वास को मजबूत करने के लिये आते हैं। विश्वास, अनुकूल परिस्थितियों पर निर्भर नहीं होता है; विश्वास परिस्थितियों

से ऊपर उठता है। हमें अपना विश्वास अगुवों, सरकारों, पादरियों या किसी भी मनुष्य में नहीं रखना है; विश्वास मात्र परमेश्वर में रखना चाहिए। जब जीवन आसान लगता है तब परमेश्वर में विश्वास करना आसान लगता है, परंतु जब जीवन कठिन हो जाता है तब हमारे विश्वस को क्या हो जाता है? याद रखें, इब्रानियों का लेखक कहता है, 'विश्वास के बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है' (इब्रा 11:6)।

मुख्य अध्याय: हबक्कूक की पुस्तक आगे बढ़ते-बढ़ते अपने अंतिम तीन मुख्य पदों में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचती है (3:17-19)। रहस्य से निश्चयता की ओर, प्रश्नों से पुष्टि की ओर, शिकायत से आत्मविश्वास की ओर जाते हुये इसका आरंभ और अंत एक दूसरे से एकदम भिन्न दिखाई देता है। अध्याय 3 पूरी बाइबल में सब से अधिक तेजस्वी है और परमेश्वर की महिमा जो पहले के इतिहास में थी और आने वाले इतिहास में होगी उसे भविष्ययूचक रीति से बताता है।

मुख्य पद: 2:4,14; 3:17-19

हबक्कूक में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: एक बार फिर, सारी भविष्यवाणियों में पायी जाने वाली मसीह-संबंधित विचारधारा को ध्यान में रखते हुये, इस पुस्तक में मसीह का चित्रण एक उद्धार करने वाले के रूप में देखा जाता है। 3:13 और 18 में जो "उद्धार" शब्द तीन बार आया है, वह इब्रानी में वही मूल-शब्द है जिसमें से "यीशु" नाम निकला है (देखिए मत्ती 1:21)। इसी प्रकार, मसीह को "पवित्र" के रूप में देखा गया है (1:12 को 1 यूहन्ना 1:9 के साथ देखिये); धर्मी को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराने वाले के रूप में देखा गया है (2:4) और ऐसे जन के रूप में देखा गया है जो एक दिन पृथ्वी को "यहोवा की महिमा के ज्ञान से" ऐसी भर देगा "जैसे समुद्र जल से भर जाता है" (2:14)।

रूपरेखा -

1) हबक्कूक की समस्याएं (1:1-2:20)
   - क. हबक्कूक की पहली समस्या (1:1-4)
   - ख. परमेश्वर का पहला उत्तर (1:5-11)
   - ग. हबक्कूक की दूसरी समस्या (1:12-2:1)
   - घ. परमेश्वर का दूसरा उत्तर (2:2-20)
2) हबक्कूक के द्वारा स्तुति करना (3:1-19)
   - क. हबक्कूक परमेश्वर की दया के लिए प्रार्थना करता है (3:1,2)
   - ख. हबक्कूक परमेश्वर की दया को स्मरण करता है (3:3-15)
   - ग. हबक्कूक परमेश्वर के उद्धार में विश्वास रखता है (3:16-19)

सपन्याह - दण्ड के द्वारा आशीष

लेखक : यह पुस्तक सपन्याह के द्वारा लिखी गई थी, जो हिजकिय्याह के पुत्र अमर्याह का परपोता, और गदल्याह का पोता और कूशी का पुत्र था (1:1)।

समय: उसने यहूदा के राजा योशिय्याह के दिनों में (ईसा पूर्व 641-610) भविष्यवाणी की और वह यिर्मयाह का समकालीन था।

पुस्तक का नाम: सपन्याह भविष्यद्वक्ता के नाम पर इस पुस्तक का नाम रखा गया है। इस नाम का अर्थ है, "यहोवा का छुपाया हुआ" (देखिए 2:3)।

मुख्य विषय और उद्देश्य: सपन्याह परमेश्वर के क्रोध और दण्ड से भरी हुई है (1:15; 3:8), परंतु इसमें परमेश्वर के प्रेम का मंद स्वर भी है (3:17)। सपन्याह ने मूर्तिपूजा के विभिन्न तरीकों का आरोप लगाया है। संभव है कि योशिय्याह द्वारा किये गये धार्मिक पुर्नजागरण के लिए वही मुख्यत: जिम्मेदार रहा था। इस पुस्तक का आरंभ दु:ख के साथ हुआ है परंतु इसका अंत गीत गाने के साथ हुआ है।

मुख्य शब्द: मुख्य शब्द "यहोवा का दिन," "वह दिन" और "दिन" हैं जो सब मिलाकर लगभग बीस बार उपयोग में आये हैं।

मुख्य पद: 1:7; 1:12, 1:14-15; 2:3

सपन्याह में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: यद्यपि इस पुस्तक में विशिष्ट रूप से उल्लेख नहीं है फिर भी मसीह को इस्राएल राष्ट्र के मध्य धर्मी (3:5) के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो उनका राजा भी है (3:15)।

रूपरेखा -

1) परिचय (1:1)

2) यहोवा के दिन का दण्ड (1:2-3:8)

3) यहोवा के दिन होने वाला पुनर्निर्माण (3:9-20)

हाग्गै - प्रोत्साहन

हाग्गै, जकर्याह और मलाकी, ये तीनों बन्धुआई के बाद के भविष्यद्वक्ता थे, और तीनों ने लौटकर आये हुए बचे लोगों से बातें कीं। उनका उद्देश्य था कि उन बचे हुए लोगों के आत्मिक और नैतिक जीवन को प्रोत्साहित किया जाए, जबकि वे लोग अब अपनी मातृभूमि में वापस आ चुके थे कि मंदिर और राष्ट्र का पुनर्निर्माण करें।

हाग्गै और जकर्याह ने अधिकतर उन लोगों की आत्मिक आवश्यकताओं के संबंध में बातें कीं क्योंकि वे मंदिर के पुनर्निर्माण से संबंधित थीं, और मलाकी ने मुख्यत: नैतिक और सामाजिक आवश्यकताओं से संबंधित बातें कीं जो राष्ट्र के पुनर्निर्माण से जुड़ी हुई थीं।

लेखक: हाग्गै नाम का अर्थ होता है "उत्सव" या "उत्सव-संबंधी"

समय : 520 ईसा पूर्व

पुस्तक का नाम: साधारणतया, अन्य भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों की तरह ही इस पुस्तक का नाम भी भविष्यद्वक्ता के नाम पर रखा गया है।

मुख्य विषय और उद्देश्य: मंदिर का पुनर्निर्माण और उसकी सजावट हाग्गै का सर्वोच्च जुनून था। उसने उन लोगों को झिड़का, क्योंकि वे मंदिर का पुनर्निर्माण करने में ढिलाई कर रहे थे, और उस पूरे काम के लिये उन्हें उत्साहित किया और सहायता की। उसकी यह पुस्तक चार संक्षिप्त संदेशों की श्रृंखला है जो चार महीनों में लिखी गई है।

उसने सिखाया कि (1) परमेश्वर अपने लोगों को आशीष देता है, जब वे उसे प्रथम स्थान देते है। (2) हमें प्रभु का कार्य करने में कभी थकना नहीं चाहिए। (3) परमेश्वर के द्वारा हमारे कल के लिए की गई प्रतिज्ञाएं हमारे आज के आत्मविश्वास का आधार बन जाती हैं।

उसकी काम पर लगने के लिए दी गई सख्त पुकार एक अच्छी टॉनिक थी। लोग उठ खड़े हुए और मंदिर बनाना शुरू कर दिया (1:12-15)।

मुख्य शब्द: "भवन" शब्द को मंदिर के संदर्भ में दोहराया गया है और यह पाठकों का ध्यान मंदिर के पुनर्निर्माण की ओर केंद्रित करता है।

मुख्य अध्याय: वचन 2:6-9 का मसीह-संबंधित होना, जिसमें मंदिर को भविष्य में मिलने वाली महिमा की भविष्यवाणी है, इस अध्याय को मुख्य अध्याय बनाता है।

मुख्य पद: 1:7-8; 1:14, 2:7-9

हाग्गै में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: यहाँ मसीह को मंदिर की महिमा को पुन: स्थापित करने वाले के रूप में (2:7-9) और संसार के राष्ट्रों को उखाड़ फेंकने वाले के रूप में (2:22) दर्शाया गया है।

रूपरेखा -

1) पहला संदेश - मंदिर के पुन:र्निर्माण के लिए बुलाहट (1:1-15)

2) दूसरा संदेश - परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में साहस पाने के लिए बुलाहट (2:1-9)

3) तीसरा संदेश - जीवन की शुद्धता के लिए बुलाहट (2:10-19)

4) चौथा संदेश - भविष्य के सुदृढ़ विश्वास के लिए बुलाहट (2:20-23)

जकर्याह - यहोवा की जलन

लेखक: इसका लेखक जकर्याह है जो भविष्यद्वक्ता, बेरेक्याह का पुत्र और इद्दो का पोता, और याजक था जिसने लेवियों की अगुवाई की थी (नहे. 12:4)। वह हाग्गै भविष्यद्वक्ता का समकालीन था (एज्रा 6:14)। उसके नाम का अर्थ होता है "यहोवा स्मरण करता है" या "यहोवा ने स्मरण रखा है।"

समय: 520-518 ईसा पूर्व

मुख्य विषय और उद्देश्य: जकर्याह एक युवा भविष्यद्वक्ता था। वह वयस्क हाग्गै के साथ-साथ खड़ा हुआ, इस्राएल की संतानों को सुदृढ़ किया जब वे मंदिर बना रहे थे, और उन्हें चेतावनी दी कि वे परमेश्वर को वैसा शोकित न करें जैसा उनके पूर्वजों ने किया था। उसने परमेश्वर की सदा के लिए ठहरने वाली आशीष को बड़े ही सुनहरे रंगों में सजाया, जो इस्राएल के लिए बहुत-दूर-भविष्य में आने वाली थी। भविष्यद्वक्ताओं में यशायाह के अलावा जकर्याह ही है जिसने उद्धारकर्ता के विषय में अधिक बताया है। बहुत-दूर-भविष्य में देखते हुए उसने उसे पहले तो दीनता और कष्ट में देखा, और फिर, तेजस्वी और महान महिमा में देखा।

मुख्य शब्द: "यहोवा का वचन" (13 बार) और "सेनाओं का यहोवा" (53 बार) उपयोग हुआ है।

मुख्य विचार - ***आशा:*** बाइबल में भविष्यवाणी का एक मुख्य उद्देश्य यह है कि परमेश्वर के लोगों के मनों में आशा का भाव बैठा दिया जाये। परमेश्वर जानता है कि निराशाजनक समय, आशा के विरुद्ध जंग छेड़ देता है। हमारी मानवीय निर्बलता में हम पर उदासी छा सकती है और आसान होता है कि यह भूल जायें कि शक्तिशाली परमेश्वर मात्र एक धीमे शब्द से पूरा इतिहास उसी क्षण बदल सकता है। भविष्यवाणियों के ये शब्द जैसे लिखे गए, सुने गए और पढ़े गए, उनका उद्देश्य था कि वे लोगों के मनों में बोये जाने वाले आशा के बीज बन जायें; उद्देश्य ठहराया गया था कि जब आशा मुरझाने लगे तब ये आत्मिक पोषण बन जायें।

मुख्य अध्याय: अध्याय 14 एक मुख्य अध्याय है। इसमें जकर्याह, यरूशलेम के अंतिम घेराव, इस्राएल के शत्रुओं की प्रारंभिक विजय, जैतून पर्वत के दो भागों में विभाजित हो जाने, प्रभु के जैतून पर्वत पर प्रगट होकर, यरूशलेम की रक्षा करने, संधिबद्ध हुये राष्ट्रों का न्याय किया जाने, इस्राएल की भूमि के स्थानों में परिवर्तन आने, मसीह के हजार वर्ष के राज्य के दौरान झोपडियों का पर्व मनाया जाने और यरूशलेम और उसके लोगों की अंतिम पवित्रता के बारे में भेद खोलता है।

मुख्य पद: 8:3; 9:9-10

जकर्याह में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: जकर्याह मसीह को उसके दोनो आगमनों में चित्रित करता है; उसे सेवक और राजा दोनों के रूप में, मनुष्य और परमेश्वर दोनो के रूप में, यहोवा के दूत के रूप में (3:1), धार्मिक शाखा के रुप में (3:8), जिस पर सात आंखें बनी हैं ऐसे पत्थर के रूप में (3:9), जिसे बेधा गया है ऐसे उद्धारकर्ता के रूप में (12:10), आने वाले और दीन राजा के रूप में (9:9-10), काट डाले गये और छोड़ दिये गये चरवाहे के रूप में (13:7) और आने वाले न्यायी तथा धर्मी राजा के रूप में चित्रित करता है।

रूपरेखा -

1) पश्चाताप के लिए बुलाहट - (1:1-6)
2) जकर्याह के आठ दर्शन (1:7-6:8)
3) यहोशू का अभिषेक (6:7-15)
4) उपवास से संबंधित प्रश्न (7:1-8:23)
5) भविष्य से संबंधित संदेश (9:1-14:21)

मलाकी - पश्चाताप करो और वापस लौट आओ

लेखक: मलाकी 1:1 में बताया गया है कि मलाकी इस भविष्यवाणी का लेखक है।

नाम: मलाकी का अर्थ होता है "मेरा संदेशवाहक" जो "यहोवा का संदेशवाहक" का संक्षिप्त रूप हो सकता है।

समय: 450-400 ईसा पूर्व

मुख्य विषय और उद्देश्य: धार्मिक पुर्नजागरण के बाद (नहे. 10:28-31), लोग आत्मिक रूप से ठंडे और नैतिक रूप से ढीले पड़ गए थे। मलाकी जैसे कि उन लोगों को पुन: सुधारने के लिए आया और उसने उन्हें झिड़कने के साथ-साथ प्रोत्साहित भी किया।

70 वर्षों की बंधुआई के बाद फिर से स्थापित किये जाने वाले बचे हुओं के लिये जो भविष्यद्वक्ता थे उनमें मलाकी अंतिम भविष्यद्वक्ता था। उसके संदेश का मुख्य विषय यहोवा का प्रेम, याजको का और लोगों का पाप, और यहोवा का दिन है। जकर्याह के समान ही मलाकी भी दोनों आगमनों को देखता है और दो आगे-आगे चलने वाले दूतों के आने बारे में भविष्यवाणी करता है (मलाकी 3:1; 4:5-6)। सब मिलाकर, मलाकी परमेश्वर के नैतिक न्याय के आने के बारे में बताता है, जो उन बचे हुओं पर आने वाला था जो परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा एज्रा और नहेमायाह के नेतृत्व में पुन:स्थापित किये गये थे।

मुख्य शब्द: 12 बार मलाकी लिखता है "तुम पूछते हो," (11 बार) या "तुम कहते हो" (1 बार)। इसके साथ ही "शाप" या "शापित" शब्द चार पदों में सात बार आता है। लोगों के प्रश्नों के और उनके द्वारा परमेश्वर के न्याय को समझने में असमर्थ होने के उत्तर में, मलाकी उन्हें परमेश्वर की ओर से बहुत ही स्पष्ट उत्तर देता है। भटक जाने के लिये उन्हें डांट लगाई गई है और पश्चाताप करने का आग्रह किया गया है।

मुख्य विचार - ***वचन:*** मलाकी, 'परमेश्वर के वचन के अधिकार' और 'मनुष्यों के शब्दों के अधिकार' के बीच में स्पष्ट विभाजन करता है। मनुष्य बहुत से शब्दों का उच्चारण करता है। वे महानदी के झरनों की तरह आगे बढ़ते हैं, परंतु उनमें कोई बुद्धिमता या अधिकार नहीं होता। वास्तव में वे शब्द, परमेश्वर के अधिकार के विरुद्ध शाप और चुनौतियों से ही भरे होते हैं। मलाकी की पुस्तक के द्वारा एक सच्चाई जो बताई गई है वह यह है कि परमेश्वर हमारे *सारे* शब्दों को सुनता है। यह गम्भीरता की ओर ले जाने वाला विचार हमें ऐसा बनाये कि हम उस बुद्धिमानी को सावधानी पूर्वक समझे जो सभोपदेशक 5:2 में बताई गई है, "बातें करने में उतावली न करना, और न अपने मन में कोई बात उतावली में परमेश्वर के सामने निकालना, क्योंकि

परमेश्वर स्वर्ग में है और तू पृथ्वी पर है, इसलिए तेरे वचन थोड़े ही हो।" इसी विषय पर और मनन करने के लिये याकूब 1:26 भी उपयुक्त है, "यदि कोई अपने आप को भक्त समझे और अपनी जीभ पर लगाम न दे पर अपने हृदय को धोखा दे, तो उसकी भक्ति व्यर्थ है।"

मुख्य पद: 2:17; 3:1; 4:5-6

मालाकी में मसीह, जैसे भविष्यसूचक ढंग से देखा गया: मलाकी, एक संदेशवाहक के आने की भविष्यवाणी करता है जो प्रभु के आगे मार्ग सुधारेगा (3:1; देखिए यशा. 40:30)। बाद में यूहन्ना बप्तिस्मा देने वाले में यह भविष्यवाणी पूरी हुई है। इसके बाद के कुछ पद (3:2-5) आगे मसीह के दूसरे आगमन की ओर छलांग लगाते हैं।

रूपरेखा -

1) इस्राएल के प्रति परमेश्वर का प्रेम (1:1-5)

2) याजको के पाप के लिये फटकार (1:6-2:9)

3) लोगों के पाप के लिये फटकार (2:10-3:18)

4) यहोवा का दिन (4:1-6)

मलाकी, पुराना नियम और नया नियम के बीच एक पुल है। मलाकी की भविष्यवाणी और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की पुकार, "प्रभु का मार्ग तैय्यार करो," इनके बीच 400 वर्षों की खामोशी है।